जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 31 संख्याः 303 प्रभात उदयपुर, गुरुवार 5 सितम्बर, 2024 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

राजस्थान पुलिस फोर्स में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा

मुख्यमंत्री भजनलाल की अध्यक्षता में मंत्रिमण्डल ने महिलाओं, विशेष योग्यजन, वृद्ध कल्याण के महत्वपूर्ण फैसले लिये

- यह भी निर्णय लिया गया कि कर्मचारी की सेवानिवृत्ति पर अन्य पात्र सदस्य नहीं होने पर विशेष योग्य बच्चों, आश्रित माता-पिता तथा विशेष योग्य भाई-बहनों के नाम पैन्शन ऑर्डर में जुड़ सकेंगे।
- तीन हजार मैगावॉट सौर ऊर्जा के लिये जैसलमेर की रामगढ़ तहसील में तथा 150 मैगावॉट सौर ऊर्जा के लिये फतेहगढ़ में भूमि आवंटन का निर्णय भी लिया गया।

जयपुर, 4 सितम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित मंत्रिमण्डल की बैठक में महिला सशक्तिकरण, विशेष योग्यजन एवं वृद्धजन कल्याण और प्रदेश के विकास से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले किए गए। उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चन्द बैरवा तथा विधि एवं न्याय मंत्री जोगाराम पटेल ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए मंत्रिमण्डल द्वारा लिए गए निर्णयों की जानकारी दी।

उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चन्द बैरवा ने बताया कि विधानसभा चुनाव से पहले "आपणो अग्रणी राजस्थान संकल्प पत्र-2023" में हमने महिला सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए पुलिस बल में महिलाओं की न्यूनतम 33 प्रतिशत भर्ती करने का वादा किया था। इसी संबंध में आज मंत्रिमण्डल की बैठक में राजस्थान पुलिस अधीनस्थ सेवा नियम, 1989 में संशोधन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया है। कार्मिक विभाग द्वारा इस बारे में शीघ्र अधिसूचना जारी की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस निर्णय से प्रदेश में महिलाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकेंगे और राजस्थान पुलिस में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ेगा। साथ ही, महिलाओं से जुड़े मामलों में पुलिस और अधिक संवेदनशीलता के साथ कार्य कर सकेगी।

डॉ. बैरवा ने बताया कि मंत्रिमण्डल ने राज्य सरकार के कर्मचारियों के हित में एक और महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। अब राज्य सरकार के कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर अन्य पात्र सदस्य नहीं होने पर, विशेष योग्य बच्चों, आश्रित माता-पिता तथा विशेष योग्य भाई-बहनों के नाम पैंशन पेमैंट ऑर्डर में जुड़ सकेंगे।

उप मुख्यमंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधानसभा में राजस्थान विनियोग एवं वित्त विधेयक पर चर्चा के दौरान 70 से 75 वर्ष तक के पैंशनर एवं पारिवारिक पैंशनर के लिए 5 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता दिए जाने की घोषणा की थी। इस क्रम में राजस्थान सिविल सेवा पैंशन नियम, 1996 के नियम 54बी को प्रतिस्थापित किए जाने की मंजूरी भी आज कैबिनेट में दी गई।

विधि एवं न्याय मंत्री जोगाराम पटेल ने बताया कि राज्य सरकार बिजली उत्पादन बढ़ा कर प्रदेश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। इसी दिशा में आज कैबिनेट की बैठक में 3 हजार 150 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए भूमि आवंटन की स्वीकृतियां दी गईं। उन्होंने बताया कि "क्रिस्टलाइन टैक्नॉलजी विद ट्रैकर" पर आधारित 3000 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना जैसलमेर जिले की उपनिवेशन तहसील रामगढ़ नं.-1 में लगाई जाएगी तथा इस प्रोजैक्ट के लिए 6877.66 हैक्टेयर भूमि आवंटित की जाएगी। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा परियोजनाओं की स्थापना से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे एवं राज्य के राजस्व में बढ़ोतरी होगी।

पटेल ने बताया कि उत्कृष्ट खिलाड़ियों को राज्य के अधीन सेवाओं में नियुक्तियों में 2 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के संबंध में खिलाड़ियों की परिभाषा को सुस्पष्ट करने के लिए 21 नवम्बर, 2019 को अधिसूचना जारी की गई थी। उत्कृष्ट खिलाड़ियों के संबंध में इस स्पष्टीकरण को प्रतिस्थापित किए जाने के समय यह प्रावधान दो सेवा नियमों, राजस्थान लैंग्वेज एण्ड लाइब्रेरी (स्टेट एण्ड सबॉर्डिनेट) सर्विस रूल्स, 2013 एवं राजस्थान एक्साइज लैबोरेटरी (स्टेट एण्ड सबॉर्डिनेट) सर्विस रूल्स, 2015 में सम्मिलित किए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'आर्थिक स्थिति अच्छी होना बच्चे की कस्टडी पाने का आधार नहीं'

- राजस्थान हाई कोर्ट ने यह टिप्पणी करते हुए दुबई में बसे पिता को बच्चे की कस्टडी सौंपने से इन्कार कर दिया, पर, कहा कि पिता अपने बच्चे से मिल सकता है।

जयपुर, 4 सितंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने दुबई में बसे पिता को सात साल के बच्चे की अभिरक्षा मां से लेकर उसे दिलवाने से इन्कार कर दिया है। अदालत ने कहा कि ऐसा करना बच्चे के सर्वोत्तम हित में नहीं होगा। अदालत ने कहा कि पिता के वित्तीय हालात इस बात को तय करने में निर्णायक नहीं हो सकते कि बच्चे की अभिरक्षा उसे सौंपी जाए। हालांकि अदालत ने पिता को बच्चे से मिलने -जुलने की छूट दी है। राजस्थान के मुख्य न्यायाधीश एम.एम. श्रीवास्तव और जस्टिस शुभा मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश पिता की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका का निस्तारण करते हुए दिए।

पिता ने हाईकोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर कर कहा था कि उसकी पत्नी ने उसके नाबालिग बच्चे को अवैध तौर पर अपनी अभिरक्षा में रखा हुआ है, जबकि उसका बेटा दुबई में पैदा हुआ था और वहां पर सामान्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जनता नाखुश सी नज़र आ रही है सुप्रीम कोर्ट की भूमिका से

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। कोलकाता शहर पूरी रात अंधेरे में डूबा रहा, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। पर ऐसा हुआ और कोलकाता 9 अगस्त की रात को युवा मेडिकल छात्रा के साथ हुए रेप तथा मर्डर को लेकर न्याय की माँग के लिए अँधेरे में डूबा रहा। आर.जी.कार. मेडिकल कॉलेज की पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल छात्रा के हत्यारों की गिरफ्तारी के मामले में राज्य सरकार की निष्क्रियता को लेकर कोलकाता नगर में उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम तक लाइट ऑफ करके विरोध किया गया।

इस राज्यव्यापी विरोध के बीच, सर्वोच्च न्यायालय ने रेप और हत्या के इस केस की सुनवाई आगे के लिए टाल दी है। लोग इस बात की भी आलोचना कर रहे हैं कि इस केस की सुनवाई हो रही थी, तो सर्वोच्च न्यायालय ने इस केस को अपने हाथ में क्यों लिया था।

लोग सर्वोच्च न्यायालय से कहीं ज्यादा विश्वास कलकत्ता उच्च न्यायालय पर व्यक्त कर रहे हैं। जब लोग न्याय की माँग कर रहे हैं, ऐसे समय में, सर्वोच्च न्यायालय ने इस केस के मामले में जो तौर-तरीका प्रदर्शित किया है, उससे लोग निराश हुए हैं।

इन स्वप्रेरित विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व राज्य के वरिष्ठ डॉक्टर कर रहे हैं उनके सैनिकों की भूमिका जुनियर डॉक्टर निभा रहे हैं। जनता विरोध प्रदर्शन कर रहे इन लोगों के साथ एक परिवार की तरह खड़ी हो गई है।

जनता स्व-प्रेरणा से विरोध करने के लिए सड़कों पर आ गई है तथा सर्वोच्च न्यायालय ने आर.जी.कार में हुई हत्या के इस केस को जिस तरह से हैंडल किया है, उसकी कड़ी आलोचना कर रही है। पूरे बंगाल की जनता अपना रोष जताने के लिए सड़कों पर आ गई है। जनसामान्य ने अपने घरों की लाइटें बुझा दी तथा सड़कों पर आ गए तथा अपराधियों को बचाने में मुख्यमंत्री की भूमिका को लेकर, जोर-जोर से उनके इस्तीफे की माँग करने लगे। इस बात पर विश्वास करने के पर्याप्त कारण हैं कि कोलकाता पुलिस और प्रशासन अपनी ड्यूटी निभाने में असफल रहे हैं तथा उन्होंने अपराध से सम्बन्धित सारे साक्ष्य मिट जाने दिए।

इस केस में सुनवाई को रोक देने के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को लेकर,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कलकत्ता हाई कोर्ट संषोजजनक तरीके से सुन रहा था, महिला डॉक्टर के "रेप" व हत्या के मामले को, पर, "अकारण" सुप्रीम कोर्ट ने मुकदमे को हाई कोर्ट से सुप्रीम कोर्ट स्थानान्तरित कर लिया।
- अतः स्वाभाविक तौर पर इस घटनाक्रम के बारे में हाई कोर्ट को सुनवाई रोकनी पड़ी।
- पर, फिर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की तारीख खिसका दी।
- जनता इस पूरे घटनाक्रम को संदेह की दृष्टि से देख रही है, क्योंकि उसे रेप व हत्या के मामले की फाइलों को दफन करने की यह साजिश लग रही है।
- बहरहाल जनता ने अपनी नाराज़गी जताते हुए रात को सभी दुकानों व घरों में बत्तियाँ बुझाने का निर्णय लिया।
- रात्रि के अंधेरे में सड़कों पर जगह-जगह लोग इकट्ठा होकर टैगोर के गीत गाते हुए सुनाई दिये।

नायडू आंध्र में भारी जीत के बाद तेलंगाना में जड़ें जमाना चाहते हैं

पर, उन्हें सफलता मिलेगी इसकी संभावना काफी क्षीण है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 अगस्त। आन्ध्र प्रदेश में जबसे चन्द्रबाबू नायडू सत्ता में आए हैं उनका ग्राफ ऊपर ही बढ़ता जा रहा है और अब उन्होंने तेलंगाना में भी अपनी पार्टी को मजबूत कराने का इरादा जताया है।

यह संयोग ही है कि तेलगाना में कभी तेलुगूदेशम का कांग्रेस से गठबंधन था। पर इस गठबंधन को के.चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति ने हरा दिया था, उसके बाद कांग्रेस व तेलुगुदेशम का गठबंधन भी टूट गया। हालांकि तेलंगाना के कई भागों में तेलुगूदेशम का वजूद था पर वह इतनी मजबूत नहीं थी कि बी.आर.एस. को चुनौती दे सके। विपक्ष का रिक्त स्थान जल्दी ही कांग्रेस ने अधिग्रहित कर लिया। हालांकि एक बार तो भाजपा राज्य में मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरने लगी थी, पर भाजपा और बी.आर.एस. के बीच पर्दे के पीछे की सांठगांठ का खामियाजा भाजपा को भुगतना पड़ा। उल्लेखनीय है कि उस समय भाजपा ने अपने तेज तर्रार नेता बंडी संजय को हटाकर केन्द्रीय मंत्री जी.किशन रेड्डी को प्रदेश प्रमुख बना दिया था, जिसके बाद विधानसभा चुनाव में भाजपा का भी सफाया हो गया और बी.आर.एस. भी सत्ता से बेदखल हो गई और कांग्रेस सत्ता में आ गई।

वर्तमान में बी.आर.एस. सत्ता से बाहर है और लोकसभा में भी उसका एक भी सदस्य नहीं है। बी.आर.एस. का राजनैतिक स्थान खाली है और भाजपा एवं तेलुगूदेशम उसे भरना चाहती हैं। खासकर आंध्रप्रदेश में जीत के बाद नायडू तेलंगाना में भी अपनी पार्टी को मजबूत करना चाहते हैं।

हैदराबाद में एच.टी.आर.ट्रस्ट भवन के हुई पार्टी का मीटिंग में नायडू ने कहा कि वे पार्टी को पुनर्जीवित करेंगे,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तेलुगूदेशम का तेलंगाना के कुछ भागों में थोड़ा बहुत प्रभाव है, पर, पार्टी इतनी मजबूत नहीं है कि राज्य की राजनीति में अहम् भूमिका निभा सके।
- बी.आर.एस. के उत्थान के साथ ही तेलुगूदेशम पार्टी तेलंगाना में शून्य पर आ गई थी, पार्टी के सभी नेता, कार्यकर्ता बी.आर.एस. में चले गए थे।
- अब नायडू तेलंगाना में अपनी पार्टी को पुनः स्थापित करना चाहते हैं और इसकी शुरुआत वे हैदराबाद नगर निगम के चुनाव में जोर आजमा कर करना चाहते हैं।

'होम लोन के बीमा कवर पर वसूली सेवा दोष'

- उपभोक्ता आयोग ने एस.बी.आई. लाइफ इंश्योरैंस कम्पनी को कहा है कि बीमा कवर के रुप में काटी गई 41,059 रु. की राशि ब्याज सहित वादी को लौटाए, आयोग ने बीमा कम्पनी पर 65 हजार रु. का हर्जाना भी लगाया।

जयपुर, 4 सितंबर। जिला उपभोक्ता आयोग द्वितीय ने होम लोन के बीमा कवर के रूप में वसूली गई राशि को उपभोक्ता को लौटाने के दौरान कटौती करने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने एस.बी.आई. लाइफ इंश्योरैंस कंपनी को कहा है कि वह काटी गई 41,059 रुपए की राशि ब्याज सहित लौटाए। इसके साथ ही आयोग ने बीमा कंपनी पर कुल 65 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। आयोग अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना ने यह आदेश जगमोहन सिंह यादव के परिवाद पर दिए।

परिवाद में कहा गया कि परिवादी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा मीडिया का आकलन स्वीकार करने को तैयार नहीं जम्मू-कश्मीर चुनाव के बारे में

भाजपा का मानना है कि यह सबसे बढ़िया समय है जब पार्टी अपनी स्थिति सुदृढ़ करेगी

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। ब्रुनेई व सिंगापुर की अपनी यात्रा से लौटने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जम्मू-कश्मीर में पहली बार सरकार बनाने के प्रयास में जुट जाएंगे और इसी के तहत अगले सप्ताह उनकी तीन रैलियाँ प्रस्तावित हैं। इनमें से दो रैलियाँ जम्मू क्षेत्र में होंगी, जिसमें डोडा भी शामिल है, जहाँ, हाल के महीनों में कई आतंकवादी गतिविधियाँ हुई हैं। तीसरी रैली कश्मीर क्षेत्र में होगी।

संभावना है कि प्रधानमंत्री 8 सितम्बर के बाद इस केन्द्र शासित प्रदेश का दौरा करेंगे।

सन् 2014 में हुए गत विधानसभा चुनावों में भाजपा ने 25 सीटें जीती थीं और महबूबा मुफ्ती की पार्टी 28 सीटों पर विजयी रही थी।

तथापि, इस बार चुनाव विश्लेषकों की भविष्यवाणी भाजपा के लिए उतनी फायदेमंद नहीं है। "लोकपोल" के अनुमान के अनुसार, नैशनल कॉन्फ्रैंस - कांग्रेस गठबंधन को आसान जीत मिलेगी, जबकि 90 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा 20 सीटों पर सिमट जाएगी।

तथापि, भाजपा के "थिंक टैंक" का सोच अलग है। पार्टी का मत है कि तीन कारक हैं, जो इस बार भाजपा के सत्ता में आने की संभावना को मजबूत करते हैं। पहला, धारा 370 तथा 35 ए निरस्त होने के बाद क्षेत्र में, विशेषरुप से जम्मू क्षेत्र में, भाजपा की स्वीकार्यता बढ़ी है। दूसरा, चुनाव आयोग ने 90 सदस्यीय जम्मू-कश्मीर- विधानसभा में एस.सी./एस.टी. के लिए सीटें आरक्षित की हैं। तथा अंतिम कारक है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की निरंतर बनी हुई लोकप्रियता।

भाजपा की धारणा है कि बहुकोणीय प्रतिस्पर्धा में एन.सी.-कांग्रेस गठबंधन के उम्मीदवारों को नुकसान होगा, क्योंकि बड़ी संख्या में निर्दलीयों तथा छोटी पार्टियों के मैदान में उतरने की संभावना जताई जा रही है।

इसके अतिरिक्त, राम माधव तथा अनुराग सिंह ठाकुर जैसे भाजपा नेताओं को चुनाव प्रचार की जिम्मेवारी दी गई है और भाजपा युवाओं के अलावा, एस.सी. व एस.टी. मतदाताओं को आकर्षित करने की रणनीति पर काम कर रही है।

हाल के दिनों में, टिकटों के बंटवारे को लेकर जम्मू क्षेत्र में काफी अन्तर्कलह सामने आई है, जबकि पार्टी की कश्मीर शाखा भी, घाटी की 16 सीटों के लिए केवल 8 प्रत्याशी मैदान में उतारने के पार्टी नेतृत्व के निर्णय को लेकर असंतुष्ट तथा व्यथित है। इन सीटों पर, पहले चरण में, 18 सितम्बर को मतदान होना है।

तथापि, भाजपा के चुनाव सह-प्रभारी राम माधव को विश्वास है कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- जम्मू-कश्मीर चुनाव के सह प्रभारी भाजपा नेता राम माधव चुनाव प्रचार की रणनीति बना रहे हैं, भाजपा की नीति अनुसूचित जाति व जनजाति के वोटर्स को साधने की है।
- पहली बार राज्य की 90 सदस्यीय विधानसभा में एस.सी./एस.टी. समुदायों के लिए सीटें रिज़र्व की गई हैं और भाजपा को इसका फायदा मिलने की उम्मीद है।
- भाजपा को उम्मीद है कि धारा 370 खत्म करने से पार्टी को जम्मू क्षेत्र में काफी लाभ होगा।

राजस्थान में पहली बार दिखी "गोले दागने वाली" अनोखी फंगस

उदयपुर, 4 सितम्बर (वार्ता)। दक्षिणी राजस्थान के मांडलगढ़ क्षेत्र के राजपुरा गांव में जैव विविधता की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण खोज हुयी है और राज्य में पहली बार "स्पिरोबोलस जयसुखियेंसिस" देखी गयी है।

फाउंडेशन साइकोलॉजिकल सिक्योरिटी के फील्ड इकोलॉजिस्ट डॉ.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- दक्षिणी राजस्थान के मांडलगढ़ क्षेत्र के राजपुरा गांव में "स्पिरोबोलस जयसुखियेंसिस" नाम की फंगस को छूते ही छोटे-छोटे काले रंग के गोले, यानी बीजाणुओं की तेजी से बरसात करती है, मानो तोप गोले दाग रही हो।

दो राज्य, एक संकट, दो हीरो!

कुछ घंटों में 30-34 सैन्टीमीटर बारिश ने आंध्र व तेलंगाना को भारी विपदा में घेर लिया

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 अगस्त। दो तेलुगू भाषी राज्यों- आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में अतिवृष्टि के चलते दोनों मुख्यमंत्री- एन. चंद्रबाबू नायडू तथा रैवन्त रेड्डी अपने-अपने राज्यों में बचाव, राहत और पुनर्वास के लिये पूरी तरह सक्रिय हो गये हैं। नायडू कल से विजयवाड़ा में तेजी से बचाव कार्य में जुट गये हैं। वे बस में बैठकर तथा ज़मीनी स्तर पर उतर कर हर चीज़ पर नज़र रख रहे हैं। उन्होंने एन.टी.आर. जिला कलेक्टर के कार्यालय को अपना अस्थाई कार्यालय बना लिया है तथा खुद ही राहत कार्यों की निगरानी कर रहे हैं। उन्होंने अपने सुरक्षा-अधिकारियों की सलाह की अनसुनी करते हुये, बाढ़-प्रभावित क्षेत्रों के कई दौरे किये हैं तथा वे असाधारण रूप से सक्रिय दिखाई दे रहे हैं क्योंकि भारी वर्षा के कारण कई क्षेत्र जलमग्न हो गये हैं तथा अनेकानेक लोग बेघर हो गये हैं। इस जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, चार बार मुख्यमंत्री रह चुके नायडू की प्रशासनिक शैली अलग और स्पष्ट दिखाई दे रही है। वर्ष 2014 में, जब "हुद-हुद" चक्रवात से विशाखापट्टनम शहर और बंदरगाह पूरी तरह तबाह हो गये थे, उस समय बंदरगाह नगर का सतत निरीक्षण करने के लिये वे विशाखापट्टनम में डेरा डाले रहे थे और पूरे शहर के पुनर्निमाण का काम किया था।

सप्ताहांत के समय तीन दिन से चल रही भारी बरसात ने आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में जबरदस्त तबाही की थी। कुछ ही घंटों में बादल फटने से 29 से 34 सेमी. तक हुई बरसात होने के कारण बाढ़ की स्थिति बन गई। बाढ़ के पानी के ओवरफ्लो के कारण राष्ट्रीय राजमार्गों पर ट्रैफ्रिक रूक गया था तथा बड़ी संख्या में रेल-सेवायें रद्द कर दी गई थी। बाढ़ से हुई यह तबाही उस समय और विकराल रूप में आ गई, जब विजयवाड़ा से गुजरने वाली बुडामेरू स्ट्रीम के कारण बहुत सी कॉलोनियाँ जलमग्न हो गईं तथा करीब दो लाख लोगों ने अपनी जान बचाने के लिये अपनी इमारतों के टैरेस या फर्स्ट फ्लोर पर शरण ली।

बाढ़-पीड़ित लोगों की दुर्दशा से विचलित हुये मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने संकट की इस घड़ी में चुस्त-दुरुस्त नेतृत्व उदाहरण पेश किया। वे अपने कार्यालय एवं प्रशासन को सचमुच ही अमरावती से विजयवाड़ा ले गये जिससे वे बाढ़-प्रभावित क्षेत्र के निकटतम स्थान पर रह सकें।

अधिकारियों को राज्य में बाढ़ की चुनौती का मुकाबला करने के निर्देश देते हुये, वे फील्ड-स्तर पर होने वाले कामों में कूद पड़े। एक विशेष बस में बैठकर मुख्यमंत्री स्थिति को संभालने की कार्यवाही में प्रशासन का मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तब तक दौरे करते रहेंगे, जब तक सामान्य स्थिति बहाल नहीं हो जाती।

भारी बरसात के कारण विशेष रूप से कृष्णा एवं गुन्टूर जिलों में भयंकर तबाही हुई है। बुडामेरू में आई बाढ़ से विजयवाड़ा के सिंह नगर, नन्दापुरी तथा निचले इलाके में बसी अल्प बस्तियाँ जलमग्न हो गई हैं तथा बाढ़ से दो लाख लोग प्रभावित हुये हैं।

मुख्यमंत्री नायडू ने आधी रात के समय बाढ़-पीड़ित क्षेत्र का दौरा किया, ताकि प्रभावित लोग आश्वत हो सकें कि प्रशासन उनका पूरा-पूरा ध्यान रखेगा। अगले दिन सुबह वे यह जानकारी लेने के लिये उस इलाके में गये कि उन लोगों खाना तथा पीने का पानी पहुँचा है या नहीं।

मुख्यमंत्री नायडू ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा गृह मंत्री अमित शाह से सम्पर्क किया तथा उन्हें वर्तमान बाढ़ संकट की स्थिति से अवगत कराया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तेलंगाना में 16 व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा आंध्र में विजयवाड़ा में दो तीन लोगों ने मकानों की छत पर शरण लेकर जान बचाई।
- चंद्रबाबू नायडू ने राजधानी अमरावती का सचिवालय छोड़कर विजयवाड़ा के जिलाधीश कार्यालय को अपना ऑफिस बनाया, दो-तीन रात, बस को ही अपना निवास बनाया, जनता के बीच में 24 घंटे रहकर विपदा प्रबंधन में लगे रहे।
- तेलंगाना के मु.मंत्री रैवन्त रेड्डी भी वारांगल शिफ्ट हो गये तथा आंध्र व दिल्ली जहाँ प्रतिस्पर्धी पार्टी भाजपा की सरकार थी, से भी सम्पर्क किया और राहत कार्यों की सामग्री व साधन मांगने में कोई भी हिचकिचाहट नहीं रखी।

वायनाड पीड़ितों के लिए राहुल ने एक माह की सैलरी दान की

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। केरल के वायनाड में आई भयानक बाढ़ से प्रभावित लोगों की मदद के लिए कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी आगे आए हैं। उन्होंने वायानाड के बाढ़ पीड़ितों के लिए अपनी एक महीने की तनख्वाह दान कर दी है। राहुल गांधी ने बुधवार को इस बात की जानकारी देते हुए एक्स पर एक पोस्ट किया जिसमें उन्होंने देशवासियों से अपील की कि वे बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए आगे आएं। गौरतलब है कि राहुल गांधी पिछली लोकसभा में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राहुल गांधी ने बुधवार को इस बात की जानकारी देते हुए एक्स पर एक पोस्ट किया जिसमें उन्होंने देशवासियों से अपील की कि वे बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए आगे आएं।

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

संदर्भ पश्चिम बंगाल अपराजिता काननू

कानून नहीं, कानून के भय से ही बचाया जा सकता है निर्भयाओं को

आखिरकार कोलकता आरजी कर अस्पताल रेप व रेप के बाद हत्या घटना के बाद जिस तरह से देशव्यापी माहौल बना, उसके परिणाम के रुप में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक (पश्चिमी बंगाल आपराधिक कानून एवं संशोधन) विधानसभा से पारित हो गया। सवाल यह नहीं है कि कानून कितना सख्त बनाया गया है? सवाल यह भी नहीं हैं कि कानून में किस तरह से जांच से लेकर सजा तक की समय सीमा तय की गई है? सवाल यह भी नहीं हैं कि कानून बनने के क्या परिणाम सामने आएंगे? देखा जाए तो सौ टके का सवाल यह है कि 2012 में निर्भया कांड के बाद जिस तरह से कानून में बदलाव कर सख्ती के प्रावधान किये गये, जिस तरह से पॉक्सों एक्ट के तहत कार्रवाई की बात हुई और जिस तरह से देश में त्वरित न्याय के लिए फास्ट ट्रेक स्पेशल अदालतें और पाक्सों अदालते बनाई गई उसके बाद भी हालात में कोई बदलाव नहीं दिखाई दे रहे हैं। बल्कि यह कहा जाएं तो ज्यादा ठीक होगा कि–'ज्यों–ज्यों दवा की गई, मर्ज बढ़ता ही गया।' निर्भया कांड के चार दरिंदों को फांसी की सजा के बावजूद महिलाओं के खिलाफ रेप व हत्या के मामलों में कोई कमी नहीं आई है अपितु देखा जाएं तो पिछले 12 सालों में रेप–हत्याओं के मामलों में बढ़ोतरी ही देखने को मिल रही है।

दिसंबर 2012 में जब निर्भया कांड हुआ और उसके सामने आते ही जिस तरह से देशव्यापी आक्रोश देखने को मिला उसके बाद जिस तरह से 2013 में नया आपराधिक कानून लाकर सरकार ने सख्ती की मंशा दिखाई उसके बावजूद कोई सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिला। 2015 में किशोर न्याय अधिनियम के माध्यम से 16–18 साल के दोषियों को भी कोई रियायत नहीं देने के प्रावधान किये गये और 2019–20 में 1023 फास्ट ट्रेक स्पेशल कोर्ट का गठन और 389 पॉक्सों कोर्टो के गठन के बावजूद अपराधियों में किसी तरह से भय का वातावरण नहीं बना है। दिसंबर, 12 में जिस तरह से निर्भया रेप व हत्या कांड सामने आया और खासतौर से युवाओं में जिस तरह का आक्रोश देखा गया, तब समझा जाने लगा था कि हालातों में सुधार होगा, पर आंकड़े कुछ और ही कहानी कहते हैं। उज्जेन, अयोध्या और इसके बाद आरजी कर प्रकरण से साफ हो गया है कि भले ही अब ममता सरकार ने नया अधिनियम पारित करा लिया हो पर तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि ऐसे मामलों में भी सभी लोग एक ना होकर के राजनीतिक फायदें नुकसान के तराजू पर तोलकर प्रतिक्रिया देते हैं। मानवता के लिए इससे अधिक कलंक की दूसरी बात क्या होगी। जिस तरह से घटना होने के बाद एक पक्ष बचाव में तर्क गढ़ने लगता है तो दूसरा पक्ष आंदोलन, प्रदर्शन आदि के माध्यम से जितना लाभ उठाने का प्रयास करते हैं यह दोनों ही स्थितियां मानवता के लिए शर्मनाक है।

तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि ऐसे मामलों में भी सभी लोग एक ना होकर के राजनीतिक फायदें नुकसान के तराजू पर तोलकर प्रतिक्रिया देते हैं। मानवता के लिए इससे अधिक कलंक की दूसरी बात क्या होगी। जिस तरह से घटना होने के बाद एक पक्ष बचाव में तर्क गढ़ने लगता है तो दूसरा पक्ष आंदोलन, प्रदर्शन आदि के माध्यम से जितना लाभ उठाने का प्रयास करते हैं यह दोनों ही स्थितियां मानवता के लिए शर्मनाक है।

ऐसा नहीं है कि रेप व उसके बाद हत्या जैसी घटनाएं हमारे देश में ही होती हो, बल्कि कहा जाये तो यह वैश्विक समस्या है। निर्भया के टाइम पर ही किस तरह से मी टू अभियान ने गति पकड़ी थी, किस तरह से महिलाएं मुखर हो रही थी, वह अपने आप में एक सशक्त आंदोलन या कहें कि महिला सशक्तीकरण की दिशा में बढ़ता कदम था, पर इससे देश–दुनिया में महिला अपराध खासतौर से रेप, गेंगरेप या इसी तरह की घटनाओं में तनिक मात्र भी कमी नहीं आई है। हालिया दिनों में ही सिने संसार में किस तरह से महिला अभिनेत्रियों के शोषण की मुखरता से चर्चा हुई है वह भी रुपहले पर्दे के पीछे की काली कहानी बयां कर देती हैं। यदि आंकड़ों की भाषा में ही बात करें तो निर्भया एपिसोड के समय 24915 मामले सामने आये थे तो 2016 में सर्वाधिक 38947 अपराध सामने आये। 2020 जो कि कोरोना काल था उसमें अवश्य 28046 मामलें सामने आये अन्यथा आंकड़े 30 हजार से अधिक ही रहे। 2022 के आंकड़ों की बात करें तो महिलाओं के खिलाफ अपराध के इस तरह के 31516 मामलें आएं। यानी कि 2012 के निर्भया एपिसोड और उसकी प्रतिक्रिया स्वरुप देश ही नहीं विश्वव्यापी आक्रोश व जनचेतना के बावजूद अपराध में कमी नहीं आने से साफ हो जाता है कि कहीं ना कहीं इस तरह के समाज विरोधी लोगों में भय ही नहीं रहा। सख्त कानूनी प्रावधानों के बावजूद अपराधी प्रवृति के लोग बेखौफ इस तरह की घटनाओं को अंजाम देते आ रहे हैं। मजे की बात यह है कि अपराधियों में कानून व सजा का कोई भय ही नहीं दिखाई दे रहा अन्यथा इस तरह के अपराध कम ही नहीं बल्कि रुक जाते पर ऐसा हुआ नहीं और ऐसा होगा, इस तरह से लगता भी नहीं हैं। इससे एक बात साफ हो जाती है कि कानून बनाने या सख्त सजा व त्वरित न्याय की व्यवस्था एक बात है और समाज को अपराध विहीन बनाना दूसरी बात। इसके लिए हमें और सब के साथ हमारे मूल्यों और संस्कारों को आज की पीढ़ी तक पहुंचाना ही होगा। खाओं पीओ और मौज करों की सोच किसी भी हालत में सभ्य समाज के लिए उचित नहीं हो सकती। हमें महिलाओं की इज्जत करना, उनके सम्मान की रक्षा करना सीखना और सीखाना होगा नहीं तो कानून के डर से अपराध कम हो जाएंगे यह सोचना एक हद से अधिक सही नहीं हो सकता। यह धरातलीय अनुभव है जो हमारे सामने लगातार आ रहा है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

लोक देवता बाबा रामदेव ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया

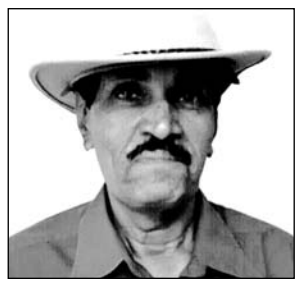

मिश्रीलाल पंवार

लोक देवता बाबा रामदेव ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया था। उन्होंने हिन्दुओं में व्याप्त जाति–पाति को मिटाने के लिए बहुत संघर्ष किया। लोक देवता बाबा रामदेव जी उडूं काश्मीर के राजा अजमलजी के पुत्र थे। मान्यता है कि भगवान द्वारकाधीष ने उनके घर अवतार लिया था। कलयुग के अवतारी बाबा रामदेव ने अपने बाल काल में ही दिव्य चमत्कारों से देव पुरुष की प्रसिद्धि पा ली थी। उन्होंने अपने जीवन में समय–समय पर अनेक लोगों को पर्चे दिए तथा अज्ञान रूपी अंधकार से बाहर निकला। इतना ही नहीं आज भी वे अपने भक्तों को पर्चे देते रहते हैं। भाद्र मास में करीब पचास लाख श्रद्धालु उनके दर्शन की अभिलाषा लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों से मारवाड़ आते हैं। ऐसी अद्भुत श्रृद्धा एवं भक्ति अन्यत्र नजर नहीं आती।

माता मैणादे को पर्चा दिया :– प्रचलित लोक गाथाओं के अनुसार लोक देवता बाबा रामदेव ने पहला पर्चा माता मैणाद को ही दिया। एक दिन माता मैणादे अपनी गोद में बालक रामदेव को दूध पिला रही थी कि ध्यान आया कि वे चूल्हे पर दूध रख कर आईं थी। अब तो दूध उफन रहा होगा। माता के मन की बात बालक रामदेव जान गए। मां को चिंता में देखा तो उन्होंने हाथ बढ़ा कर उफनते दूध के बर्तन को नीचे उतार लिया। पुत्र का यह चमत्कार देख मां आश्चर्य चकित रह गई। इस चमत्कार से भगवान ने सभी माताओं को संदेश दिया है कि अपने शिशु को जब भी स्तनपान कराओ तो शान्तचित्त और चिन्ता मुक्त होकर कराना चाहिए। चिंता ग्रस्त मां का दूध पीने वाला बालक आगे जाकर मंदबुद्धि, कमजोर व रोगी होगा जबकि शिशु को खुशी–खुशी तथा चिंता मुक्त होकर दूध पिलाने वाली माता की संतान बुद्धिमान, तेजस्वी तथा सूर्यवीर होगी। सभी माताओं को यह बात ध्यान रखनी चाहिए। बाबा का यह सन्देश सभी माता–बहनों को समझ लेना चाहिए।

कपड़ा चुराने पर दर्जी को सबक सिखाना :– बचपन में बाबा रामदेव जी ने एक बार घोड़े की सवारी करने की जिद कर ली। जिद पर अड़ जाने के बाद अजमल जी ने एक दर्जी को बुलाया और कहा कि बालक रामदेव घोड़े की सवारी की जिद कर रहे हैं। तुम कपड़े का एक घोड़ा बना दो। इस प्रकार खीनखाफ का कपड़ा देकर बालक रामदेव के लिए घोड़ा बनाने का आदेश दे दिया। कपड़ा बहुत किमती था। इसलिए दर्जी की नियत में खोट आ गई। उसने आधा कपड़ा बचाकर अपने पास रख लिया। कपड़े का घोड़ा माता मैणादे को सौंपते दर्जी ने कह दिया कि कपड़ा पूरा हो गया है। इस प्रकार झूठ बोलकर दर्जी अपने घर चला गया। इधर बाबा रामदेव जी जब उस कपड़े के घोड़े पर बैठे तो वह आकाश में उड़ गया। यह देख कर माता मैणादे और पिता अजमल जी के होश उड़ गए। उन्हें लगा कि दर्जी ने घोड़े पर कुछ जादू टोना किया है। उन्होंने आदमी को भेज कर दर्जी को वापस बुलवाया। उन्होंने दर्जी से कहा कि तूने क्या जादू टोना किया कि कपड़े का घोड़ा रामदेव को लेकर उड़ गया। दर्जी ने कहा कि उसने कोई जादू टोना नहीं किया है। बार–बार पूछने पर भी दर्जी ने एक ही जवाब दिया तो महाराज अजमलजी ने उसे कैदखाने में डाल दिया। इधर दर्जी को अहसास हो गया कि यह सब करामात खुद बालक रामदेव की है। उसने तुरंत ही रामदेव से विनती की कि हे प्रभु आपने मुझे किस संकट में डाल दिया। तब आकाशवाणी हुई कि तुमने कपडे की चोरी की है। उसी की तुम्हें सजा मिली है। तब दर्जी ने अपने अपराध को स्वीकार कर माफी मांगी। थोड़ी ही देर में बालक रामदेव आकाश मार्ग से उड़ते घर लौट आए। बालक को सकुशल वापस आया देखा तो सब ने चैन की सास ली। रामदेव जी के कहने से दर्जी को रिहा कर दिया गया। भगवान ने इस कथा से हमें संदेश दिया है कि भगवान से कुछ भी छुपा नहीं है। बुरे कर्म कर भले ही एक बार खुश हो जाओगे मगर बुरा कर्म करोगे तो सजा तो मिलेगी ही और सच्चे मन से कोई पश्चाताप कर ले तो भगवान उसे क्षमा करने में भी देर नहीं करते।

भैरव राक्षस का वध :– एक दिन बाबा रामदेव जी अपने साथियों के साथ गेंद खेल रहे थे, खेलते–खेलते गेंद को इतना दूर फैंक दिया कि सभी साथियों ने अपने आपको गेंद लाने में असमर्थता जताते हुए कहा कि आपको ही गेंद लानी पड़ेगी। इस पर बाबा रामदेव गेंद लाने के बहाने वर्तमान पोकरण की घाटी के ऊपर स्थित साथलमेर जा पहुंचे। बाबा रामदेव जी के बालक रूप में सुनसान पहाड़ी पर अकेले देखकर पहाड़ी पर धूना लगाए बैठे बालीनाथ जी महाराज ने देखा तो कहा कि बालक तू कहां से आया है ? जहां से आया है, वापस चला जा। यहां पर रात को भैरव राक्षस आएगा। बालीनाथ जी ने कहा कि यह आदमखोर राक्षस तुझे खा जाएगा। तब बाबा रामदेव जी ने रात के समय वहां पर रुकने की प्रार्थना की तो बालीनाथ जी ने अपनी कुटिया (आश्रम) में पुरानी गुदड़ी ओढ़ाकर बालक रामदेव को चुपचाप सुला दिया। इधर भैरव घूमता–फिरता बाबा बालीनाथ जी की समाधि पर आ पहुंचा। मनुष्य की गंध आई तो वह हैरान रह गया। उसने बालीनाथ जी से कहा कि आपने आसपास किसी मनुष्य को देखा क्या। बालीनाथ जी ने भैरव से कहा कि यहां पर तो तूने बारह–बारह कोस तक तो पक्षी भी नहीं छोड़ा है, मनुष्य कहां से आया। जाओ, चुपचाप अपनी गुफ़ा में जाकर सो जाओ। मगर भैरव को विश्वास नहीं हुआ। वह गंध वाली दिशा की ओर चल पड़ा। इधर बाबा रामदेव बालीनाथ जी और भैरव राक्षस की बातें सुन रहे थे। गुरु बालीनाथ द्वारा चुपचाप सो जाने का आदेश दिए जाने के कारण बोले तो कुछ नहीं मगर अपने पैर से गुदड़ी को हिलाई। भैरव वहीं खड़ा था। गुदड़ी हिलती देखी तो समझ गया कि इस गूदडी के नीचे कोई सो रहा है। वह गुदड़ी के पास पहुंचा और जोर से खींच लिया। इधर बाबा बालीनाथ जी महाराज बुरी तरह घबरा रहे थे। वे समझ नहीं पाए कि इस बालक को इस राक्षस से कैसे बचाएं।

इधर भैरव राक्षस गुदड़ी को खींचने लगा। बाबा के चमत्कार से गुदड़ी द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ने लगी। यह देख बालीनाथ जी महाराज ने सोचा कि यह कोई सामान्य बालक तो नहीं है। गुदड़ी को खींचते–खींचते भैरव राक्षस हांफ गया। अब वह भी समझ गया कि गूदडी के अन्दर सो रहा मनुष्य साधारण ईसान नहीं है। ज़रूर उसका काल है। खुद को खतरे में पाकर सोचने लगा कि यहां से भाग जाना अच्छा है। यूं सोच उसने गूदडी खींचना छोड़ दिया और भागने लगा। उसी समय बाबा रामदेव जी ने गुदड़ी से उठकर हूंकार भरी। भगवान रामदेव जी ने बालीनाथजी महाराज से आज्ञा लेकर भैरव राक्षस का पीछा किया। कुछ ही दूरी पर उन्होंने भैरव राक्षस को धर दबोच लिया। उसका वध कर लोगों को उसके आंतक से मुक्त किया। भैरव के आंतक से मुक्त होने के बाद पोकरण क्षेत्र में मानव चहलपहल फिर से शुरू होने लगी। अजमलजी ने पोकरण गढ़ की स्थापना की। वे अपने परिवार के साथ आडू काश्मीर से पोकरण आ गए।

बाबा रामदेव दिव्य देव होने के साथ–साथ एक महान समाज सुधारक भी थे। जाति–पाति के झगड़ों में जकड़े हिन्दुओं को एकजुट करने का बहुत प्रयास किया। हिन्दू समाज जातियों में बिखरा हुआ था। इससे हिन्दुओं को भारी नुक़सान हो रहा था। बड़ी संख्या में हिन्दु इस्लाम कबूल कर मुस्लिम धर्म अपना रहे थे। बाबा रामदेव ने हिन्दुओं की एकता पर विशेष ध्यान दिया। बाबा रामदेव ने क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर भी अछूत समझी जाने वाली जातियों को गले लगाया। उनके घरों में जाकर उनके साथ भजन सत्संग करना दलित और हीन समझने जाने वाले लोगों के साथ उठने–बैठने को लेकर उनके रिश्तेदारों तक ने उनके यहां आना–जाना व बोलना बंद कर दिया था। मगर बाबा रामदेवजी ने इन सबकी परवाह किए बिना सामाजिक कुरितियों से जंग जारी रखी।

वे जानते थे कि हिंदू समाज जातियों में बंटा रहा तो उनका सर्वनाश हो जाएगा। खुद को स्वर्ण जाती का मानने वाले छूआछूत को बहुत बढ़ावा देते थे। श्रमसाध्य समाज के साथ घृणित व्यवहार करते थे। इसी बात का फायदा उठाकर मुस्लिम शासक इन्हें बहला–फुसलाकर इस्लाम कबूल करने पर राजी कर लेते। उन दिनों हजारों हिंदू मुस्लिम धर्म अपना रहे थे। देश में मुस्लिम धर्म अपनाने वाले हिन्दू ही सनातन का विरोध तथा हिन्दुओं का संहार करने लगे थे। शायद बाबा रामदेव जी ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया था। मगर तत्कालीन हिंदू समाज में किसी प्रकार की चेतना नहीं जागी, उल्टे लोगो ने उनका ही विरोध करना शुरू कर दिया। खुद उनके अपने बहनोई उनका विरोध करते थे। किसी ने बाबा रामदेव की बात को गंभीरता से नहीं समझा। इस बात से व्यथित होकर छोटी उम्र में उन्होंने रामदेवरा में जीवित समाधि ले ली और अपने धाम वापस लौट गए।

–मिश्रीलाल पंवार,
(वरिष्ठ पत्रकार)

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

प्रो. अशोक कुमार

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है और इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल ज्ञान देते हैं बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का विकास भी करते हैं। शिक्षक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा में कैसे योगदान देते हैं:–

1. **ज्ञान का संचार:** शिक्षक को अपने विषय का गहन ज्ञान होना चाहिए ताकि वे बच्चों को सही और अद्यतन जानकारी दे सकें। रटने की बजाय समझ पर जोर देना, प्रयोग, चर्चा, और दृश्य–श्रव्य सामग्री का उपयोग करना शिक्षण को रोचक बनाता है। बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना उनकी जिज्ञासा को बढ़ाता है।

2. **व्यक्तित्व विकास:** एक सकारात्मक और समावेशी माहौल में बच्चे आत्मविश्वास से सीखते हैं।

शिक्षक बच्चों में संचार, समस्या समाधान, टीम वर्क जैसे कौशल विकसित करते हैं। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सहयोग जैसे मूल्यों को सिखाकर शिक्षक अच्छे नागरिक बनाते हैं।

3. **व्यक्तिगत ध्यान:** हर बच्चा अलग होता है, इसलिए शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों को समझकर शिक्षण करना चाहिए। बच्चों को उनकी कठिनाइयों को दूर करने में मदद करना चाहिए। बच्चों की उपलब्धियों को सराहना और प्रोत्साहित करना उनका मनोबल बढ़ाता है।

शिक्षक को अभिभावकों के साथ मिलकर बच्चों के विकास के लिए काम करना चाहिए। बच्चों की प्रगति के बारे में नियमित रूप से अभिभावकों को सूचित करना चाहिए। शिक्षक को हमेशा नई शिक्षण विधियों के बारे में सीखते रहना चाहिए। अपने विषय के ज्ञान को अद्यतन रखना महत्वपूर्ण है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अहम है। वे बच्चों को सिर्फ ज्ञान नहीं देते बल्कि उन्हें जिंदगी के लिए तैयार भी करते हैं। एक अच्छा शिक्षक न केवल ज्ञानी होता है बल्कि एक मित्र, मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्त्रोत भी होता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए: एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो न केवल ज्ञान देता है बल्कि छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित भी करता है। एक अच्छे शिक्षक में कई गुण होते हैं जो उन्हें एक प्रभावी शिक्षक बनाते हैं।

एक अच्छे शिक्षक के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं:–

ज्ञान: एक अच्छे शिक्षक को अपने विषय का गहरा ज्ञान होना चाहिए। उन्हें छात्रों के सवालों का जवाब देने और उनकी जिज्ञासा को शांत करने में सक्षम होना चाहिए।

संचार कौशल: एक प्रभावी शिक्षक छात्रों के साथ स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संवाद कर सकता है। उन्हें छात्रों की समझ को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए।

धैर्य: शिक्षण एक धैर्यवान काम है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों की गति और सीखने की शैली को समझता है और उन्हें प्रोत्साहित करता रहता है।

रचनात्मकता: एक अच्छा शिक्षक सीखने को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए नए–नए तरीके खोजता रहता है। वे छात्रों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए अपनी शिक्षण पद्धित को अनुकूलित कर सकते हैं।

प्रेरणा: एक अच्छा शिक्षक छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। वे छात्रों की उपलब्धियों को पहचानते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं।

सहानुभूति: एक अच्छा शिक्षक छात्रों की भावनाओं को समझता है और उनकी मदद करता है। वे छात्रों को एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान करते हैं।

लचीलापन: एक अच्छा शिक्षक बदलती परिस्थितियों के अनुकूल हो सकता है और अपनी शिक्षण योजनाओं को बदल सकता है।

व्यक्तिगत विकास: एक अच्छा शिक्षक लगातार सीखने और विकसित होने का प्रयास करता है। वे नए शिक्षण पद्धतियों और तकनीकों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।

अतिरिक्त गुण जो एक अच्छे शिक्षक में होने चाहिए:–

सकारात्मक दृष्टिकोण: एक सकारात्मक दृष्टिकोण छात्रों को प्रेरित करता है और एक सकारात्मक सीखने का वातावरण बनाता है।

संगठन: एक अच्छा शिक्षक अपनी कक्षा को व्यवस्थित रखता है और समय का प्रबंधन करता है।

तकनीकी ज्ञान: आजकल तकनीक शिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक अच्छा शिक्षक तकनीक का उपयोग करके छात्रों को पढ़ा सकता है।

एक अच्छे शिक्षक के गुणों का महत्व: एक अच्छे शिक्षक के गुण छात्रों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। एक अच्छा शिक्षक न केवल छात्रों को ज्ञान देता है बल्कि उन्हें एक बेहतर इंसान बनने में भी मदद करता है।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

राशिफल गुरूवार 5 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र 6:41 तक, शुभ योग रात्रि 9:08 तक, कौलव करण दिन 12:22 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–मिथुन, बुध–सिंह, गुरू–वृष, शुक्र–कन्या, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज तेलाधर तपस्या (जैन), साम श्रावणी उपाकर्म (सामवेदियों की राखी) है। आज से मेला रूणीचा रामदेव 9 दिन का आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:45 तक, चर 10:52 से 12:26 तक, लाभ–अमृत 12:26 से 3:53 तक, शुभ 5:06 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:39

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखे। व्यावसायिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों दुविधा बनी रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मीन
घर–परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

एक क्विंटल पांच किलो पॉलीथिन व डिस्पोजल जब्त

पालिका टीम ने चार हजार की जुर्माना राशि वसूल की

बीदासर पालिका टीम ने प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ छापेमारी की।

बीदासर, (निसं)। नगर पालिका की गठित टीम ने बुधवार को प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ छापेमारी करते हुए कस्बे के मुख्य बाजार से एक क्विंटल पांच किलो पॉलीथिन व डिस्पोजल जब्त कर चार हजार रूपये की जुर्माना राशि वसूल की। पालिका की टीम के ज्योंही बाजार में पहुंचने की सूचना मिली तो व्यापारियों में हड़कंप मंच गया। छापेमारी के डर से कई दुकानदारों ने अपनी दुकानों के शटर गिराकर भाग गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पालिका के अधिशाषी अधिकारी सोहन लाल नायक के नेतृत्व में पालिका की गठित टीम ने सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ कार्यवाही करते हुए सब्जी मंडी व बैरी चैक में कार्यवाही को अंजाम दिया। इस मौके पर ईओ सोहनलाल ने राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्रतिबंधित पॉलीथिन का व्यापारियों को भविष्य में क्रय विक्रय की चेतावनी देते हुए कहा कि पॉलीथिन के उपयोग करने से कस्बे के सौंदर्यकरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ईओ ने व्यापारियों को चेतावनी दी कि सिंगल यूज प्लास्टिक बेचता हुआ या उपयोग करते हुए मिलने पर उसके खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की जाकर चालान किया जाएगा। वहीं कस्बे के नागरिकों से अपील की कि पॉलीथिन की जगह कपड़े व जूट के थैले का उपयोग करें। कार्रवाई टीम में सफाई निरीक्षक गिरधारी लाल, कार्यवाहक सफाई जमादार अमित, तेजपाल, फायरमैन सौरभ भाटिया, राजेंद्र कुमार, शकील बल्खी आदि शामिल थे।

राज. बोर्ड की मुख्य परीक्षा के आवेदन की अंतिम तिथि आज

अजमेर, (कासं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 10वीं व 12वीं की मुख्य परीक्षा–2025 के लिए ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरने की तिथि फिर से पांच सितंबर तक के लिए बढ़ा दी है। अब बिना विलंब शुल्क के साथ बढ़ी हुई तिथि तक आवेदन कर सकेंगे। पूर्व में आवेदन करने की अंतिम तिथि 23 अगस्त निर्धारित थी जिसे पहले दो सितम्बर किया गया और अब 5 सितम्बर कर दिया गया है। परीक्षा के लिए अब तक 19 लाख से ज्यादा आवेदन प्राप्त हो चुके है।

बोर्ड सचिव कैलाश चन्द्र शर्मा के अनुसार एक अतिरिक्त शुल्क के साथ 10 सितम्बर तक आवेदन कर 13 सितम्बर तक बैंक में शुल्क जमा करवा सकेंगे। असाधारण शुल्क केवल प्राइवेट परीक्षार्थियों के लिए जिला मुख्यालयों पर 27 सितम्बर तक भरे जा सकेंगे। इसका चालान 4 अक्टूबर तक जमा होगा। आवेदन पत्र एवं चालान नोडल केन्द्रों पर जमा कराने के लिए 18 सितम्बर तक समय तय किया गया हैं। रेगुलर स्टूडेंट्स के लिए परीक्षा शुल्क 600 रुपए एवं प्राइवेट स्टूडेंट्स के लिए 650 रुपए निर्धारित किया गया है। प्रैक्टिकल एग्जाम शुल्क 100 रुपए प्रति विषय अलग से देना होगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए आवेदन करने वालों में विशेष आवश्यकता वाले छात्र, दृष्टि बाधित एवं दिव्यांग परीक्षार्थी, युद्ध में वीरगति को प्राप्त या अपाहिज सैनिकों के बच्चों, पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों के आश्रितों को परीक्षा शुल्क से मुक्त रखा गया है। लेकिन इन सभी कैटेगरी के विद्यार्थियों को 50 रुपए टोकन शुल्क जमा कराना होगा। उच्च माध्यमिक, उच्च माध्यमिक (व्यवसायिक) वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा 20 फरवरी 2025 को आरम्भ होगी। माध्यमिक, माध्यमिक (व्यवसायिक) प्रवेशिका परीक्षा 27 फरवरी 2025 को प्रारम्भ होगी।

बारिश से मौसम सुहावना हुआ

गंगापुर सिटी, (निसं)। जिला मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्र में बुधवार दोपहर के बाद से लगातार एक घंटे तक रिमझिम तो कभी तेज बारिश का दौर चला। बारिश से किसान भी खुश दिखाई दिए।

बारिश के बाद तापमान में गिरावट आने से गर्मी और उमस से लोगों को काफी राहत मिली। तहसील कानूनगो राजेन्द्र जायसवाल के अनुसार गंगापुर सिटी में क्षेत्र में अब तक 842 मिमी बारिश दर्ज की जा चुकी है। इससे तापमान में गिरावट आने से गर्मी और उमस से लोगों को काफी राहत मिली है। वहीं, मुरझा रही फसलों को जीवनदान मिला है। एक सप्ताह पूर्व गर्मी के कारण लोगों का हाल बेहाल हो गया था। बीच–बीच में एकाध बार कुछ देर के लिए तेज बारिश भी हुई। रिमझिम बारिश के बाद कई जगहों पर सड़कों पर पानी भर गया, जिसके कारण आमजन, राहगीर, वाहन सवारों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ा।

सार-समाचार

स्थाई समितियों की बैठक आयोजित

उदयपुर, (कासं)। जिला परिषद की प्रशासन एवं स्थापना तथा ग्रामीण विकास स्थाई समिति की बैठक जिला प्रमुख ममता कुंवर की अध्यक्षता में जिला परिषद सभागार में हुई। मुख्य कार्यकारी अधिकारी कीर्ति राठौड ने बताया कि बैठक में सार्वजनिक निर्माण विभाग सहित पंचायती राज विभाग को हस्तांतरित विभागों शिक्षा विभाग, कृषि विभाग, चिकित्सा विभाग एवं महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में उपस्थित विभागीय अधिकारियों द्वारा प्रगति रिपोर्ट सहित योजनाओं की जानकारी दी गई। जिला प्रमुख ममता कुंवर पंवार ने उपस्थित सभी विभागीय अधिकारियों को राज्य सरकार की मंशानुरूप समय पर कार्य सम्पादित करते हुए आमजन को कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित करने तथा योजनाएं एवं कार्यक्रमों की जानकारी स्थानीय जनप्रतिनिधियों को भी देने के निर्देश दिए। बैठक में जिला परिषद सदस्य ख्यालीराम सुहालका, सुनिता मांडावत, रीना भाणावत, कालुराम मीणा, दौलतराम मीणा, शंकर पटेल, दुदाराम, ललित शर्मा, कुरीलाल, अतिरिक्त विकास अधिकारी राजेन्द्र शर्मा सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता, कृषि विभाग, चिकित्सा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, शिक्षा विभाग के अधिकारियों सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

शिक्षक दिवस मनाया

उदयपुर, (कासं)। डबोक जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विवि) उदयपुर के संगठक लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक में शिक्षक दिवस समारोह मनाया गया। शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. सरोज गर्ग ने की। कार्यक्रम का आरंभ डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थी निहारिका चुंडावत के स्वागत उद्बोधन से हुआ। शिक्षकों को मौन साधक, समाज सेतु एवं शिक्षार्थियों में संस्कारों की बीजारोपण करने का माध्यम घोषित करते हुए निहारिका ने शिक्षक दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के क्रम में विभाग आधारित प्रस्तुतियों ने समां बांधा। व्यक्तिगत प्रस्तुतियों में बी.ए. बी.एड.- बी.एस.सी. बी.एड. विभाग की प्रशिक्षणार्थी भूमि गुर्जर ने कविता पाठ किया वहीं बी.एड. विभाग से अनुपाराम ने गुरू शिष्य परंपरा के द्योतक गीत का गान किया वहीं सामूहिक प्रस्तुति में डी.एल.एड. विभाग के प्रशिक्षणार्थियो के समूह गीत की प्रस्तुति दी। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्राचार्य प्रो. सरोज गर्ग ने अध्यापक शब्द को जिम्मेदारी का पर्याय बताते हुए परिवार के बाद शिक्षार्थी को संस्कारवान बनाने का मूल आधार घोषित किया।

प्रो. के.के. शर्मा को दी श्रद्धांजलि

उदयपुर, (कासं)। नगर की साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था, प्रसंग संस्थान की ओर प्रसिद्ध भाषा विशेषज्ञ प्रोफेसर के.के.शर्मा को उनके असामयिक अवसान पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संस्थान के अध्यक्ष डॉ. इन्द्र प्रकाश श्रीमाली ने प्रोफेसर शर्मा का जीवन परिचय एवं श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उन्हें अपने गुरु के रुप में याद करते हुए कहा कि वे अपने विद्यार्थियों को मनोयोग से पढाते थे। डॉ. श्रीमाली ने कहा कि शैली विज्ञान का ऐसे उद्भट विद्वान राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे देश में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे आकाशवाणी के वाणी पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों ध्वनि शास्त्र के आधार पर सही उच्चारण का वैज्ञानिक आधार बताते थे। डॉ सुयश चतुर्वेदी ने कहा कि वे हमारे पिता के मित्र थे और हमेशा आत्मीयता बरतते थे। राजस्थान साहित्य अकादमी की पूर्व सदस्य, डॉ मंजु चतुर्वेदी ने कहा कि प्रोफेसर शर्मा जैसे शिक्षक से पढना,उनके विचारों से लाभान्वित होना गर्व की बात है। उन्होंने हिंदी भाषा एवं व्याकरण संबंधी अनेक पुस्तकें लिख कर भाषा विज्ञान का वैज्ञानिक आधार तैयार किया था। श्रद्धांजलि सभा में रीना श्रीमाली, विजय, डॉ. सरिता जैन, जयंत, डॉ धारणा, आदर्श, मनोरमा चतुर्वेदी, विशेषता, तृप्ति तथा चिन्मय आदि उपस्थित रहे।

आवेदन आमंत्रित

उदयपुर, (कासं)। कृषि व उद्यानिकी में उन्नत प्रविधियों के माध्यम से कृषक कल्याण का सपना संजोने वाले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा कई नवाचारों को मूर्त रूप दिया जा रहा है। इसी श्रृंखला में राज्य सरकार की बजट घोषणा के तहत उद्यान निदेशालय की ओर से किसानों की क्षमता वृद्धि के लिए नॉलेज एनहांसमेंट प्रोग्राम अन्तर्गत युवा कृषकों को विदेश में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। उद्यान विभाग के उपनिदेशक डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन 10 सितंबर तक राज किसान साथी पोर्टल पर (अंतरराष्ट्रीय कृषक प्रशिक्षण भ्रमण) आमंत्रित किये गये हैं। उच्च कृषि तकनीकी की संभावनाओं के मद्देनजर संभागवार लक्ष्य निर्धारित कर निर्धारित मापदंडों के आधार पर कृषि क्षेत्र वाले कृषक, दुग्ध उत्पादक व पशुपालन राज किसान साथी पोर्टल पर आवेदन कर सकते है।

टी.ए.डी. मंत्री का यात्रा कार्यक्रम

उदयपुर, (कासं)। जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के मंत्री बाबूलाल खराड़ी गुरुवार 5 सितंबर को उदयपुर-बांसवाड़ा दौरे पर रहेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार टीएडी मंत्री खराड़ी बुधवार 4 सितंबर की शाम 6.10 बजे उदयपुर पहुंचेंगे और यहां से सड़क मार्ग से कोटडा पहुंचकर रात्रि विश्राम करेंगे। मंत्री श्री खराड़ी सुबह 10 बजे उदयपुर के प्रतापनगर आएंगे और वहां आयोजित सिकलीगर, घुमन्तू समाज की राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। वे यहां से बांसवाड़ा के लिए प्रस्थान करेंगे और वहां आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर रात्रि 9 बजे पुन: कोटड़ा पहुंचेंगे।

युवक की अकाल मौत

उदयपुर, (कासं)। शहर के बडगांव थाना क्षेत्र में युवक की अकाल मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गायत्री नगर बडगांव निविासी करणसिंह पुत्र देवीसिंह की अकाल मौत हो गई। करणसिंह पाउडर फेक्ट्री में नौकरी करता था। रात में वह खाना खाने के बाद सोया था। इस दौरान अचानक तबीयत खराब होने पर परिजन उसे उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय ले गए। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

कलेक्टर पोसवाल ने आयड़ नदी क्षेत्र का किया निरीक्षण

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर शहर सहित जिले भर में दो दिन से चल रहा बारिश का दौर बुधवार को भी जारी रहा। दिन भर रूक रूक कर हल्की व तेज बारिश होती रही। इस बीच जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल बुधवार सुबह शहर के हालातों का जायजा लेने सिटी राउण्ड पर निकले। इस दौरान स्मार्टसिटी लिमिटेड के सीईओ प्रदीपसिंह सांगावत, अधिशासी अभियंता पंचौरी भी मौजूद रहे।

जिला कलक्टर पोसवाल ने अधिकारियों की टीम के साथ आयड नदी क्षेत्र का दौरा किया। सर्वप्रथम

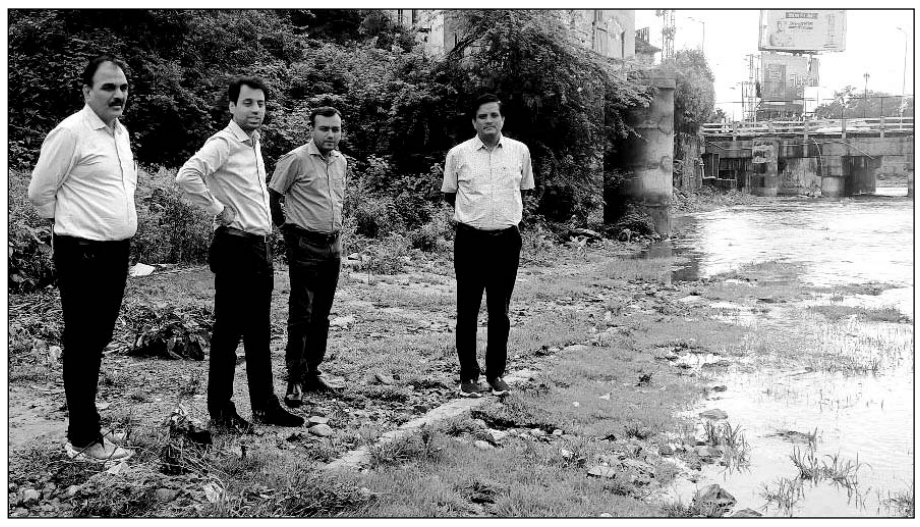

आयड़ नदी क्षेत्र का निरीक्षण कर अधिकारियों को निर्देशित करते जिला कलक्टर।

- वर्षा जनित हादसों की रोकथाम के लिए जरूरी व्यवस्थाओं के लिए किया पाबंद

निर्माणाधीन एफसीआई नई पुलिया पर पहुंचे। वहां कार्य की प्रगति की जानकारी ली। सीईओ सांगावत ने अवगत कराया कि निर्माणाधीन पुलिया पर एकतरफा यातायात शुरू कर दिया है तथा बारिश का दौर थमने के बाद बकाया कार्य पूर्ण करा लिया जाएगा। इसके पश्चात जिला कलक्टर ने क्रमश: सुभाषनगर स्थित आयड नदी की रपट, लेकसिटी मॉल के समीप पुलिया व नदी बहाव क्षेत्र, अशोक नगर मुक्ति धाम के पार्श्व में स्थित रपट, न्यू भोपालपुरा पुलिया तथा पुलां क्षेत्र में आयड़ नदी पर बनी रपट और पुलिया क्षेत्रों का अवलोकन कर आयड नदी और पुलियाओं पर बह रही जलराशि के बारे में जानकारी ली। उन्होंने पानी के प्रवाह और इससे प्रभावित होने वाले क्षेत्र के बारे में भी अधिकारियों से पूछा तथा अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान कलक्टर पोसवाल ने स्मार्ट सिटी लिमिटेड के माध्यम से कराए गए आयड नदी सौंदर्यीकरण कार्य की धरातलीय स्थिति जानी। उन्होंने आयड नदी में अलग-अलग स्थानों पर हुए सौंदर्यीकरण कार्य और पानी के बहाव के बाद की स्थिति भी जानी और संतोष जताया कि नदी में बहाव के बावजूद सौंदर्यीकरण कार्य प्रभावित नहीं हुए हैं। इस मौके पर उन्होंने मौजूद शहरवासियों से भी संवाद कर जल बहाव की स्थितियों के बारे में जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान जिला कलक्टर ने वर्षा जनित हादसों की रोकथाम पर जोर दिया। उन्होंने आयड की रपट पर बहते पानी के बीच लोगों को गुजरने से रोकने के लिए आवश्यक बेरिकेटिंग कराने, आमजन को जागरूक करने के निर्देश दिए। उन्होंने रपट के किनारे मौजूद लोगों को भी बहते पानी के बीच रपट पार नहीं करने की अपील की। साथ ही आवासीय क्षेत्रों में मुख्य सडकों के किनारे जमा बरसाती पानी की निकासी कराने के भी निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।

शिक्षक दिवस का आयोजन

बीएन शिक्षा संकाय में शिक्षक दिवस का आयोजन हुआ।

उदयपुर, (कासं)। शिक्षा संकाय, भूपाल नोबल्स विवि के तत्वाधान में प्रायोजित नौ दिवसीय विद्यार्थी अभिमुखीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक दिवस का आयोजन किया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए अधिष्ठाता शिक्षा संकाय, प्रो शशि चित्तौडा ने बताया कि शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण के साथ सरस्वती वन्दना तथा संस्था गीत से हुआ। कार्यकम में कर्नल प्रो शिव सिंह सारंगदेवोत, कार्यवाहक अध्यक्ष, विद्या प्रचारिणी सभा, डॉ महेन्द्र सिंह राठौड, सचिव, विप्रस, मोहब्बत सिंह राठौड, प्रबन्ध निदेशक, राजेन्द्र सिंह झाला, संयुक्त सचिव, विप्रस, डॉ निरंजन नारायण सिंह राठौड, कुलसचिव, भूपाल नोबल्स विवि तथा डॉ प्रेम सिंह रावलोत, डीन पीजी स्टडीज अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। शिक्षक दिवस के उपलक्ष में शिक्षा संकाय में कार्यरत सभी शिक्षकों का सम्मान किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो सारंगदेवोत ने आव्हान किया कि हमें एक शिक्षक के रूप में सीखने और अवलोकन के लिए सदैव जिज्ञासु रहना चाहिए।

प्रशिक्षण दिया

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय एवं मंडल मुख्यालय के तत्वावधान में मंडल प्रशिक्षण केंद्र उदय निवास पर आयोजित गाइड यूनिट लीडर बेसिक कोर्स, गाइड यूनिट लीडर एडवांस कोर्स, फ्लॉक लीडर एडवांस कोर्स व फ्लॉक लीडर बेसिक कोर्स में विभिन्न गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया गया। 6 सितंबर तक चलने वाले इस शिविर में 70 संभागी सहभागिता कर रहे हैं। जिला संगठन आयुक्त विजयलक्ष्मी वर्मा ने बताया कि दक्ष प्रशिक्षक के रूप में जयपुर संभाग से लीडर ट्रेनर गाइड उमा कुमावत उदयपुर से अंजना शर्मा, कैलाश शर्मा, लीना जैन, किरण पहाड़िया, निर्मला मेनारिया, श्याम लाल पुरोहित ने विभिन्न सत्रों में प्रशिक्षण दिया। इस शिविर का उद्देश्य संभागियों को आपदा के समय मुस्तैद रहकर जन राहत के कार्य में सहयोग देने, सुसंगठित होकर समाज सेवा करने के लिए प्रेरित करना है। प्रशिक्षण में मंडल स्तर से प्रतापगढ़, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिले की महिला अध्यापिकाएं भाग ले रही है।

गीतांजली विवि में दीक्षांत समारोह कल

उदयपुर, (कासं)। गीतांजली यूनिवर्सिटी द्वारा दीक्षांत समारोह - 2024 का आयोजन 6 सितम्बर को गीतांजली यूनिवर्सिटी के स्व. नर्मदा देवी अग्रवाल ऑडिटोरियम में किया जायेगा।

वाईस चांसलर डॉ एस.के. लुहाडिया ने जानकारी दी कि दीक्षांत समारोह के अवसर पर 844 हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स को डिग्री प्रदान की जाएगी और साथ ही 43 गोल्ड मेडल्स फाइनल परीक्षा में अधिकतम अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को दिए जायेंगे व पांच बेस्ट ग्रेजुएट्स को भी गोल्ड मेडल्स प्रदान किये जायेंगे। कोन्वोकेशन-2024 के, मुख्य अतिथि गजेन्द्र सिंह शेखावत केंद्रीय मंत्री, संस्कृति और पर्यटन (लोकसभा)भारत सरकार, गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन व गीतांजली यूनिवर्सिटी के चांसलर जे.पी अग्रवाल जी की उपस्तिथि में स्नातकों, स्नातकोत्तरों व डॉक्टरेट को स्वर्ण पदक व डिग्री प्रदान की जाएगी। साथ ही पूर्व वाईस चांसलर डा.एस. मेहता, सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ ए.ए. सैफी को उनके चिकित्सा क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान के लिए सम्मानित किया जायेगा। इस अवसर पर गीतांजली यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर डॉ एस.के लुहाडिया, गीतांजली ग्रुप के वाईस चेयरमैन कपिल अग्रवाल, एग्जीक्यूटिव

डा.एस.के.लुहाडिया (बाएं से प्रथम), अंकित अग्रवाल (बीच में) व मयूर रावल (दायें से प्रथम) ने दीक्षांत समारोह की जानकारी दी।

डायरेक्टर अंकित अग्रवाल एवं गीतांजली यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार मयूर रावल की उपस्थिति रहेगी।

प्रेस वार्ता के दौरान रजिस्ट्रार मयूर रावल ने बताया कि गीतांजली यूनिवर्सिटी के सभी इंस्टिट्यूट संबंधित वैधानिक निकाय द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। अब तक विवि में लगभग 8500 छात्र एडमिशन ले चुके हैं, जिनमें से 4200 को डिग्री मिली है। ये छात्र अब देश में अच्छे हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान में यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स कुल संख्या 3476 है जिसमें मेडिकल 1460, अलाइड हेल्थ साइंस 171, डेंटल 491, फार्मेसी 473, नर्सिंग 458, फिजियोथेरेपी 358, फेलोशिप 14, पी.एच.डी. 51 है। हमारे फैकल्टी की कुल संख्या-770 है। पीएच.डी. शोधार्थियों की कुल संख्या 51, अब तक फेलोशिप प्रोग्राम में नामांकित छात्रों की कुल संख्या ड्क्त 14 है और डिग्री अवार्डेडेड फेलोशिप की संख्या 12 है। वर्ष 2023-24 में कुल शोध प्रकाशनों की संख्या ड्क्त 12० है। कुल पेटेंट प्रकाशनों की संख्या 8 है।कुल पेटेंट स्वीकृत 4, कुल कॉपीराइट्स 3, चालू शोध परियोजनाओं की संख्या 343 और साथ ही अब तक चार नेशनल कांफ्रेंस आयोजित की जा चुकी हैं। गीतांजली यूनिवर्सिटी 'ग्लोबल पार्टनरशिप फॉर एजुकेशनल एक्सचेंज इन मेडिसिन एंड द हेल्थ प्रोफेशंस' का सदस्य है। गीतांजली यूनिवर्सिटी द्वारा स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर, एमएसएआई के साथ भी इंटरनेशनल कोलैबोरेशन की शुरुआत की है, जिससे वहां के विद्यार्थी यहाँ पर और यहाँ के विद्यार्थी बाहर जाकर पढ सकेंगे। गीतांजली ठ्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल ने प्रेस वार्ता के दौरान घोषणा की कि जल्द ही गीतांजली यूनिवर्सिटी में स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स का निर्माण किया जायेगा जहाँ विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ट्रेनिंग दी जाएगी। अंकित ने यह भी कहा कि रिसर्च पॉलिसी की शुरुआत की जा रही है जिसमें रिसर्च ग्रांट व फंडिंग शामिल है।

सार-समाचार

डॉ. प्रशान्त नाहर प्रेसिडेन्ट नियुक्त

उदयपुर, (कासं)। सांई तिरूपति विवि के चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल द्वारा नियमानुसार डॉ. प्रशान्त नाहर को विवि के प्रेसिडेन्ट (वाइस चांसलर) के पद पर नियुक्त किया गया है। डॉ. नाहर पूर्व में पेसिफिक डेन्टल कॉलेज उदयपुर में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थे। वर्तमान में सांई तिरूपति विवि में मेडिकल, नर्सिंग फार्मेसी फिजियोथेरेपी, एमबीए एंड हॉस्पिटल एटमिनिस्ट्रेशन एवं पैरामेडिकल साईन्स के अन्तर्गत पाठ्यक्रम संचालित है। इन पाठ्यक्रमों में नियमित रूप से लगभग 3 हजार विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं।

पीएम सूर्य घर लाभार्थी शिविर आज

उदयपुर, (कासं)। अजमेर विद्युत वितरण निगम की ओर से 5 सितंबर को उदयपुर कृ्य के उपखण्ड कार्यालय मधुबन पावर हाउस मे प्रात: 10 से दोपहर 1 बजे तक पीएम सूर्य घर लाभार्थी शिविर का आयोजन किया जाएगा। निगम के अधीक्षण अभियंता के.आर.मीना ने बताया कि शिविर में उपभोक्ताओं को पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत मुफ्त बिजली उपलब्ध करवाए जाने को लेकर उपभोक्ताओ को जागरूक किया जाएगा। इस योजना के तहत उपभोक्ता अपने घर की छतों पर सोलर पैनल लगवाने में सब्सिडी प्राप्त कर सकता है। उपभोक्ताओं से शिविर मे उपस्थित होकर योजना का लाभ उठाने की अपील की है।

खेल किट का विमोचन

उदयपुर, (कासं)। शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा सत्र 2024-25 मैं आयोजित होने वाली विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के लिए शाला क्रीडा संगम केंद्र एम श्री फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय उदयपुर में खिलाड़ियों के खेल किट का विमोचन चेतन पानेरी एवं रघुनाथ पालीवाल प्रदेश मीडिया प्रभारी राव गोपाल सिंह आसोलिया ने किया। एसडीएमसी सचिव गोपाल सिंह आसोलिया ने बताया कि इस अवसर पर डॉ.धर्मेंद्र सिंह शक्तावत, दिग्विजय सिंह राणावत डॉ. सतीश चौधरी, गोवर्धन सिंह झाला, विजेंद्र कुलदीप, प्रेम शंकर जाटव, डॉ सीमा गुर्जर, नकुल कटरा, एवं शाला कीडा संगम के शारीरिक शिक्षक उपस्थित थे।

उपमुख्यमंत्री उदयपुर दौरे पर

उदयपुर, (कासं)। प्रदेश की उप मुख्यमंत्री तथा वित्त, पर्यटन, सार्वजनिक निर्माण, कला, साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व, महिला एवं बाल विकास व बाल अधिकारिता विभाग की मंत्री दिया कुमारी 5 व 6 सितंबर को उदयपुर दौरे पर रहेंगीं। उप मुख्यमंत्री के विशिष्ट सहायक ललित कुमार ने बताया कि वे गुरुवार 5 सितंबर की शाम 6.30 बजे सड़क मार्ग से उदयपुर पहुंचेंगीं और शाम 7 बजे प्रताप गौरव केन्द्र एवं यहां पर लाइट एण्ड साउण्ड शो का निरीक्षण करेंगीं। उप मुख्यमंत्री 6 सितंबर को संभागीय आयुक्त कार्यालय में सुबह 9 से 11 बजे तक प्रताप सर्किट के संबंध में हितधारकों के साथ बैठक लेंगीं और 11 बजे गोगुन्दा के लिए प्रस्थान करेंगीं। गोगुन्दा में प्रताप सर्किट के निरीक्षण पश्चात उप मुख्यमंत्री मध्याह्न 12.30 बजे जयपुर के लिए प्रस्थान कर जाएंगीं।

इमरत रसूल शाह बाबा का उर्स आज से

उदयपुर, (कासं)। शहर के ब्रह्मपोल बाहर स्थित दरगाह हजरत इमरत रसूल शाह बाबा र.अ. के 134वें तीन दिवसीय उर्स का आगाज गुरुवार को बाद नमाज असर परचम कुशाई की रस्म के साथ होगा। कमेटी के सदर हाजी सरवर खान व सेक्रेट्री शादाब खान ने बताया कि तीन दिवसीय उर्स का आगाज गुरुवार को असर की नमाज के बाद परचम कुशाई के साथ होगा। सायं 5 बजे बाद चादर शरीफ का जुलूस दरगाह पर पहुंचेगा और अकीदतमंद लोग चादर व फुल पेश करेंगे। सायं 6 बजे लंगर तकसीम किया जाएगा व रात्रि 9 बजे बाद महफिले मिलाद का होगी जिसमें स्थानीय मिलाद पार्टी व नातख्वां हजरात नातिया कलाम पेश करेंगे।

हादसे में युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)। शहर के भूपालपुरा थाना क्षेत्र मे हुए सड़क हादसे में घायल युवक की मौत हो गई। पुलिससे प्रापत जानकारी कके अनुसार मंगलवार को भुपालपुरा थाना क्षेत्र आयड़ जैन मंदिर के समीप हुए सड़क हादसे में घायल स्कूटी सवार खोरिया खेड़ी भादसौड़ा चित्तौड़गढ़ हाल बडगांव निवासी राजकुमार (20) पुत्र रामेश्वर लाल की एमबी चिकित्सालय उपचार के दौरान मौत हो गई। राजकुमार अपनी नानी के पास रहते हुए उदयपुर में पढाई कर रहा था एवं बोहरा गणेश मंदिर में हुई परसादी के लिए वहां पर गया था। जहां से वापस लौट रहा था।

बाइक भिड़ंत में युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)।जिले के गोगुन्दा थाना क्षेत्र में आमने सामने दो बाईक की भिडंत में घायल हुए युवक की मौत हो गई। अन्यत्र हादसे में घायल महिला की मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गोगुन्दा थाना क्षेत्र मजाम बस स्टेण्ड के समीप 2 सितंबर को आमने सामने दो बाइक की भिडंत हो गई। हादसे में बाइक सवार मलारिया कला मादा गोगुन्दा निवासी दिलिप कुमार (35) पुत्र भंवरलाल गमेती गंभीर घायल हो गया।

कंचन कुंवर जिला महामंत्री नियुक्त

उदयपुर, (कासं)। बजरंग सेना मेवाड के प्रवक्ता गिरिराज सिंह सांखला ने बताया कि संगठन विस्तार की दृष्टि से जिला महामंत्री के दायित्व पर कंचन कुंवर सोलंकी, देवाली को जिला महामंत्री के दायित्व पर नियुक्त किया गया, यह घोषणा प्रमुख कमलेंद्र सिंह पंवार ने की।

-:आम सूचना:-

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राज्य स्तरीय पर्यावरण प्रभाव आंकलन प्राधिकरण, राजस्थान के पत्र क्रमांक-F1/(4) SEIAA/SEAC-Raj/Sectt/Project/Cat. B2(22497)/ 2022-23 Jaipur Dated 17/5/2023, के द्वारा 1. राजेन्द्र सिंह चारण, 2. श्रीमती रतन माहेश्वरी को निकट ग्राम लालमादड़ी, तहसील देलवाड़ा, जिला राजसमंद में स्थित खनन पट्टा संख्या 05/2022 रेफरेन्स नम्बर - 20211000046958, वास्ते खनिज मेसेनरी स्टोन, क्षेत्रफल 2.1437 हेक्टेयर के लिए पर्यावरण स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। उपरोक्त स्वीकृति की प्रति जनसाधारण के लिए उपलब्ध है एवं मण्डल की वेबसाइट http://environmentclearance.nic.in पर भी देखी जा सकती है।

1. राजेन्द्र सिंह चारण
2. श्रीमती रतन माहेश्वरी

दो दिवसीय युवा नाट्य उत्सव

दो दिवसीय ब्लॉक स्तरीय वाकपीठ सम्पन्न

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर शहर व गिर्वा के संस्था प्रधानों की दो दिवसीय ब्लॉक स्तरीय वाकपीठ बुधवार को राजकीय फतेह उच्च माध्यमिक विद्यालय में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कुंज बिहारी भारद्वाज की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

वाकपीठ अध्यक्ष रघुनाथ पालीवाल ने बताया कि इस अवसर पर संयुक्त निदेशक महेंद्र जैन, जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक लोकेश भारती, जिला शिक्षा अधिकारी प्राथमिक शिक्षा नौनिहाल सिंह, सहायक निदेशक दिनेश बंसल का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कुंज बिहारी भारद्वाज ने प्रशासनिक सत्र में प्रवेशोत्सव, सर्वे, नामांकन बढाने, उपचारात्मक शिक्षण, रीड इथोन (प्रखर), वर्कबुक का वितरण, शालादर्पण, स्वच्छता पखवाडा नवोदय विद्यालय, इंस्पायर अवार्ड, विद्यालय की भौतिक सुविधाएं, पोषाहार, कहा कि इस प्रकार की वाकपीठ हमारे हौसलों में दम भरती है, दुगुनी ऊर्जा से हम अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करते हैं।

संयुक्त निदेशक महेंद्र जैन ने कहा कि हमारे संस्था प्रधान समर्पण भाव से कार्य कर रहे हैं। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक लोकेश भारती ने विभागीय कार्य को कुशलता से करना चाहिए, हमारे कार्य की मेहनत परिणाम में झलकती है।जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक नौनिहाल सिंह ने कहा कि भविष्य निर्माताओं को राष्ट्र सेवा हेतु तत्पर रहना चाहिए।

कार्यक्रम में दिसंबर माह तक सेवानिवृत होने वाले प्रधानाचार्यों रघुनाथ पालीवाल, शंकर लाल बारबर, आलोक शेखर शर्मा, जगदीश पाठक, अरुणा छाजेड़, उर्मिला त्रिवेदी, रेणु शर्मा, दर्शना जैन का सम्मान कर अभिनंदन पत्र प्रदान किए गए। साथ ही विद्यालयों में कक्षा 10 व 12 का शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम देने वाले संस्था प्रधानों का सम्मान किया।

इस अवसर पर डॉ बी पी शर्मा ने संस्था प्रधानों का मार्गदर्शन, महक सनाढ्य ने वित्तीय प्रबंधन, वीरेंद्र पंचोली ने संस्थापन एवं सेवा रिकॉर्ड संधारण पर वार्ताएं प्रस्तुत की। वाकपीठ अध्यक्ष रघुनाथ पालीवाल ने आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। मुकेश पंड्या ने संचालन किया।

सितंबर में उदयपुर मण्डल में विभिन्न जगह लगेंगे कैंप

उदयपुर, (कासं)। डाक विभाग के उदयपुर मण्डल द्वारा प्रत्येक बालिका सुकन्या बालिका स्कीम के तहत पूरे सितंबर माह में उदयपुर मण्डल में विभिन्न जगह कैंप आयोजित किए जा रहे है, जिसका मुख्य उद्देश्य बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तहत बालिकाओ का भविष्य उज्जवल एवं सुरक्षित बनाना है।

इस अवसर पर प्रवर अधीक्षक अक्षय गाडेकर ने बताया कि इस स्कीम के अंतर्गत किसी भी डाकघर मे दस वर्ष तक की बालिका के आधार कार्ड व अभिभावक का फोटो पहचान पत्र एवं निवास प्रमाण पत्र देते हुए खाता खुलवाया जा सकता है। इसमें बालिका की उच्चतर शिक्षा अथवा वैवाहिक संबंधी आर्थिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए बालिका की 18 वर्ष की आयु के पश्चात 50 प्रतिशत तक की राशि को निकालने की सुविधा है एवं यह खाता इसे खोलने की तारीख से 21 वर्ष के बाद या बालिका के विवाह से एक माह पूर्व खाता बंद कर राशि प्राप्त की जा सकती है। इस योजना मे उच्च ब्याज दर (वर्तमान मे 8.2 प्रतिशत) के अतिरिक्त आयकर मे छूट का प्रावधान भी है।

यह खाता कम से कम 250 रुपये से खोला जा सकता है एवं अधिकतम प्रति वित्तीय वर्ष 150000 रुपये तक जमा किए जा सकते है, जिसकी अभिभावक आयकर मे छूट ले सकते हैं।

कार्यालय ग्राम पंचायत, सरादित

पं.सं. फलासिया, जिला-उदयपुर (राज.)

क्रमांक:- ग्रा.पं./2024-25/SPL-01 दिनांक-03.09.24

ई निविदा (निविदा सूचना संख्या/2024-25)

ग्राम पंचायत सरादित में ग्राम पंचायत के लिये महात्मा गांधी नरेगा व अन्य योजनान्तर्गत कराये जाने वाले निर्माण काया हेतु सामग्री उपापन की निविदाऐं दिनांक 04/09/2024 प्रात: 8.00 बजे से दिनांक 13/09/2024 सांय 6.00 बजे तक आमंत्रित कि जाती है।

निविदा सूचना व पंचायत वार विवरण तथा विस्तृत शर्ते एवं पूर्ण विवरण वेब साईड sppp.rajasthan.gov.in एवं eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN N0 -2024_PRD_416884_1

सरपंच
ग्राम पंचायत सरादित
पंचायत समिति फलासिया

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत सरादित
पंचायत समिति फलासिया

ऋषभदेव में आठ इंच बारिश दर्ज, हाईवे पर पांच-पांच फीट पानी भरा

पानी जमा होने के कारण उदयपुर-अहमदाबाद हाईवे छः घंटे तक जाम रहा

उदयपुर की स्वरूपसागर के चारों गेट दो-दो फीट खोले।

- मोरवानिया पुलिया पानी के बहाव में बह गई, जिससे उभयेश्वर व अन्य गांवों का सम्पर्क टूटा
- पीछोला झील के छलकने से ओवरफ्लो हुए स्वरूपसागर पर दूसरे दिन भी चादर चल रही है

उदयपुर, (कासं)। लेकसिटी में 10 दिनों में हुई बारिश ने शहर के झीलों की सूरत ही बदलकर रख दी है। उदयपुर शहर की प्रमुख झीलें व नदी-तालाब इस बार मानसूनी चक्र के बीतते माह के बीच छलकने की राह देख रहे थे। वहीं 24 अगस्त को मौसम विभाग के अलर्ट के बीच शुरू हुई बारिश ने नदी-नालों को उफान पर ला दिया और उसके बाद दो दिन से हो रही बारिश ने इस ऊफान को 'ओवरफ्लो' कर दिया। शहर की सीसारमा नदी 10 फीट के वेग से बह रही है। वहीं शहर की फतहसागर झील भी छलकने से अब केवल ढाई फीट खाली है। मदार नहर व रानी रोड़ हवाला गांव से आ रही नहर से इसमें दो तरफा आवक हो रही है और बीते 36 घंटों में इसमें सवा दो फीट पानी की आवक हुई है।

जानकारी के अनुसार मुख्यालय से 15 किमी दूरी पर कोडियात रोड़ पर स्थित मोरवानिया पुलिया पानी के बहाव के साथ बह गई जिससे उभयेश्वर व अन्य गांवों का सम्पर्क टूट गया। वहीं ऋषभदेव में हुई 8 इंच (202 मिमी) बारिश से उदयपुर-अहमदाबाद हाईवे पर केसरियाजी के समीप हाइवे पर पांच-पांच फीट पानी जमा होने से यह छह घंटे जाम रहा। शाम तक जाम की स्थिति साफ हुई और यातायात सुचारू हुआ। इधर, शहर का सबसे बड़ा 32 फीट क्षमता वाला बड़ी तालाब छलकने के करीब है। इसमें तेजी से हो रही आवक के चलते यह देर रात छलक सकता है।

शहर में मानसून के दो माह बेरूखी के बितने के बाद 24 अगस्त से बारिश की शुरूआत हुई और इस बारिश ने बूस्टर डोज के रूप में झीलों में पानी की आवक शुरू करवाई। सीसारमा नदी के चलने के साथ पीछोला का जलस्तर लगातार बढ़ता रहा और अलर्ट की इस अनवरत बारिश ने मदार नहर को भी 28 अगस्त को चला दिया। हल्की आवक के साथ शुरू हुआ फतहसागर भरने का क्रम अब तेजी से फतह की ओर बढ़ रहा है। झील का जलस्तर शाम पांच बजे तक 11 फीट 6 इंच हो गया। इसमें बीते 36 घंटे में सवा दो फीट पानी आया है। यहीं आवक बनी रही तो यह झील शनिवार तक छलक सकती है। इधर कोडियात रोड़ स्थित मोरवानिया से बड़ी तालाब में तेजी से आवक हुई और सुबह साढ़े तीन फीट खाली बड़ी तालाब शाम तक छलकने से केवल दो इंच दूर रह गया। यह तालाब आज रात या गुरूवार सुबह तक छलक जाएगा। मोरवानिया तालाब की पुलियां टूटने से इसके आसपास के गांव उभयेश्वर आदि का सम्पर्क टूट गया।

पीछोला झील के छलकने से ओवरफ्लो हुए स्वरूपसागर पर दूसरे दिन भी चादर चल रही है। सीसारमा नदी का वेग कम होने के बाद देर रात हुई बारिश ने इसका वेग बुधवार सुबह फिर बढ़ा दिया और यह 13 फीट क्षमता से बहने लगी जो शाम तक 10 फीट तक बह रही है। इससे हो रही तेजी से आवक को स्वरूपसागर के चारों गेट को दो-दो फीट खोलकर आयड़ नदी में प्रवाहित कर उदयसागर झील में समाहित किया जा रहा है। उदयसागर के दोनो गेट 7-7 फीट खुले हुए है। प्रातः 8 बजे समाप्त बीते 24 घंटों में उदयपुर शहर में 43 मिमी, देवास स्टेज प्रथम पर सर्वाधिक 70 मिमी, मदार 47, नाई 40, वल्लभनगर में 22 व उदयसागर पर 18 मिमी बरसात रिकॉर्ड की गई।

माही डेम के गेट खोलने के बाद बेणेश्वर धाम टापू बना

सोमकमला आंबा बांध के गेट संख्या 1, 2, 12 और 13 को आधा-आधा इंच खोला, 15940 क्यूसेक पानी की निकासी जारी

संभाग का सबसे बड़ा सोमकमला आम्बा बांध के भराव क्षमता को पूर्ण होने पर गेट खोले गये।

डूंगरपुर, (निसं)। डूंगरपुर में तीन दिन से रुक-रुक कर बारिश का दौर चल रहा है। जिले के छोटे-बड़े बांध, तालाब छलकने लगे हैं। जिले के सबसे बड़े सोमकमला आंबा बांध के चार गेट खोल दिए गए हैं। बांसवाड़ा के माही डेम के गेट खोलने के बाद बेणेश्वर धाम फिर से टापू बन गया है। जिले के 10 बांधों पर पानी की चादर चल रही है।

जिले में मंगलवार रातभर रुक-रुक कर हल्की और रिमझिम बरसात का दौर चलता रहा। बुधवार सुबह के समय आसमान में बादल छाए रहे और हल्की रिमझिम बारिश हुई। वहीं बरसात के चलते जिले के सबसे बड़े सोमकमला आंबा बांध के मंगलवार शाम के समय दो गेट खोले गए थे, लेकिन डेम में पानी की आवक बढ़ने की वजह से देर रात को 2 गेट और खोल दिए गए। डेम के अभी गेट संख्या 1, 2, 12 और 13 को आधा-आधा इंच खोला गया है।

चारों गेट से 15 हजार 940 क्यूसेक पानी की निकासी हो रही है। डेम में सोम कागदर देव सोमनाथ और गोमती नदी से 10 हजार 138 क्यूसेक पानी की आवक चल रही है। जिले के मारगिया अमरपुरा, वात्रक आकरसोल का नाका, भादर सहित 10 डेम पर पानी की चादर चल रही है।

सोमकमला बांध के साथ ही बांसवाड़ा के माही डेम के भी 4 गेट खुले होने से प्रसिद्ध आस्था के केंद्र बेणेश्वर धाम टापू बन गया है। साबला, वालाई और बांसवाड़ा के तीनों पुलिया पर 3 से 5 फीट तक पानी बह रहा है। इससे धाम टापू बन गया है। पुजारी सहित कुछ व्यापारी फंसे हुए हैं, हालांकि उनके खाने पीने और ठहरने के तमाम इंतजाम धाम पर हैं। वहीं पुलिस और प्रशासन की ओर से धाम पर आने-जाने वाले लोगों को अलर्ट किया जा रहा है। बाढ़ नियंत्रण कक्ष के अनुसार बुधवार सुबह 8 बजे तक सर्वाधिक बारिश आसपुर में 2 इंच रिकॉर्ड की गई है। डूंगरपुर में 4, देवल में 6, फलोज में 6, कनबा में 10, सागवाड़ा और ओबरी में 3, गलियाकोट में 4, चिखली में 8, गणेशपुर में 33, बनकोड़ा में 2, साबला में 2, निठाउवा में 15, गामडी अहाड़ा में 8 एमएम बारिश रिकॉर्ड की गई है।

हिण्डौन में सवा चार इंच बारिश दर्ज, बाजार जलमग्न हुये

हिण्डौनसिटी में तेज बरसात से कई जगह पानी भर गया।

हिण्डौन सिटी, (निसं)। हिण्डौन शहर सहित आसपास के क्षेत्र में दो सप्ताह से अधिक समय तक चले झमाझम बारिश के दौर से जलमग्न हुए बाजारों में रौनक लौटने लगी थी, तो वहीं बुधवार शाम अचानक फिर से झमाझम बारिश का दौर शुरू हुआ। करीब एक घंटे तक चली इस बारिश से बाजार फिर से जलमग्न हो गए।

जानकारी के अनुसार डेढ़ घंटे तक हुई झमाझम बारिश में लगभग सवा चार इंच बारिश दर्ज हुई। इधर शहर के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में भी भारी बारिश हुई, जिससे खेत लबालब हो गए। किसानों का कहना है कि गत एक महीने से चल रही इस बारिश के दौर से बाजरे की फसल पूरी तरह चौपट हो चुकी है। इस दौरान शहर के बाजारों में 4 से 5 फीट पानी भर गया। रास्ते ही नहीं सैकड़ों दुकानें भी लबालब हो गई और व्यापारियों को करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ। 17 दिन तक कटरा बाजार, कंबलवाल गली, शीतला चौराहा, डेंप रोड, सर्राफा बाजार आदि क्षेत्र में दुकानें पूरी तरह बंद रही।

जोधपुर में मूसलाधार बारिश, कई गाड़ियां पानी में बही

जोधपुर में मूसलाधार बारिश से कई गाड़ियां पानी में बहती नजर आई।

- भारी बारिश के कारण जोधपुर रेलवे स्टेशन पर पानी भरा, जीआरपी थाने में भी पानी घुस गया

जोधपुर, (कासं)। प्रदेशभर में दक्षिण-पश्चिमी मानसून फिर से सक्रिय होने के साथ जोधपुर में जमकर बारिश हो रही है। औसत से कई ज्यादा बारिश इस बार में मानसुन में हो चुकी है। अभी इसका प्रभाव सितंबर माह तक रहने के आसार है। मारवाड़ में भी इस बार मानसून काफी मेहरबान रहा है। लगातार बारिश से खेतों में पहले से भरा पानी सूखने का नाम नहीं ले रहा है। मारवाड़ के कई हिस्सों में मंगलवार की रात से ही बादल टूटकर बरस रहे है। बुधवार को जोधपुर शहर और ग्रामीण इलाकों में डेढ़ से दो घंटे तक जमकर बारिश हुई। इससे शहर की सड़कें तालाब और तलैया बन गई। सुबह के समय ड्यूटी पर जाने वाले लोग बारिश बंद होने का इंतजार करते रहे तो जो निकले वे बारिश के पानी में फंस गए।

जानकारी के अनुसार जोधपुर शहर के ड्रेनेज सिस्टम हर बार भारी बारिश में फेल हो जाता है, ऐसा ही आज भी हुआ। बनाड़ क्षेत्र के निवासी पहले से ही पानी में फंसे हुए और आज फिर जमकर हुई बारिश से वहां पर फिर पानी जमा हो गया है। शहर में आज शायद ही कोई ऐसा मार्ग बचा हो जहां पानी जमा ना हो। चहुंओर पानी ही पानी नजर आया। इस बार बाबा के दर्शनाथ आए हुए देशभर के हजारों जातरूओं को भी भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। हालांकि जगह जगह भण्डारे होने से उन्हें थोड़ी राहत मिल रही है।

जोधपुर शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में मंगलवार की रात्रि से हो रही कहीं-कहीं पर मूसलाधार बारिश के कारण जहां सड़कें तालाबों और बरसाती नालों का रूप ले चुकी है। शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में कच्ची और पक्की आवासीय बस्तियों में बरसाती पानी भर गया। सुबह सालोड़ी क्षेत्र में हो रही भारी बरसात के कारण नदी नाले उफान पर हैं। निकटवर्ती चामुण्डा गांव की एक छात्रा सुबह परीक्षा के लिए बोलेरो में सवार होकर निकली मगर बोलेरो पानी में फंस गई और बहने लगी। तब आसपास के ग्रामीणों ने तुरंत बचाव और राहत कार्य कर बोलेरो में सवार युवती और उसके दो परिजनों को तो बाहर निकाल दिया लेकिन बोलेरो बहकर चली गई। वहीं हर बार की तरह आज भी बनाड़ रोड़ पर बरसाती नाले के उफान पर आ जाने से गणेश होटल से लेकर बनाड़ तक का रास्ता दरिया बन गया। पुराने शहर में नवचौकिया से लेकर जालोरी गेट और आड़ा बाजार से लेकर मेड़ती गेट और नागौरी गेट, सूरसागर, चांदणा भाखर, हाऊसिंग बोर्ड, बासनी सांगरिया और लूणी तथा झंवर क्षेत्र में भी बारिश से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। कई लोगों की गाड़ियां पानी में बह गई तो कईयों की गाड़ियां पानी में फंसने से बंद हो गई।

इधर भारी बारिश के कारण जोधपुर रेलवे स्टेशन पर भी पानी भरने के साथ राइकाबाग-जैसमलेर मार्ग पर तो पटरियों के नीचे से गिट्टी और मिट्टी बह जाने के कारण रेल यातायात को रोकना पड़ा जबकि सड़क यातायात भी बुरी तरह से प्रवाहित हो रखा है।

मंडल रेल प्रबंधक पंकज कुमार सिंह ने बताया कि 4 ट्रेनें रद्द की गई है व दो को आंशिक रद्द किया गया है। भारी बारिश से रेलवे ट्रैक के नीचे से मिट्टी गिट्टी हटने से ट्रेनें प्रभावित हुई हैं।

रेलवे स्टेशन पर स्थित जीआरपी थाने में भी करीब एक से डेढ फुट तक पानी भर जाने के कारण वहां रखे कम्प्यूटर और अन्य सामान भी पानी से बचाने के लिए पुलिस कर्मी जतन करते देखे गए। वहीं शहर के महात्मा गांधी, मथुरादास माथुर अस्पताल और उम्मेद अस्पताल क्षेत्र में भी पानी भर गया।

राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल्स लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम) एसबीयू एण्ड पीसी- रॉक फॉस्फेट, झामरकोटड़ा, पी.ओ.- झामरकोटड़ा-313015, वाया एवं जिला- उदयपुर (राजस्थान), ई मेल :- krishanbihari.rsmml@rajasthan.gov.in

ई-निविदा सूचना दिनांक :- 03/09/2024

निविदा संख्या एवं दिनांक	कार्य का विवरण
Tender No. 12/24-25 दिनांक 31.08.2024 खोलने की दिनांक 25.09.2024 UBN No. MML2425SLOB00109	झामरकोटड़ा के लिए किराय पर एम्बुलेंस चालक सहित लेने हेतु अनुमानित राशि 15,00,000/– लाख, धरोहर राशि 30000/– निविदा प्रपत्र मूल्य 590/–, प्रोसेसिंग फीस 1000/– रू.

विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.rsmm.com, www.sppp.rajasthan.gov.in अथवा (डीसीएमओ झामरकोटड़ा डिस्पेंसरी) से उपरोक्त पतें पर सम्पर्क करें।
राज.संवाद/सी/24/4708 उप महाप्रबन्धक (का.एवं प्रशा.)

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड निवाई
क्रमांकः 1822-1831 दिनांकः 30.08.2024
अल्पकालीन निविदा सूचना संख्याः 01/2024-25 खण्ड निवाई
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से खण्ड निवाई में सडक/भवन निर्माण हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों तथा केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के "ए" एवं "एए", "बी", "सी", "डी" श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण बेवसाईट साईट www.dipronline.org व www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
NIB Code No.:-PWD2425A1359
UBN- 1. PWD2425WSOB04855, 2. PWD2425WSOB04857
3. PWD2425WSOB04858, 4. PWD2425WSOB04850
अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड निवाई
DIPR/C/8139/2024

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर
क्रमांक निदे/अ.ख.अ.नीलामी / निलामी (ERCC XIII)/2024/ई-07947
ई-नीलामी विज्ञिप्त संख्या-ERCC (XIII)2024)
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली, 2017 के नियम-36 व 37 के तहत विभाग द्वारा इस विज्ञिप्त से अप्रधान खनिजों के प्रभावशील खनन पट्टों/क्वारी लाईसेसों व परमिट क्षेत्रों से निर्गमित होने वाले खनिजों पर अधिशुल्क / अधिक अधिशुल्क, परमिट शुल्क, प्रिमीयम शुल्क, डी.एम.एफ.टी. आर.एस.एम.ई.टी. एवं अन्य शुल्क संग्रहण के कुल 20 ठेके खुली ई-नीलामी के माध्यम से दिये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर इच्छुक बोलीदाताओं से बोली आमंत्रित की जाती है। ठेकों से संबंधित विस्तृत विवरण जैसे-ठेका क्षेत्र, खनिज, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण व ई-ऑक्शन की प्रक्रिया एवं मुख्य शर्ते विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthan.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी MSTC की वेबसाइट www.mstcecommerce.com पर उपलब्ध है।
(भगवती प्रसाद) IAS निदेशक
DIPR/C/8198/2024

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, खण्ड फालना
E mail- eephedfalna@yahoo.com,ph-02938-233684
ई-निविदा सूचना 77/2024-25
राजस्थान के सरकार के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग एवं अन्य मान्यता प्राप्त ठेकेदारों से मोहरबन्द निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा दिनांक 25.09.2024 को मध्यान्ह पश्चात 2.00 बजे तक ऑनलाईन बेची जाकर उसी दिनांक को मध्यान्ह पश चात 2.00 बजे तक ऑनलाईन प्राप्त की जाकर उसी दिनांक को दोपहर 03:30 बजे तक उपस्थित ठेकेदारों या उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष ऑनलाईन खोली जाने की कार्यवाही की जायेगी। धरोहर राशि फालना में देय किसी भी बैंक के Demand Draft ई-ग्रास चालान के रूप में स्वीकार्य होगी। उक्त निविदा की नियम व शर्त http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।
शर्त-1. निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निम्न हस्ताक्षरकर्ता के पास होगा।
2 निविदा बेचने एवं प्राप्ति के दिन यदि राजकीय अवकाश होगा तो निविदा दूसरे दिन बेची व प्राप्त की जायेगी।

NIT NO.	UBN NO.
77	PHE2425WSOB04200

(महेन्द्र सिंह राठौड) अधिशाषी अभियन्ता जन.स्वा.अभि.विभाग,खण्ड फालना
DIPR/C/8083/2024

उदयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान
No. :- F-2(01)Acct/Contract/2024-25/99 - 101 Date : 03/09/2024
ई-निविदा सूचना संख्या : 27/2024-25
उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यो मय डिफेक्ट लाईबिलिटी अवधि के लिये जो कि निविदा प्रपत्र में अंकित है के लिये उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :-

निविदा कार्यो की कुल लागत	:	रूपये 430.70 लाख (02 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड / अपलोड करने की अवधि	:	05.09.2024 को प्रातः 10.00 बजे से 24.09.2024 को सांयः 6.00 बजे तक
Online EMD, Tender Fee & Processing Fee जमा कराने की तिथी	:	05.09.2024 को प्रातः 10.00 बजे से 24.09.2024 को सांयः 6.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथी	:	25.09.2024 को प्रातः 11.00 बजे

विस्तृत विवरण वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitudaipur, www.eproc.rajasthan.gov.in व www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
UBN No. : ITU2425WSOB00234, ITU2425WSOB00235
अधिशाषी अभियन्ता - प्रथम उदयपुर विकास प्राधिकरण
राज.संवाद/सी/24/4702

The Rajasthan Small Industries Corporation Ltd.
(A Government of Rajasthan Undertaking) Udyog Bhawan, Tilak Marg, C-Scheme, Jaipur-302 005
Phone: 0141-2227079, Fax: 0141-2227257 Website : industries.rajasthan.gov.in/rsicl
E-mail : rajsico@rajasthan.gov.in CIN- U91110RJ1961SGC001118
ई-निविदा सूचना 12/2024-25
Corrigendum
निगम द्वारा ई-पोर्टल पर राजस्थली दिल्ली, कोलकाता एवं उदयपुर के QST काउन्टरों हेतु ई-निविदा क्रमांक 12/2024-25 दिनांक 13.08.2024 प्रकाशित की गई थी। इस क्रम में समाचार पत्रों में जारी निविदा सूचना में किन्ही कारणवश राजस्थली दिल्ली के राजस्थानी पेटिंग काउन्टर का नाम प्रकाशन होने से रह गया। अतः समस्त को सूचित करते हुए पूर्व में प्रकाशित निविदा सूचना एवं निविदा सूचनाओं में आंशिक संशोधन करते हुए केवल पेटिग काउन्टर UBN RSI2425SLOB00025 की निविदा प्राप्त करने की तिथि 10.09.2024 अपरान्ह 1.00 बजे तक बढाई जाती हैं जो उसी दिन अपरान्ह 3.00 बजे खोली जावेगी। इसके नमूनों की जांच दिनांक 09.09.2024 के स्थान पर दिनांक 12.09.2024 को की जावेगी। अन्य शर्ते पूर्वानुसार रखी जावेंगी।
पूर्ण जानकारी हेतु वैबसाइट eproc.rajasthan.gov.in; sppp.rajasthan.gov.in एवं industries.rajasthan.gov.in/rsicl देखे।
राज.संवाद/सी/24/4739 प्रबन्ध निदेशक

जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
कॉरपोरेट आइडेन्टीफिकेशन नम्बर (सीन)-यू40109आरजे2000एसजीसी016483
पंजीकृत कार्यालय : न्यू पॉवर हाउस,जोधपुर-342003, फोन न. :0291-2742264 फैक्स न. : 0291-2742064
ईमेल :- seciviljdvvnl@gmail.com, वेबसाईट :- http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl
ई-निविदा सख्या 07/2024-25
केन्द्र/राज्य सरकार के विभागों में 'ए' व 'एए' श्रेणी तथा जो.वि.वि.नि.लि. के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत, अनुभवी, वस्तु एवं सेवाकर (GST) विभाग से पंजीकृत निविदाकारों से अधिशाषी अभियन्ता {सिविल} जोधपुर डिस्कॉम, जोधपुर; 9413359193/बाड़मेर; 9413359455 के अधीन विभिन्न सिविल निर्माण कार्यो के लिए ई-प्रोक्यरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। कार्य का विवरण, अनुमानित लागत, निविदा शुल्क, प्रकिया शुल्क, अमानत राशि, निविदा खोलने की तिथि व सामान्य अनुबन्ध की शर्ते आदि समस्त विवरण, वेबसाईट http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl एवं http://sppp.raj.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। भविष्य में संशोधन/अवधि विस्तार, यदि कोई हो तो, उसकी सूचना http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl एवं http://sppp.raj.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर प्रकाशित की जावेगी।
UBN No. : JVV2425WSOB00539, JVV2425WSOB00538, JVV2425WSOB00541, JVV2425WSOB00542, JVV2425WSOB00537, JVV2425WSOB00540
अधीक्षण अभियंता {सिविल} जोधपुर डिस्कॉम, जोधपुर
राज.संवाद/सी/24/4737
बिजली संबंधी शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6045

कार्यालय अधीक्षण अभियंता,
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, वृत-जालोर
Tel: 02973-223548, Email:secircle.jal.phed@rajasthan.gov.in/ sephedjalore@yahoo.com
क्रमांकः- वृत/जालोर / निविदा/ / 2024-25/1543 दिनांकः-29/08/2024
बिड आमंत्रण सूचना (NIB) संख्या 21-23/2024-25
राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु लोक निर्माण और वित्तीय नियम के पार्ट-4 नियम 334 (ए) (iii) के तहत रू. 150.00 लाख तक की निविदाओं हेतु केवल जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत एवं इससे अधिक लागत की निविदाओं हेतु जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं हेतु नियमानुसार छूट के साथ एवं केन्द्र / राज्य सरकार के अधिकृत विभागों / संगठनों, केन्द्रिय लोक निर्माण विभाग, रेल, डाक, दूर संचार विभागों मे उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से पूर्ण धरोहर राशि के साथ ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया द्वारा निम्न ऑनलाईन बिड आमंत्रित की जाती है:-

बिड संख्या	NIB No.PHE2425A1922	अनुमानित लागत (लाखों में)	धरोहर राशि 2 प्रतिशत	बिड शुल्क (रूपये)	ई-प्रक्रिया शुल्क	कार्य पूर्ण करने की अवधि
21/ 2024-25	UBIN No.......................... PHE2425WSRC04208	120.00	240000/-	3000/-	2000/-	12 माह
22/ 2024-25	PHE2425WSRC04209	120.00	240000/-	3000/-	2000/-	12 माह
23/ 2024-25	PHE2425WSRC04211	120.00	240000/-	3000/-	2000/-	12 माह

ऑनलाईन बिड उपलब्ध होने की तिथि	02.09.2024
ऑनलाईन बिड डाउनलोड/अपलोड करने की अन्तिम तिथि	16.09.2024 को 6.00 पी.एम.
ऑनलाईन बिड खोलने की तिथि	17.09.2024 को 2.00 पी.एम.

बिड से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट www.dipronline.org, sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
(रमेश चन्द मीना) अधीक्षण अभियंता जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, वृत्त-जालोर
DIPR/C/8104/2024

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर
Annual Rate Contract for Supply of Indigenous items की आपूर्ती हेतु दर संविदा
(ई -बोली आंमत्रण सूचना संख्या 01/2024-25 (क्रमांक 127 दिनांक 02.09.2024))
इस विश्वविद्यालय के अधीनस्थ ईकाइयों में Annual Rate Contract for Supply of Indigenous items की आपूर्ती हेतु दो कवर बिड (तकनीकी व वित्तीय बिड) से ऑनलाइन ई-बोली आमंत्रित की जाती है, जिसमें पंजीकृत फर्मो हेतु डी.एस.सी. के माध्यम से दिनांक 03.09.2024 से 23.09.2024 को सांय 5.00 बजे तक बोली प्रपत्र डाउनलोड कर अपलोड कर सकते है। UBN VAU2425GSRC00065 का विस्तृत विवरण स्टेट पोर्टल की वेबसाईट htttp//sppp.raj.nic.in विभाग की वेबसाईट www.rajuvas.org एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।
राज.संवाद/सी/24/4714 वित्त नियंत्रक

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, नगर वृत (उत्तर), पानीपेच, जयपुर
क्रमांकः-अअ/नवृ (30)/2024-25/3076-3095 दिनांकः- 02.09.2024
निविदा सूचना
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पंजीकृत संवेदको जो राजस्थान सरकार के नियमानुसार अधिकृत हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया द्वारा ऑनलाइन निविदाऐं आमन्त्रित की जाती है। इच्छुक संवेदक ई-निविदा में भाग लेने हेतु अपने डिजिटल हस्ताक्षर (डीएससी) http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। निविदा संबंधित विवरण निम्नलिखित वैबसाईट पर देख सकते है।
1. http://www.eproc.rajasthan.gov.in (Online) (2) http://sppp.rajasthan.gov.in

S.No.	NIT Number	UBN Code
1.	01/2024-25	PHE 2425 WSOB04266

(भवानी सिंह शेखावत) अधीक्षण अभियंता जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग नगर वृत (उ.), जयपुर
DIPR/C/8196/2024

कार्यालय नगरपालिका नसीराबाद, जिला अजमेर (राज.)
E-mail : nasirabadnagarpalika@gmail.com PH. NO. 01491-297191
क्रमांक : न.पा.न./निर्माण/2024-25/1532 दिनांक : 02.09.2024
ई-निविदा सूचना संख्या (07/2024-25)
(NIB NUMBER - DLB2425A2238)
एतद्द्वारा यह है कि राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यो के लिए राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में मोहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध हैं एवं किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय में आकर देखी जा सकती है।
निविदा के कुल कार्य – 08 (आठ)
UBN NO. :– 1. DLB2425WSRC07235, 2. DLB2425WSRC07236, 3. DLB2425WSRC07237, 4. DLB2425WSRC07239, 5. DLB2425WSRC07240, 6. DLB2425WSRC07241, 7. DLB2425WSRC07242, 8. DLB2425WSRC07244
राज.संवाद/सी/24/4681 अधिशाषी अधिकारी

वृक्षारोपण केवल फोटो के लिये नहीं करें : निंबाराम

'आज रोपा हुआ वृक्ष जीवित रहे यह संकल्प होना चाहिए'

- अमृता देवी प्रकृति संवर्धन अभियान के तहत सघन वृक्षारोपण
- सैकड़ों मातृशक्ति ने किया प्रतापनगर मे एक दिन में 1000 वृक्षों का रोपण

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक निंबाराम ने कहा कि हम वृक्षारोपण केवल फोटो के लिए नहीं करे। आज रोपा हुआ वृक्ष जीवित रहे इतनी चिंता और संकल्प हमारा होना चाहिए। मातृशक्ति अपने घरों के आगे अपने नाम से न्यूनतम एक वृक्ष लगाकर उसको पालने और हर साल उसका जन्मदिन मनाने का आज संकल्प ले। निंबाराम बुधवार को अमृता देवी प्रकृति संवर्धन अभियान के अंतर्गत प्रताप नगर सेक्टर 7 स्थित प्रज्ञासागर उद्यान में मातृशक्ति द्वारा आयोजित सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। निम्बाराम ने कहा कि देश हमें सब कुछ देता है हम भी देश को देना सीखे। हम केवल लेते रहे और देने की दिशा में कोई प्रयास नहीं हो तो यह कितने दिन चलेगा? एक दिन प्रलय को आना ही है। वायनाड इसका प्रत्यक्ष ताजा उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि पर्यावरण को लेकर पूरे देश दुनिया में बड़ी चिंता है। पिछले 20 सालों में वनो को काटकर उन्हें कम किया गया जो निश्चित ही परेशान करने वाला विषय है। वृक्षारोपण कर इस परिदृश्य को बदलना होगा जिसमे हम सब की सक्रिय भूमिका चाहिए, विशेषकर उपस्थित मातृशक्ति की अहम है। वैसे भी आज अमृता देवी पर्यावरण का प्रतीक है। पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन की दिशा मे काम करनेवाले लोगो के लिए आज अमृता देवी प्रेरणास्त्रोत है। ऐसे ही उपस्थित मातृशक्ति अपने अपने क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण कर इस कार्य को आगे बढ़ने का कार्य बेहतर तरीके से कर सकती है और देश मे कई स्थानो पर ऐसा कर भी रही है। यहा भी मातृशक्ति को ऐसा करने की निश्चित ही आवश्यकता है। इस अवसर पर उन्होने वृक्षों व पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वृक्षो की रक्षा हेतु अमृता देवी सहित 363 मातृशक्तियो के बलिदान को याद किया। साथ ही तुलसी-पीपल इत्यादि पौधों का वैज्ञानिक महत्व पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता सुमन शेखावत रही। उन्होने भी पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन की दिशा में मातृशक्ति की अहम भूमिका पर अपनी सक्रिय जिम्मेदारी निभाने की बात कही।

मंचीय कार्यक्रम के बाद क्षेत्रीय प्रचारक निंबाराम द्वारा वृक्षारोपण कर वृक्षारोपण कार्य की शुरूआत की। इसके बाद उपस्थित सैकडों महिलाओं ने एक ही दिन मे 1000 वृक्षो का रोपण कर उनके पालन-पोषण का संकल्प लिया।

कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि विवेकानंद आश्रम के स्वामी एस.पी. आचार्य ने अंग्रेजी शब्द की व्याख्या करते हुए उसके पीछे छुपे संदेश को सबके सामने रखा। उन्होने कहा कि मानव को शब्द, क्रिया, विचार, चरित्र और स्वास्थ्य पर सतत वॉच रखना चाहिए। ऐसा करेगे तो हम सच्चे मानव बन सकेगे। उन्होंने यह भी कहा कि जो आप चाहते हैं उसे देना शुरू करिए। आप दुख चाहते हैं तो लोगो को दुख देना शुरू करिए और आप सुख चाहते हैं तो सुख देना शुरू करिए। जैसा आप देंगे वैसा ही आपको ईश्वर देगा।

2 साल के बच्चे की कस्टडी विधवा मां को देने के आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने 2 साल के बच्चे की कस्टडी के संबंध में दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए उसकी कस्टडी दादा-दादी से लेकर विधवा मां को सौंपने के आदेश दिए हैं। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यह आदेश मां की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने माना कि नाबालिग संतान की मां उसकी सबसे पहले स्वाभाविक अभिभावक होती है। याचिकाकर्ता शिक्षित और आर्थिक रूप से सुदृढ़ है, जबकि दादा सिर्फ आठवीं पास है। वही उसके पास आय का नियमित स्त्रोत भी नहीं है। ऐसे में याचिकाकर्ता बच्चे का अच्छी तरह ख्याल रख सकती है। याचिका में कहा गया कि उसके पति की बीते दिनों कार दुर्घटना में मौत हो गई। इसके बाद याचिकाकर्ता को स्कूल व्याख्याता पद पर नियुक्ति मिली। ऐसे में वह अपने दो साल के बेटे को दादा-दादी के पास छोड़कर कार्य ग्रहण करने चली गई। वहीं बाद में उसे बच्चे की कस्टडी नहीं सौंपी गई।

महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के लिए अंतिम वरीयता सूची जारी

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने बुधवार को महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के 3671 पदों पर अंतिम वरीयता सूची के लिये मंजूरी दी।

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर की पहल पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में भर्तियों के काम को मिशन मोड में अंजाम दिया जा रहा है। इसी कड़ी में चिकित्सा मंत्री की मंजूरी के बाद बुधवार को महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के 3671 पदों पर अंतिम वरीयता सूची जारी की गई। इन महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का जल्द पदस्थापन होने से गांव-ढाणी तक स्वास्थ्य सेवाओं को और मजबूती मिलेगी।

अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने बताया कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (शीफू) के माध्यम से 20 हजार से अधिक विभिन्न पदों पर भर्ती की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। इसी क्रम में महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के 4847 पदों में से 3671 पदों के लिए अंतिम वरीयता सूची को चिकित्सा मंत्री ने मंजूरी दी है। उन्होंने बताया कि इस भर्ती को पूरा करने के लिए शीफू द्वारा अंतरिम वरीयता सूची पर प्राप्त परिवेदनाओं का निस्तारण किया गया एवं अन्य राज्यों से व्यावसायिक योग्यता अर्जित करने वाले चयनित अभ्यर्थियों की अंकतालिकाओं का विभिन्न राज्यों में टीमें भेजकर सत्यापन करवाया गया। इसी प्रकार अभ्यर्थियों के अनुभव प्रमाण पत्रों का पुनर्सत्यापन, आर.एन.सी. पंजीयन का प्रमाणन आदि प्रक्रियाओं को अपनाते हुए 3671 पदों हेतु यह अंतिम वरीयता सूची जारी की गई।

राज्यपाल ने सहकारी चुनाव सहित कई मुद्दों पर चर्चा की

ऑल इंडिया कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, ऑल राजस्थान कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज यूनियन के प्रांतीय महासचिव , सहकारी साख समितिया एम्प्लाईज यूनियन के प्रांतीय अध्यक्ष प्रदेश के सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा ने आज राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े से शिष्ट मंडल के साथ राजभवन में मुलाक़ात की।

विशेष लेखा परीक्षक निलंबित

जयपुर। सहकारी विभाग ने शिवकुमार पेडीवाल (सहायक रजिस्ट्रार), विशेष लेखा परीक्षक, सहकारी समितियॉ, हनुमागढ़ को निलंबित किया गया है। उनके विरूद्ध राज्य सरकार की ओर से विभागीय जांच प्रक्रियाधीन है।

शुभकामनाएं दीं

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे, विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षक एवं विचारक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का स्मरण किया।

केन्द्र सरकार की विशेष वित्तीय सहायता योजना में प्रदेश को मिले अधिकतम लाभ : भजनलाल शर्मा

- 'समय-सीमा का ध्यान रखते हुए योजना में निधि का उपयोग सुनिश्चित हो'

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि केन्द्र सरकार की विशेष वित्तीय सहायता योजना से होने वाले कार्यों को तय समय-सीमा के भीतर पूर्ण किया जाए, ताकि प्रदेश में बुनियादी ढांचे को सुदृढ करने के लिए इस योजना का अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में केन्द्र सरकार की पूंजीगत निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता योजना के संबंध में आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि योजना के तहत प्राप्त होने वाली निधि का उपयोग 31 मार्च, 2025 तक ही किया जा सकता है। ऐसे में समय-सीमा का ध्यान रखते हुए इस राशि का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि इस योजना के अंतर्गत पीएचडी, जल संसाधन विभाग की परियोजनाओं, पुलिस कार्मिकों के लिए आवास और यूनिटी मॉल के निर्माण के लिए पहली किस्त के रूप में प्राप्त राशि का शीघ्र उपयोग सुनिश्चित किया जाए, ताकि दूसरी किस्त जल्द से जल्द जारी हो सके। उन्होंने आइकॉनिक टूरिस्ट सेंटर के चिन्हीकरण, पुराने वाहनों की स्क्रैपिंग, औद्योगिक विकास के लिए अपेक्षित नीतिगत सुधारों सहित अन्य बिंदुओं पर समीक्षा की। साथ ही, राज्य के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में भू-सुधार, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से संबंधित बिंदुओं के लिए निर्धारित माइलस्टोन की पूर्ति करते हुए रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए।

बैठक में मुख्य सचिव सुधांश पंत, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल एवं प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

फर्जी दस्तावेज से जेडीए पट्टा लेकर बेचने करने वाली गैंग गिरफ्तार

जयपुर। रामनगरिया थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फर्जी दस्तावेजों के आधार पर जेडीए पट्टा प्राप्त कर भूखंड बेचने गिरोह के दो शातिर बदमाश अजय पारीक निवासी जगतपुरा जयपुर और अनूप चौधरी उर्फ गुड्डू निवासी रामनगरिया जयपुर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित मामला दर्ज होने के बाद से ही पुलिस से बचने के लिए राजस्थान के बाहर फरारी काट रहे थे। इन लोगों के पास खर्चे के रुपये खत्म हो जाने पर अपने परिचितों से रुपये लेने के लिए जयपुर आए तो पुलिस को सुराग मिलते ही पकड लिया। पुलिस जानकारी में सामने आया है कि फर्जी दस्तावेज बना कर जेडीए पट्टा जारी करवाने में कई लोगों के नाम सामने आए है।

सुकन्या खाते खोलने के लिए जयपुर में विशेष अभियान

जयपुर, (का.सं.)। सुकन्या समृद्धि खाता योजना के नौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय डाक विभाग जयपुर नगर मण्डल की ओर से वित्तीय वर्ष 2024-25 की अवधि को "सुकन्या समृद्धि महोत्सव" वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

जयपुर नगर मण्डल के प्रवर अधीक्षक मोहन सिंह मीणा ने बताया कि बालिकाओं को आर्थिक संबल प्रदान करने के उद्देश्य से हमने जयपुर शहर के सभी डाकघरों में सुकन्या समृद्धि खाता खोलने का विशेष अभियान 1 सितंबर से 30 सितंबर के मध्य चला रखा है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत जयपुर शहर में अब तक 90 हजार से ज्यादा खाते हमने खोले हैं।

उन्होंने बताया कि हमने 10 वर्ष तक की प्रत्येक बालिका का सुकन्या खाता खोलने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसमें विभागीय कर्मचारियों, पोस्टमैन साथियों द्वारा प्रत्येक घर, विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों में संपर्क किया जा रहा है।

परिवहन निरीक्षक के जयपुर और सिरोही में 6 ठिकानों पर ए.सी.बी. की छापेमारी

-कार्यालय संवाददाता-

- आरोपी के आवास की तलाशी के दौरान एसीबी को मालपुरा टोंक में 5 बीघा जमीन, अंबाबाड़ी शॉपिंग सेंटर में 5 मंजिला कॉम्पलेक्स, 30 किसान विकास पत्र, एफडीआर, 5.50 लाख के गहने, एक बैंक लॉकर व 9 बैंक खाते मिले हैं।
- ए.सी.बी ने परिवहन निरीक्षक सुरेन्द्र सिंह चौहान के खिलाफ आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने का मामला दर्ज कर लिया है, अब कार्रवाई जारी है।

जयपुर। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (ए.सी.बी.) की विभिन्न टीमों ने जयपुर में कार्यवाही करते हुये सिरोही जिला परिवहन में कार्यरत मोटर वाहन निरीक्षक सुरेन्द्र सिंह चौहान के विरूद्ध दर्ज आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने का मामला दर्ज किया। ए.सी.बी. ने आरोपी के जयपुर और सिरोही स्थित 6 ठिकानों पर छापेमारी कर तलाशी अभियान चलाया।

एसीबी महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि एसीबी मुख्यालय को गोपनीय शिकायत प्राप्त हुई थी कि सुरेन्द्र सिंह चौहान, मोटर वाहन निरीक्षक, जिला परिवहन कार्यालय, सिरोही द्वारा अपने एवं अपने परिजनों के नाम से भ्रष्टाचार के साधनों द्वारा अपनी वैध आय से अधिक सम्पत्तियाँ अर्जित की गई है, जिनकी बाजार कीमत करोड़ों रुपयों से अधिक है।

इस शिकायत का ए.सी.बी. की इन्टेजिलेन्स शाखा द्वारा शिकायत का गोपनीय सत्यापन किया जाकर आय से अधिक सम्पत्तियां अर्जित का मामला बनना पाये जाने पर प्रकरण दर्ज किया गया। एसीबी जयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस रणधीर सिंह के सुपरवीजन में ए.सी.बी. की विशेष अनुसंधान विंग (एस.आई.डब्ल्यू.) इकाई, जयपुर के उप अधीक्षक पुलिस सुरेन्द्र पंचौली, अनुसंधान अधिकारी के नेतृत्व में सक्षम न्यायालय से तलाशी वारंट प्राप्त करके बुधवार अलसुबह आरोपी के जयपुर और सिरोही स्थित 6 विभिन्न ठिकानों पर तलाशी की कार्रवाई की गई।

आरोपी सुरेन्द्र सिंह चौहान के जयपुर स्थित आवास की तलाशी में 5 आवासीय-व्यावसायिक भूखण्डों के दस्तावेज (जिनमें मालपुरा टोंक में करीब 48 लाख रुपये कीमत की 8 बीघा कृषि भूमि, अम्बाबाड़ी शॉपिंग सेंटर में पाँच मंजिला व्यावसायिक परिसर प्रमुख हैं), करीब 6 लाख रुपये मूल्य के 30 किसान विकास पत्र, एफडीआर, लगभग 5.50 लाख रुपये कीमत के सोने चांदी के आभूषण एवं वाहन मिले हैं। इसके अतिरिक्त 1 बैंक लॉकर एवं 9 बैंक खाते तथा विदेश यात्राओं से संबंधित दस्तावेजात भी मिले हैं।

एसीबी के प्राथमिक आंकलन, प्रथम सूचना रिपोर्ट और अब तक मिले दस्तावेजों के अनुसार आरोपी सुरेन्द्र सिंह चौहान द्वारा करोड़ों रुपये की बाजार कीमत की अनेक परिसम्पत्तियां अर्जित करने का अनुमान है, जो उनकी वैध आय से आनुपातिक रूप से कहीं अधिक है। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव के निर्देशन में ए.सी.बी. की विभिन्न टीमों द्वारा आरोपी के ठिकानों पर तलाशी अभियान जारी है। मामले में ए.सी.बी द्वारा आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने के प्रकरण में अग्रिम अनुसंधान किया जावेगा।

मोतीडूंगरी गणेश मंदिर में सजाई मोदकों की भव्य झांकी

मोतीडूंगरी गणेश मंदिर में मनाए जा रहे गणेश जन्मोत्सव में बुधवार को मोदकों की भव्य झांकी सजाई गई। झांकी का मुख्य आकर्षण 251-251 किलोग्राम के दो विशाल मोदक रहे।

जयपुर। मोतीडूंगरी गणेश मंदिर में मनाए जा रहे गणेश जन्मोत्सव के अंतर्गत बुधवार को महंत कैलाश शर्मा के सान्निध्य में मोदकों की भव्य झांकी सजाई गई। झांकी का मुख्य आकर्षण 251-251 किलोग्राम के दो विशाल मोदक रहे। इन दोनों के अलावा 51-51 किलोग्राम के 5 मोदक, 21-21 किलोग्राम के 21 मोदक, 1.25-1.25 किलोग्राम के 1100 मोदक प्रथम पूज्य के दोनों ओर थाल में जमाकर रखे थे। हजारों की संख्या में अन्य छोटे मोदक रखे हुए थे। 2500 किलोग्राम घी, 3 हजार किलोग्राम बेसन, 9 हजार किलोग्राम शक्कर और करीब 100 किलोग्राम सूखे मेवों से तैयार मोदकों की खुशबू मंदिर के बाहर तक आ रही थी। बड़े मोदकों को विशेष पद्धित से तैयार किया गया। मोदकों की पीली आभा से मंदिर स्वर्णिम रंग से निखर उठा। मोदक झांकी के दर्शन सुबह 5 बजे से शुरू हो गए। शयन झांकी तक एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने विशेष झांकी के दर्शन किए। श्रद्धालुओं ने भी भक्तिभाव से मोदक का भोग लगाया। शाम को मोदक प्रसाद का निशुल्क भक्तों को वितरित किया गया। गणेशोत्सव की सुचारू दर्शन व्यवस्था के लिए बैरिकेटिंग लगाने का कार्य बुधवार को अंतिम चरण में चलता रहा। जेएलएन मार्ग से मंदिर तक बेरिकेटिंग लगाई गई है। वहीं चांदपोल गेट स्थित परकोटा गणेश मंदिर में चार दिवसीय गणेश चतुर्थी उत्सव का शुभारंभ बुधवार को गणेश जी महाराज की विशेष पूजा-अर्चना के साथ हुआ। जयकारों के साथ मंदिर शिखर पर नई ध्वजा फहराई गई। भगवान गणपति की फूल बंगला झांकी सजाकर 21000 लड्डुओं का भोग लगाया गया।

- गणेश चतुर्थी पर मंदिर में दर्शनों के लिए बैरिकेटिंग लगाने का कार्य अंतिम चरण में

कनक घाटी मंदिर में भी धूमधाम से मनाया जायेगा गणेश चतुर्थी उत्सव

जयपुर। ठिकाना मंदिर श्री गोविंद के मातहत आमेर रोड कनक घाटी स्थित मंदिर श्री गणेश जी महाराज में गणेश चतुर्थी महोत्सव सात सितंबर को धूमधाम से मनाया जाएगा। गोविंद देवजी मंदिर के सेवाधिकारी मानस गोस्वामी ने बताया कि मंदिर सुबह पांच से रात्रि नौ बजे तक दर्शनों के लिए खुला रहेगा।

अवैध निर्माण चिन्हित करके कार्रवाई करें उपायुक्त : सुराणा

जयपुर (कासं)। नगर निगम हैरिटेज आयुक्त अभिषेक सुराणा ने बुधवार को अवैध निर्माण को लेकर सभी जोन अधिकारियों को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए है।

आयुक्त सुराणा के निर्देश के बाद बुधवार को हैरिटेज निगम के सभी जोन उपायुक्त, जोन अधिकारी, लैंड शाखा अधिकारी और सतर्कता शाखा के साथ बैठक की। बैठक में आयुक्त सुराणा ने

- प्रत्येक बुधवार को सभी जोन में अवैध निर्माणों पर की गई कार्रवाई के बारे में ली जायेगी जानकारी
- बारिश से जर्जर हुए मकानों को भी ध्वस्त करने के निर्देश

हैरिटेज निगम क्षेत्र में अवैध निर्माण को चिन्हित कर नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने बताया कि सभी जोन में अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई के संबंध में प्रत्येक बुधवार को रिपोर्ट ली जाएगी। वहीं मुख्यालय से रोजाना अवैध निर्माण पर कार्रवाई का निरीक्षण किया जाएगा। उन्होंने बारिश से जर्जर हुए मकानों को भी ध्वस्त करने के निर्देश दिए है।

दुपहिया वाहन चुराने वाला गिरफ्तार

जयपुर। दुपहिया वाहन चुराने वाले एक शातिर वाहन चोर मोहम्मद ऐजाज निवासी जवाहर नगर जयपुर को बजाज नगर थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि गिरफ्तार आरोपित ने दुपहिया वाहन बुलेट चोरी कर अपने दोस्त सलमान को दे दी। जहां ट्रांसपोर्ट नगर थाना पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ के मामले में सलमान को गिरफ्तार कर उसके पास बुलेट जब्त की है।

मुहाना थाने का कांस्टेबल पांच हजार रु. रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर ए.सी.बी. की जयपुर नगर-चतुर्थ इकाई ने बुधवार देर रात कार्यवाही करते हुये मुहाना थाने के कांस्टेबल वी.पी. सिंह को परिवादी से 5 हजार रुपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

एसीबी महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि ए.सी. बी. की जयपुर नगर चतुर्थ इकाई को परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि उसके विरूद्ध दर्ज परिवाद में समझौता कराने एवं उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करने की एवज में आरोपी वीपी सिंह कानिस्टेबल, पुलिस थाना मुहाना, जयपुर आयुक्तालय द्वारा 5 हजार रुपये रिश्वत की मांग कर परेशान किया जा रहा है। जिस पर एसीबी जयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस डॉ. रवि के सुपरवीजन में एसीबी की जयपुर नगर-चतुर्थ इकाई के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बलराम मीणा के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया जाकर बुधवार को पुलिस निरीक्षक रजनी मीणा और उनकी टीम ने ट्रेप की कार्रवाई करते हुए आरोपी कांस्टेबल को 5 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के निर्देशन में आरोपी से पूछताछ तथा कार्यवाही जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा।

कांस्टेबल वी.पी. सिंह

नाहरगढ़ की पहाड़ियों में लापता राहुल का 4 दिन बाद भी सुराग नहीं

- डी.सी.पी. नॉर्थ राशि डोगरा डूडी के नेतृत्व में एसआईटी करेगी इस मामले की विस्तृत जांच

जयपुर । राजधानी जयपुर के शास्त्री नगर क्षेत्र से नाहरगढ़ घूमने गए दो सगे भाईयों में आशीष का शव पुलिस को मिल चुका है, जबकि दूसरे युवक राहुल का 4 दिन बाद भी अब तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। पुलिस और एस.डी.आर.एफ. की टीमें लगातार युवक को तलाश रही है।

ऐसे में अब एडिशनल पुलिस कमिश्नर कैलाश विश्नोई ने इस प्रकरण की जांच के लिए एस.आई.टी. का गठन किया है।

डी.सी.पी. नॉर्थ राशि डोगरा डूडी के नेतृत्व में एस.आई.टी. इस मामले की जांच करेगी।

जयकारों के साथ नगर परिक्रमा

जयपुर । छोटी चौपड़ स्थित सीताराम मंदिर से बुधवार सुबह जयकारों के साथ सीताराम जी की 264 वीं नगर परिक्रमा शुरू निकाली गई। पंचरंगी ध्वज के नीचे सैंकड़ों पदयात्री सीताराम जी महाराज के जयकारों के साथ चारदीवारी के विभिन्न मंदिरों के दर्शनों के लिए रवाना हुए। मंदिर महंत नंदकिशोर शर्मा ने चन्द्रमोहन बटवाडा से ध्वज पूजन करवाया। परिक्रमा में करीब 250 श्रद्धालु शामिल हुए। लोगों ने श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा की।

सार-समाचार

पांच दिवसीय गणपति महोत्सव 7 से

राजसमन्द, ०(निसं)। गणेश चतुर्थी के अवसर पर नगर परिषद राजसमंद की ओर से प्रतिवर्ष अरविंद स्टेडियम राजनगर में आयोजित किए जाने वाले पांच दिवसीय गणपति महोत्सव का शुभारंभ इस बार 7 सितंबर को होगा। नगर परिषद सभापति अशोक टांक ने बताया कि महोत्सव का शुभारंभ पहले दिन 7 सितंबर को गाजे-बाजे व धूमधाम से शोभायात्रा के साथ परिषद के गणपति महोत्सव एवं राजनगर में विभिन्न स्थानों पर स्थापित किए जाने वाली गणपति प्रतिमाओं को लाया जाएगा। शोभायात्रा राजनगर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय चौराहा फव्वारा चौक से शुरू होकर राजनगर के विभिन्न प्रमुख मार्गो से होते हुए कार्यक्रम स्थल अरविंद स्टेडियम तक पहुंचेगी। इसके बाद शुभ मुहूर्त में सभी प्रतिमाओं की स्थापना विधि-विधान से की जाएगी। इसके साथ ही महोत्सव के अंतिम दिन 11 सितंबर को अरविंद स्टेडियम से राजनगर के मुख्य मार्गो से होकर विभिन्न झांकियां और प्रस्तुतियों के साथ गणपति प्रतिमाओं की शोभा निकाल कर विधि विधान से विसर्जन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि महोत्सव को लेकर अरविंद स्टेडियम में स्टेज और पंडाल आदि का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। इसके साथ ही डेकोरेशन, पेयजल व बिजली आदि को लेकर भी तैयार है जोरों पर चल रही है।पहले दिन 7 सितंबर की रात को गवरी नृत्य का आयोजन होगा। इसमें किशन पनोतिया ग्रुप एवं राजनगर की गवरी के कलाकार परंपरागत गवरी नृत्य की प्रस्तुति देंगे। 8 सितंबर को दूसरे दिन भजन संध्या होगी जिसमें भगवत सुथार एवं मधुबाला राव उदयपुर एंड पार्टी डांस ग्रुप और झांकियों के साथ प्रस्तुतियां देंगे।

नाबालिग ने चुराया मंगलसूत्र

डूंगरपुर, (निसं)। नाबालिग घर पर काम मांगने आई थी और पोछा करते हुए सोने का मंगलसूत्र चोरी कर लिया। पुलिस ने आरोपी नाबालिग को डिटेन कर लिया है। कोतवाली थाना पुलिस ने चोरी के मामले में एक नाबालिग लडकी को डिटेन किया है। नाबालिग घर पर काम मांगने आई थी और पोछा करते हुए सोने का मंगलसूत्र चोरी कर लिया। पुलिस ने आरोपी नाबालिग को डिटेन कर लिया है। वहीं उससे चोरी हुआ मंगलसूत्र भी बरामद कर लिया है। कोतवाली थानाधिकारी भगवानलाल ने बताया कि विद्या जैन पत्नी हेमंत जैन निवासी जयहिंद नगर ने रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। इसमें बताया कि 18 अगस्त को उनके घर पर एक लडकी आई और काम मांगने लगी। लडकी ने बताया कि उसके माता पिता नहीं हैं। सोनिया चौक में रहती है। इसलिए उसे काम की जरूरत है और झाडू पोछा का काम कर देगी। विद्या देवी ने उसकी बात सुनकर उसे काम दे दिया। लडकी ने घर में झाडू पोछा करते समय कमरे में पडा मंगलसूत्र चोरी कर लिया। काम करने के बाद लडकी चली गई,लेकिन जब उसे मंगलसूत्र नहीं मिला तो उसने लडकी के मोबाइल पर फोन किया। लडकी का फोन भी बंद आने पर उसे शक हुआ। मामले में कोतवाली थाना पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करते हुए जांच शुरू कर दी। पुलिस ने शक के आधार पर नाबालिग को डिटेन कर पूछताछ की। जिस पर उसने मंगलसूत्र चोरी की वारदात कबूल कर ली। वहीं उससे चोरी किया मंगलसूत्र भी बरामद कर लिया है।

मारपीट करने वाले दो गिरफ्तार

डूंगरपुर, (निसं)। कोतवाली थाना पुलिस ने 2 बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया है। बदमाशों ने शराब पीने के लिए पैसे नहीं देने पर मारपीट की वारदात को अंजाम दिया था। फिलहाल पुलिस दोनों ही आरोपियों से पूछताछ कर रही है। कोतवाली थानाधिकारी भगवानलाल ने बताया कि रेखा पत्नी सूर्यप्रकाश रोत निवासी भंडारिया फला उपला ने रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। इसमें बताया कि 22 जुलाई की शाम के समय उसके पति सूर्यप्रकाश रोत मजदूरी कर वापस घर आ रहे थे। रास्ते में जोगेला तालाब के पास 2 बदमाशों ने उसे रोक दिया। बदमाशों ने उसे शराब पीने के लिए पैसे मांगे। पैसे नहीं देने पर बदमाशों ने उसके पति के साथ मारपीट की। जिससे उन्हें चोंट आई। मामले में पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करते हुए जांच शुरू कर दी। थानाधिकारी ने बताया कि मामले में छानबीन करते हुए 2 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी दुर्जन उर्फ अर्जुन पुत्र कानजी रोत निवासी भंडारिया और सुरेश उर्फ टकला पुत्र जयंतीलाल रोत निवासी भंडारिया को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश किया। जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया है।

साधारण सभा की बैठक आज

भीम, (निसं)। नगर पालिका मंडल की साधारण सभा गुरुवार को दोपहर 3:00 बजे पालिका सभागार में नगर पालिका अध्यक्ष यशोदा कंवर की अध्यक्षता में आयोजित होगी। अधिशासी अधिकारी विजय मंत्री ने बताया कि नगर पालिका क्षेत्र में विभिन्न पार्कों का विकास सौंदर्य कारण एवं नवीनीकरण नवीन पार्क के विकास, बस स्टैंड परिसर में नवीन सीसी चौक निर्माण हाई मास्ट लाइट एवं अन्य विकास कार्य ,यात्री प्रतीक्षालय के पास नगर पालिका की पुरानी जर्जर दुकानों को गिराया जाकर पालिका की रिक्त भूमि पर नवीन दुकानों का निर्माण एवं नीलामी के द्वारा दुकानों के विक्रय किए जाने पर प्रस्ताव लिए जाएंगे। नगर पालिका स्वामित्व की दुकान केबिन एवं कोटा जो किराए पर चल रहे हैं उनका नवीनीकरण किराया निर्धारण किया जाएगा नगर पालिका क्षेत्र में विभिन्न श्मशान घाट का विकास विभिन्न वार्डों में आवश्यकता अनुसार नवीन सड़कों एवं नाली निर्माण आदि विकास कार्यों पर प्रस्ताव लिए जाएंगे।

हादसे में छह ऊंटों की मौत

उदयपुर, (कासं)। रात के समय पैंथर को देख कर भागे छह ऊंट वाहनों की चपेट में आने से मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार भेसड़ा खुर्द डेडरों की ढाणी प्रतापनगर निवासी गणेशलाल पुत्र हाद्दन रेबारी दो अगस्त को तीस से पैतीस ऊटों के चरने के लिए देबारी क्षेत्र में ले गया था, जहां रात के समय में पैंथर को देख जान बचाकर ऊंट वहां से भागे। इस दौरान वाहनों के चपेट में आने से छह ऊंटों की मौत हो गई।

नगर परिषद के निर्माणाधीन सभागार का निरीक्षण किया

राजसमन्द, (निसं)। विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने बुधवार को राजसमंद नगर परिषद के निर्माणाधीन नगर सभागार का निरीक्षण किया। उन्होंने इस दौरान कार्यकारी एजेंसी रूडिसिको और नगर परिषद के अधिकारियों के साथ बैठक कर निर्माण कार्य की प्रगति का पूर्ण संज्ञान लिया। निरीक्षण के दौरान विधायक ने सम्पूर्ण परियोजना की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्धारित समय सीमा के भीतर कार्य को पूर्ण किया जाए और मानक गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि नगर सभागार का

राजसमंद में अधिकारियों के साथ नगर परिषद के निर्माणाधीन नगर सभागार का निरीक्षण करती विधायक दीप्ति माहेश्वरी एवं मौजूद अधिकारी व कर्मचारी।

■ नवरात्रि के गरबा नृत्य की तैयारियों का किया अवलोकन

निर्माण जनता के लिए एक महत्वपूर्ण परियोजना है और इसके समय पर और गुणवत्ता के साथ पूर्ण होने से क्षेत्र के नागरिकों को एक आधुनिक और सुविधाजनक सभागार का लाभ मिलेगा। इस दौरान संबंधित विभागीय अधिकारी, रूडिसिको के प्रतिनिधि और मण्डल के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। सभी ने निर्माण की गति और गुणवत्ता को लेकर विधायक के निर्देशों का समर्थन किया और उनके मार्गदर्शन में कार्य को समय पर पूर्ण करने का आश्वासन दिया। इस दौरान अधिशाषी अभियंता रूडिसिको अरविंद माथुर, नगर परिषद अधिशाषी अभियंता तरुण बाहेती, कनिष्ठ अभियंता रूडिसिको वरुण डाबला, मंडल अध्यक्ष सुभाष पालीवाल, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेलर, पूर्व सभापति सुरेश पालीवाल, उपाध्यक्ष भगवानलाल कुमावत, पार्षद सूर्यप्रकाश जांगिड, महामंत्री लक्ष्मण मौर्य, कैलाश कुमावत, कुलदीप सिंह गौड, शैतानसिंह, विनोदसिंह राणावत, कस्तूर रेवडिया, नाथू सिंगलवाल, नाथूलाल पदानिया, शंकर पदानिया, हरीश कुमावत सहित अन्य कार्यकर्ताओं मौजूद थे।नवरात्रि के पावन पर्व पर आदिशक्ति मां अम्बे माता की स्तुति में होने वाले गरबा नृत्य की तैयारियों के सिलसिले में विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने बडारडा निवासी हेमलता कुमावत एवं खुशी कुमावत द्वारा संचालित जय अम्बे गरबा क्लास का अवलोकन किया। इस दौरान विधायक ने गरबा क्लास में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही माताओं और बहिनों का गरबा नृत्य देखा और उनके समर्पण एवं उत्साह की सराहना की। उन्होंने नृत्य में भाग ले रही महिलाओं को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन और प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दी। विधायक ने इस दौरान प्राप्त स्वागत और सम्मान के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों से न केवल हमारी परंपराएं सजीव रहती हैं बल्कि महिलाओं को सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने का प्रोत्साहन भी मिलता है। विधायक ने जय अम्बे गरबा क्लास के संचालकों हेमलता कुमावत और खुशी कुमावत को इस सफल आयोजन के लिए बधाई दी। विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने बुधवार को राजसमंद के नगरीय क्षेत्र में शोक संतप्त परिवारों के घर जाकर अपनी शोक संवेदना व्यक्त की। विधायक ने परिवारों के दुख में सहभागी बनते हुए दिवंगत आत्माओं की शांति और सद्गति के लिए प्रार्थना की। अपने दौरे के दौरान विधायक ने शोकाकुल परिवारों से भेंट कर उनके दुख को साझा किया। उन्होंने परिवारों को सांत्वना देते हुए कहा कि इस कठिन समय में पूरा समाज उनके साथ खडा है और ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें और परिवारजनों को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति दें।

कांग्रेस कमेटी ने ज्ञापन सौंपा

कपासन, (निसं)। पशुओं की समस्या के समाधान को लेकर नगर कांग्रेस कमेटी ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। जिसमें आवारा पशुओं को गोशाला पहुंचाने और पशुओं को सड़कों पर छोड़ने वाले पशुपालकों को भी पाबंद करने की मांग की गई। पशुओं की समस्या के समाधान को लेकर नगर कांग्रेस कमेटी ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। आवारा पशुओं को गोशाला पहुंचाने और पशुओं को सड़कों पर छोड़ने वाले पशुपालकों को भी पाबंद करने की मांग की गई। नगर कांग्रेस प्रवक्ता विजय बारेगामा ने बताया कि नगर कांग्रेस अध्यक्ष शंकरलाल प्रजापत के नेतृत्व में कार्यकर्ता एसडीएम कार्यालय पहुंचे और पशुओं की समस्या के समाधान के लिए एसडीएम को ज्ञापन सौंपा।

''गुड टच-बैड टच'' व सुरक्षा कानूनों की जानकारी दी

डूंगरपुर, (निसं)। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार एवं निदेशालय महिला अधिकारिता के निर्देशानुसार संकल्प-100 दिवसीय विशेष जन जागरूकता अभियान के तहत् महिला अधिकारिता विभाग की ओर से बुधवार को ''कानूनी जागरूकता सप्ताह'' के अंतर्गत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चितरी ब्लॉक गलियाकोट में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

डीएचईडब्ल्यू के जेंडर स्पेशलिस्ट राकेश वैष्णव ने ''बेटी बचाओ-बेटी पढाओ योजनान्तर्गत'' 12 वें सप्ताह की थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में गुड

■ राकेश वैष्णव ने बच्चों को ''गुड टच-बैड टच'' के बारे में बताया

टच-बेड टच, बाल विवाह रोकथाम, कन्या भ्रूण हत्या, 'उडान योजना' आदि के बारे में जानकारी दी। वर्तमान में बालिकाओं को मोबाइल के सदुपयोग व दुरूपयोग, के बारे बताते हुए कहा कि मिशन शक्ति की योजनाएं, महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए है। कार्यक्रम में 450 बालिकाएं उपस्थित रही। महिला सुपरवाईजर ममता पाटीदार ने वन स्टॉप सेन्टर (सखी केन्द्र), इन्दिरा महिला शक्ति उद्यम प्रोत्साहन विभागीय योजना, नि:शुल्क कम्प्यूटर कोर्स एवं शिक्षा सेतु योजनान्तर्गत षिक्षा से वंचित बालिकाओं को षिक्षा से जोडने के बारे में जानकारी दी। महिला सुरक्षा एवं सलाह केन्द्र (पुलिस थाना सागवाडा) की परामर्शदाता मनीषा पण्ड्या और शीतल व्यास द्वारा बालिकाओं व महिलाओ को उनके संदर्भ मे बनाए गए नये कानूनों, लैंगिक उत्पीडन, घरेलू हिंसा, महिला हेल्पलाईन नम्बर 181, चाईल्ड लाईन नंबर 1098 आदि के बारे में जानकारी दी।

जिले में 2 लाख से अधिक सदस्य बनाएगी भाजपा : बारहठ

राजसमन्द, (निसं)। पूरे देश में 1 सितम्बर से भाजपा सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत राजसमन्द जिले में 2 लाख से अधिक भाजपा के सदस्य बनाये जाएंगे जो कि प्रत्येक बूथ पर कम से कम 200 सदस्य बनाये जाएंगे। इसके लिए संगठन स्तर पर सारी तैयारियां सदस्यता अभियान संयोजक जवाहरलाल जाट के द्वारा पूर्ण कर ली गई है। जिसकी मॉनिटरिंग भी मेरे और सभी अभियान संयोजक व सह संयोजक द्वारा की जा रही है। जिला मीडिया प्रभारी अरविंदसिंह भाटी ने बताया कि यह बात भाजपा जिलाध्यक्ष मानसिंह बारहठ ने भाजपा जिला कार्यालय पर आयोजित प्रेसवार्ता में कही। प्रेसवार्ता में विधायक दीप्ति माहेश्वरी, हरिसिंह रावत, जिला प्रमुख रतनीदेवी जाट, पूर्व विधायक बंशीलाल खटीक, महामंत्री गोपाल कृष्ण पालीवाल, सदस्यता अभियान संयोजक जवाहरलाल जाट, महेंद्रसिंह चौहान, महेश पालीवाल, अशोक रांका, सुरेश पालीवाल, अरविंदसिंह भाटी, नर्बदा शंकर पालीवाल, माधवलाल चौधरी सहित वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित थे। गौरतलब है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सर्वप्रथम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भाजपा का सदस्य बनाया। उसके बाद 2 सितम्बर को राजस्थान प्रदेश में प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को सदस्यता दिलाकर प्रदेश में अभियान की शुरुआत की है। उसके बाद प्रदेश भर में सदस्यता अभियान चालू हुआ। इस सदस्यता अभियान में तीन प्रकार से भाजपा का सदस्य बन सकता है पहला है 8800002024 मिस्डकॉल करके, दूसरा क्यूआर कोड के द्वारा और तीसरा नमो एप के माध्यम से भी भाजपा की सदस्यता ली जा सकती है। इन तीनों प्रक्रिया में एक लिंक आएगा जिसको भरकर सबमिट करना होगा। तभी आपकी सदस्यता की प्रक्रिया पूर्ण होगी।

सार-समाचार

जिला कारागृह का किया निरीक्षण

राजसमन्द, ०(निसं)। जिला प्राधिकरण अध्यक्ष राघवेन्द्र काछवाल के निर्देशानुसार जिला प्राधिकरण सचिव संतोष अग्रवाल ने जिला कारागृह का निरीक्षण कर कारागृह की भोजन, सफाई, आवास, सुरक्षा इत्यादि व्यवस्थाओं का जायजा लिया। प्राधिकरण सचिव अग्रवाल ने बताया कि निरीक्षण के समय कारागृह में कुल 111 बंदी निरुद्ध मिले। नवीन प्रवेशित बंदियो से संवाद किया जिसमें सभी ने अपने प्रकरण में पैरवी के लिए अधिवक्ता नियुक्त होना बताया। कारागृह में कोई भी बंदी 18 साल से कम उम्र का निरूद्ध नहीं पाया गया। चिकित्सक द्वारा बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण करना बताया। अग्रवाल ने कारागृह में सजायाफ्ता बंदियों की जानकारी प्राप्त की। बंदियों के मनोरंजन के लिए बैरक में टेलीविजन लगी हुई है तथा सुरक्षा के लिए लगाए गए सीसीटीवी कैमरे क्रियाशील अवस्था में हैं। बंदियों से वार्ता करने पर उन्होंने किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होने तथा भोजन व्यवस्था के प्रति संतोष व्यक्त किया। इस दौरान जेल उपाधीक्षक हेमन्त सालवी उपस्थित थे। सदस्य सचिव, राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर तथा जिला प्राधिकरण अध्यक्ष राघवेन्द्र काछवाल के निर्देशानुसार जिला प्राधिकरण सचिव संतोष अग्रवाल ने अवैयरनेस मॉड्यूल फॉर सीनियर सिटीजन्स के तहत वृद्धाश्रम मोही का निरीक्षण किया गया। प्राधिकरण सचिव अग्रवाल ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए तैयार अवैयरनेस मॉड्यूल फॉर सीनियर सिटीजन्स के तहत नालसा योजना 2016 (वरिष्ठ नागरिकों के लिए विधिक सेवाएं) के अंतर्गत आने वाले संवैधानिक व विधिक अधिकारों के बारे में उपस्थित सभी वरिष्ठ नागरिकों को जानकारी दी। साथ ही निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। निरीक्षण के समय कुल ०8 वृद्धजन उपस्थित मिले।

रक्तदान शिविर आयोजित

बांसवाड़ा, (निसं)। सपना फाउंडेशन, गौ रक्षक दल, बजरंग दल एवं घाटोल प्रतिभा मंच के संयुक्त तत्वावधान में श्री यादे मंदिर परिसर घाटोल में समाजसेवी अमृत निनामा के जन्मदिन पर आयोजित रक्तदान शिविर में 62 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। अध्यक्षता प्रजापत नवयुवक मंडल से सुरेश प्रजापत ने की जबकि मुख्य अतिथि पीएमओ डॉ खुशपाल सिंह राठौड एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्लॉक शिक्षा अधिकारी घाटोल नवीन मीणा, वैष्णव समाज अध्यक्ष संजय बसेर, व्यापार मंडल अध्यक्ष अनिल धीरावत, ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी घाटोल डॉ अंकेश धीरावत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला सेवा प्रमुख अशोक पंचाल, डॉ उर्वेश सेठ, विहिप नगर अध्यक्ष विमल लीलावत, शांतिलाल यादव, शरद त्रिवेदी, डॉ अनिल जैन, विनोद किकावत रहे। अतिथियों का स्वागत सपना फाउंडेशन के संस्थापक विश्वंभर मेघवाल ने किया। शिविर में प्रजापत समाज के पूर्व उपाध्यक्ष मगनलाल प्रजापत ने 62 वर्ष की उम्र में रक्तदान किया वहीं हर्ष मीणा ने 24वी बार, मुकेश निनामा ने 16वी, समाजसेवी अमृत निनामा ने 15वी, रोहन कुमार राणा ने 13वीं, निलेश डिंडोर ने 15वीं, करण पाटीदार ने 12वी, पियूष पटेल ने 7वी, ईश्वर बुनकर ने 6ठी, विक्रम प्रजापत ने 5वी, नरेश यादव व शिक्षक शीतल मेहता ने चौथी बार तथा सुरेश प्रजापत, रणछोड पाटीदार, भानु पाटीदार एवं घनश्याम आचार्य ने पहली बार रक्तदान किया। घाटोल प्रतिभा मंच से जैकी कंसारा, विशाल सेठिया तथा गायत्री परिवार से ज्योतिका उपाध्याय ने रक्तदान कर प्रेरित किया।

ग्रीन श्यामपट्ट बोर्ड किया भेंट

राजसमन्द, ०(निसं)। राउप्रावि कांकरोली द्वितीय की लेवल टू की अध्यापिका ऋतु शर्मा ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक गतिविधि की कमी को दूर करने के लिए विद्यालय में एक ग्रीन श्यामपट्ट भेंट किया। प्रधानाध्यापक चुन्नीलाल भील ने बताया कि शैक्षिक गतिविधि में ग्रीन श्यामपट्ट बोर्ड की कमी स्टाफ साथियों के सामने उजागर हुई तो लेवल द्वितीय की अध्यापिका ऋतु शर्मा ने देने की घोषणा की। बुधवार को सभी छात्र -छात्राओं, विद्यालय स्टाफ को एक ग्रीन श्यामपट्ट सुपुर्द किया गया।

राम रेवाडी का नगर भ्रमण आज

बांसवाड़ा, (निसं)। बुनकर समाज घाटोल की ओर से भादवा दूज पर गाजे-बाजे व भजन कीर्तन के साथ राम रेवाडियों को नगर भ्रमण कराया जायेगा। बुनकर विकास सेवा संस्थान के अध्यक्ष मांगीलाल बुनकर ने बताया कि राम रेवाडी घाटोल मुख्य मार्ग से होते हुए पोस्ट ऑफिस चौराहा, सदर बाजार से बस स्टैंड से अंबा माता मंदिर पहुंचेगी जहां भजन-कीर्तन एवं आरती के आयोजन होंगे एवं बाबा रामदेव मंदिर में देश में अमन-चौन खुशहाली की कामना कर पूणार्हुति व महाप्रसादी का आयोजन होगा।

सांसद मेवाड ने ली भाजपा की सदस्यता

राजसमन्द, ०(निसं)। सांसद महिमा कुमारी मेवाड ने भाजपा के राष्ट्रीय सदस्यता अभियान 2024 के अंतर्गत बुधवार को पुन: भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। इस दौरान प्रसन्नता व्यक्त करते हुए महिमा कुमारी मेवाड ने कहा कि आप सब भी 8800002024 पर मिस्ड कॉल करके भाजपा परिवार के सदस्य बन सकते हैं। सांसद ने भाजपा की सदस्यता लेने का आमजन से आव्हान करते हुए कहा कि प्रजातंत्र की प्रक्रिया सदस्यता अभियान में भाग लेकर देश के प्रति अपने कर्तव्य का निवारण करते हुए देश की प्रगति में हाथ बटाएं।

साधारण सभा की बैठक कल

राजसमन्द, ०(निसं)। पंचायत समिति राजसमंद की साधारण सभा की बैठक पंचायत समिति प्रधान अरविन्दसिंह राठौड की अध्यक्षता में शुक्रवार को दोपहर 1 बजे राजसमंद पंचायत समिति सभागार में आयोजित होगी। विकास अधिकारी महेश गर्ग ने बताया कि साधारण सभा में गत् बैठक में लिए गए निर्णय पर विभागवार अनुपालना प्रतिवेदन पर चर्चा, रेलवे द्वारा ब्रोडगेज विस्तार के लिए कुंवारिया मेला ग्राउण्ड के पास चाही गई जमीन की एनओसी सहित विभिन्न विकास कार्यो के मुद्दो पर चर्चा की जाएगी।

भगवान महावीर का जन्म वाचन महोत्सव धूमधाम से मनाया

डूंगरपुर, (निसं)। पर्युषण पर्व के पांचवे दिन भगवान महावीर के गर्भ में आने से पूर्व माता त्रिशला द्वारा देखे गये चौदह स्प्न को लेकर शास्त्रों में कल्पसूत्र वाचन के माध्यम से उसका चित्रण किया गया है जिसमे प्रभु के गर्भ में आते ही पूरी कायनात हेर्ष विभोर हो जाती है। धरती का कण-कण खिल उठता है।

यह बात चार्तुमास विराजित मुनि रत्नसागर एवं पवित्र रत्न सागर जी ने कल्पसूत्र वाचन के दौरान बुधवार को नेमिनाथ मंदिर के पुण्य प्रवचन हॉल में व्याख्यान के दौरान कही। उन्होंने कहा

■ पर्युषण पर्व की धूम से वागड अंचल हुआ सरोबार

कि भगवान का जन्म ही संसार में सद्कर्मो का आगमन होता है और प्रभु महावीर ने तो जीव मात्र के प्रति दया का भाव जाग्रत करने का संदेश दिया था। और उसी के अनुरूप हमें अपने कर्मो को निरूपित करना होगा ताकि सृष्टि में चहूंओर शांति और सद्भाव बना रहे। वही दूसरी ओर संभवनाथ उपाश्रय में चार्तुमास विराजित दर्शरेखा श्रीजी आदि ठाणा-4 के सानिध्य में जन्म वाचन सम्पन्न हुआ।

जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ व हुमड संघ के पर्युषण महापर्व के दौरान बुधवार को आज पांचवें दिन भगवान महावीर के जन्म वाचन महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बुधवार दोपहर में कल्पसूत्र का वाचन प्रारंभ हुआ तथा इसके पश्चात भगवान महावीर के माता त्रिशला के गर्भ में आने से पूर्व देखे गये चौदह स्पप्नों की बोली बोली गई जिसमे धर्म प्रेमियों ने बढ-चढ कर हिस्सा लिया। इन सभी स्पनों को लाभार्थी परिवारों द्वारा उतारा गया। इसके पश्चात अक्षत: उछाल कर तथा श्रीफल वधेर कर जन्म कल्याण के गीत गाये गये। साथ ही प्रभु महावीर का झुला झुलाते हुए महिलाएं मंगल गीत गा रही थी। इसके पश्चात गरबा रास खेला गया तथा भगवान की मंगल आरती लाभार्थी परिवारों द्वारा उतारी गई। पर्युषण महापर्व के दौरान शहर के घाटी स्थित गंभीरा पार्श्वनाथ मंदिर, महावीर स्वामी मंदिर, शांतिनाथ मंदिर,आदिनाथ मंदिर, नैमिनाथ मंदिर, तथा न्यू कॉलोनी स्थित संभवनाथ मंदिर में केशरपूजा व स्नात्र पूजा के कार्यक्रम सम्पादित हुए इसके पश्चात शाम को प्रतिक्रमण व भक्ति के कार्यक्रम आयोजित हुए। आज घाटी स्थित महावीर स्वामी मंदिर में भगवान महावीर की प्रतिमा का आकर्षक श्रृंगार किया गया। बनकोडा में अजीतनाथ जैन उपाश्रय व चन्द्रप्रभु स्वामी जैन उपाश्रय में जन्म वाचन महोत्सव मनाया। जिले के पुनाली, पूंजपुर, बडौदा, आसपुर,भ‍बराना, वरदा, सागवाडा, बोडीगामा, सहित विभिन्न गांवो में भीमहावीर जन्म वाचन महोत्सव धूमधाम से मनाया।

महावीर जन्म वाचन के तहत ओटो स्थित नेमिनाथ मंदिर के पुण्य प्रवन हॉल में स्वप्न उतारते।

ज्ञापन सौंपा

डूंगरपुर, (निसं)। देश की आजादी के पूर्व अंग्रेजों द्वारा आदतन अपराधी घोषित कर दिया जब कि विमुक्त, घुमंतु और अर्थ घुमंतु जनजातियों द्वारा देश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन इस समुदाय की पिछले इतने वर्षो से कोई संभाल लेने वाला नहीं है। यह डीएनडीटीएस वर्ग निम्न मांगों को लेकर संघर्षशील है,लेकिन अभी तक किसी भी सरकार ने इन वर्गो को अन्य समुदाय के समकक्ष लाने का कार्य नही किया गया है। जबकि सरकार बनाने में इन वर्गो का विशेष योगदान रहा है।

वर्तमान में केंद्र एवं राजस्थान में डबल इंजन की सरकार है और इस डबल इंजन की सरकार से इन वर्गो को समाज की मुख्य विचारधारा में लाने हेतु निम्न मांगों पर सरकार द्वारा विचार किया जाए और इन मांगों को पूर्ण कर राहत प्रदान की जाए। अनुसूचित क्षेत्र में विमुक्त,घुमंतू और अर्ध घुमंतु जाति के लोगों की आर्थिक स्थिति को ध्यान रखते हुए जो आमतौर पर एसटी व एसटी से बदतर है अनुच्छेद 341 व 342 के तहत विमुक्त, घुमंतू अर्ध घुमंतु, रेबारी, बंजारा, खानाबदोश जाति जनजाति को अनुसूचित जनजाति में शामिल या उसके समक्ष मानकर1० प्रतिशत शैक्षणिक, राजनीतिक आरक्षण का लाभ दिया जाए जिससे इस डीएनडीटीएस रेबारी, बंजारा खानाबदोश जातियों का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक उत्थान हो सके। डीएनडीटी समुदाय के लिए शैक्षणिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए टीएसपी क्षेत्र में पृथक से तहसील स्तर पर आवासीय विद्यालय व छात्रावास खोले जाए।

विद्यार्थियों को मिट्टी की प्रतिमा बनाना सिखाया

बांसवाड़ा में राष्ट्र सेविका समिति व विद्या निकेतन बागीदौरा के संयुक्त तत्वावधान में विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देती प्रशिक्षिका।

बांसवाड़ा, (निसं)। राष्ट्र सेविका समिति व विद्या निकेतन बागीदौरा के संयुक्त तत्वावधान में पर्यावरण व जल संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में अपनी सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक संस्कारों को बच्चों में हस्तांतरित करने तथा कौशल विकसित करने के उद्देश्य से मिट्टी के हस्तनिर्मित गणेशजी बनाने की कार्यशाला व प्रतियोगिता का आयोजन विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय बागीदौरा में किया गया।

प्रतियोगिता में विद्यालय व नगर के 125 विद्यार्थियों ने उत्साह से भाग लिया। आज जो प्रतिमाएं बच्चों ने बनाई है उनका कल श्रृंगार किया जाएगा। इन्हीं प्रतिमाओं को चतुर्थी के दिन अपने घरों में स्थापित किया जाएगा। कार्यशाला में सेविका समिति की भाविक सोनी व आयुष रावल ने विद्यार्थियों को प्रतिमा बनाना सिखाया।

इस अवसर पर प्रधानाध्यापिका पूनम सोलंकी ने बताया कि अधिकांश लोग घरों में पीओपी या धातु की बनी प्रतिमाओं को स्थापित कर पूजन व विसर्जन करते है और यह बाजार में सहजता से मिल भी जाती है लेकिन पीओपी की प्रतिमा विसर्जन के पश्चात पानी को प्रदूषित करती है, पानी में रहने वाले जीवों को नुकसान पहुंचाती है। यदि सभी अपने घरों में मिट्टी या गोबर से बनी प्रतिमाएं स्थापित करें तो पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होगा व बच्चों में सृजनशीलता व कौशल विकास भी होगा। निरंजन दवे ने बताया कि इस अवसर पर विद्यार्थियों ने प्रतिवर्ष अपने हाथ से मिट्टी की प्रतिमा बनाकर स्थापना करने का संकल्प भी लिया। कार्यशाला में महेन्द्र प्रजापत, हिनल पटेल, शुभम पाटीदार ने सहयोग प्रदान किया। प्रशिक्षकों का स्वागत परेश बुनकर ने किया।

मैंने स्पिनरों के खिलाफ अपने डिफेंस पर थोड़ा और काम किया है। जब आप स्पिनरों के खिलाफ 'टर्निंग' पिच पर खेल रहे होते हैं तो आपका डिफेंस अच्छा होना चाहिए जिससे आप रन बनाने वाले शॉट खेल सकते हैं। - **भारतीय क्रिकेट टीम के उपकप्तान शुभमन गिल**

बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पहले बोले...

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

अजीत सिंह

भारतीय एथलीट अजीत सिंह ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पेरिस पैरालंपिक की भाला फेंक एफ46 वर्ग की स्पर्धा में रजत पदक और हमवतन सुंदर सिंह गुजर ने कांस्य पदक जीता। मंगलवार देर रात हुये मुकाबले में अजीत सिंह ने 65.62 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक अपने नाम किया। स्पर्धा के दौरान सुंदर सिंह गुर्जर 64.96 मीटर के अपने चौथे थ्रो के बाद दूसरे स्थान पर थे, लेकिन अजीत सिंह ने वापसी करते 65.62 मीटर का थ्रो करते हुए दूसरा स्थान हासिल किया। उन्होंने कहा, मेरा ध्यान स्वर्ण पर नहीं था, मैं बस कोई भी पदक जीतना चाहता था, इसलिए मैं बहुत खुश हूं।

क्या आप जानते हैं ?... सचिन तेंदुलकर दांये हाथ के बल्लेबाज तथा दांये हाथ के गेंदबाज हैं लेकिन वे बांये हाथ से लिखते हैं।

सचिन खिलाड़ी ने पुरुषों की गोला फेंक इवेंट में जीता सिल्वर मेडल

भारत को झोली में आया 21वां पदक

नयी दिल्ली, 4 सितम्बर। भारत को पेरिस पैरालंपिक 2024 के सातवें दिन सचिन खिलाड़ी ने भारत को 21वां मेडल दिलाया। 34 वर्षीय सचिन ने पेरिस पैरालंपिक में डेब्यू पर ही कमाल कर दिया। उन्होंने मेंस शुटपुट 46 इवेंट का सिल्वर मेडल जीत इतिहास रचा है।

फाइनल मुकाबले में कनाडा के डिफेंडिंग चैंपियन ग्रेग स्टीवर्ट के साथ सचिन की कड़ी टक्कर देखने को मिली। दोनों ने अपने 6 प्रयासों में कई बाद 16 मीटर की बाधा को पार किया। आखिर में स्टीवर्ट ने गोल्ड मेडल जीता। क्रोएशिया के लुका बेकोविक ने 16.27 मीटर के अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ ब्रॉन्ज मेडल जीता।

सचिन ने इससे पहले 2023 और 2024 में दो बार गोल्ड मेडल जीता। साथ ही हांग्जो में एशियाई पैरा खेलों के गोल्ड मेडलिस्ट भी रहे। जिससे पेरिस में उन्हें गोल्ड मेडल का दावेदार माना जा रहा था। सचिन ने अपने दूसरे प्रयास में 16.32 मीटर का रिकॉर्ड बनाया।

महाराष्ट्र के सांगली में जन्में सचिन के बाएं हाथ में हरकत सीमित है। 9 साल की उम्र में साइकिल से गिरने से हाथ में फ्रैक्चर हो गया और बाद में गैंग्रीन की वजह से

उनके हाथ का मूवमेंट प्रभावित हो गया।

सचिन जब कॉलेज में थे तब से ही भाला फेंकना शुरू कर दिया था। बाद में राष्ट्रीय स्पर्धाओं में गोल्ड मेडल जीतने। 2019 में उन्हें कंधे में चोट लग गई, जिसके कारण उन्हें जैवलिन थ्रो को छोड़ना पड़ा। कोच सत्य नारायण से बातचीत के बाद उन्होंने शॉट पुट में हाथ आजमाया। अपने मौजूदा कोच अरविंद चव्हाण के मार्गदर्शन में सचिन ने शॉट पुट में कई रिकॉर्ड तोड़े, जिसे बुधवार को पैरालंपिक में सिल्वर मेडल जीतने के साथ नया मुकाम मिला।

हालांकि, सचिन पढ़ाई में अच्छे थे, जिससे उनके पिता उन्हें इंजीनियर बनाना चाहते थे। फिर उन्होंने 2000 के दशक के अंत में इंजीनियरिंग का एंट्रेस एग्जाम पास किया और इसके बाद पुणे के इंदिरा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में दाखिला लिया साथ ही मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री भी हासिल की।

इस बीच सचिन पर कोच अरविंद चव्हाण की नजर पड़ी। जिसके बाद उन्होंने शुरुआत में सचिन को डिस्कस और जेवलिन थ्रो में ट्रेन किया और इस युवा खिलाड़ी ने 2012 में ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी स्टेड चैंपियनशिप में जेवलिन थ्रो में 60 मीटर की थ्रो के साथ गोल्ड मेडल जीता।

2013 में यूपीएससी और महाराष्ट्र राज्य परीक्षाओं की तैयारी कनरे के कारण सचिन ने खेलों से 3 साल का ब्रेक ले लिया। यूपीएससी की तैयारी के दौरान, उन्हें रियो पैरालंपिक चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी देवेंद्र झाझरिया के बारे में पढ़ा और पैरा स्पर्धाओं में भाग लेने का फैसला किया। 2016 में अपनी श्रेणी के लिए वर्गीकृत होने के बाद, उन्होंने 2017 में जयपुर में पैरा नेशनल्स में 58.47 मीटर के थ्रो के साथ भाला फेंक में गोल्ड मेडल जीता।

लेकिन फिर एक वक्त आया जब महाराष्ट्र में सूखे के कारण सचिन के परिवार को भारी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा था। सचिन को कुछ समय के लिए एक कोचिंग में पढ़ाना शुरू किया। जेवलिन थ्रो में एफ46 श्रेणी में राष्ट्रीय चैंपियन बनने के बाद कंधे में चोट लगने के बाद सचिन ने इस खेल को छोड़ने के बारे में सोचा। जिसके बाद कोच सत्य नारायण के एक कॉल ने उन्हें शॉटपुट में प्रतिस्पर्धा करने का फैसला करने में मदद की और महाराष्ट्र के इस एथलीट ने उसी साल ट्यूनीशिया में विश्व पैरा ग्रैंड प्रिक्स में गोल्ड पदक जीता।

पुणे में हॉकी इंडिया सीनियर पुरुष अंतर विभागीय राष्ट्रीय चैंपियनशिप आज से

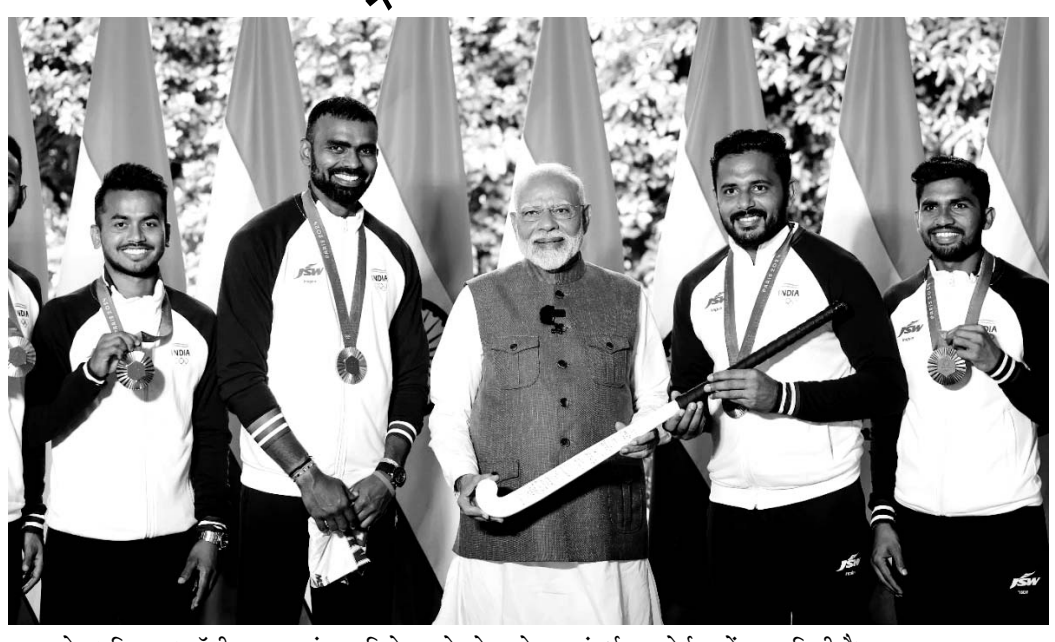

पुणे, 4 सितम्बर। हॉकी महाराष्ट्र पांच से 15 सितंबर तक हॉकी इंडिया सीनियर पुरुष अंतर विभागीय राष्ट्रीय चैंपियनशिप के चौथे सत्र की मेजबानी करेगा। प्रतियोगिता में 18 टीम हिस्सा लेंगी जिन्हें चार पूल में विभाजित किया गया है। यह 10 दिवसीय टूर्नामेंट पुणे के मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में खेला जाएगा जो बेंगलुरू और नयी दिल्ली के बाद प्रतियोगिता की मेजबानी करने वाला तीसरा शहर होगा। प्रतिभागियों में दो बार का विजेता और गत चैंपियन पेट्रोलियम खेल संवर्धन बोर्ड (पीएसपीबी) तथा 2022 का विजेता रेलवे खेल संवर्धन बोर्ड (आरएसपीबी) भी शामिल है।

प्रत्येक पूल में चार टीमें शामिल होंगी जिसमें से शीर्ष दो टीम अंतिम आठ में जगह बनाएंगी। पूल ए में पीएसपीबी को आईटीबीपी केंद्रीय हॉकी टीम, भारतीय खेल प्राधिकरण, केंद्रीय सिविल सेवा संस्कृति और खेल तथा केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के साथ रखा गया है। आरएसपीबी, अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड, गुजरात खेल प्राधिकरण, हॉकी अकादमी और स्टील प्लांट्स खेल बोर्ड को पूल बी में जगह मिली है।

पूल सी में सेना खेल नियंत्रण बोर्ड होगा, भारतीय खाद्य निगम, सशस्त्र सीमा बल और तमिलनाडु पुलिस जबकि पूल डी में पंजाब नेशनल बैंक, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ), भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की टीमें शामिल होंगी। पहला मैच गुरुवार को स्टील प्लांट्स खेल बोर्ड और अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड के बीच खेला जाएगा।

पेरिस पैरालंपिकः परमजीत पावरलिफ्टिंग मुकाबले में हारे

पेरिस, 4 सितंबर। भारतीय पैरा एथलीट परमजीत कुमार को बुधवार को पावरलिफ्टिंग 49 किलोग्राम वर्ग के मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा है। आज यहां हुए मुकाबले में पैरा एथलीट परमजीत कुमार 150 किलोग्राम के सर्वश्रेष्ठ भार उठाने के साथ आठवें स्थान पर रहे।

अजीत ने भाला फेंक स्पर्धा में रजत और सुंदर ने कांस्य पदक जीता

पेरिस, 4 सितंबर। भारतीय एथलीट अजीत सिंह ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पेरिस पैरालंपिक की भाला फेंक एफ46 वर्ग की स्पर्धा में रजत पदक और हमवतन सुंदर सिंह गुजर ने कांस्य पदक जीता। मंगलवार देर रात हुये मुकाबले में अजीत सिंह ने 65.62 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत पदक अपने नाम किया। स्पर्धा के दौरान सुंदर सिंह गुर्जर 64.96 मीटर के अपने चौथे थ्रो के बाद दूसरे स्थान पर थे।

पैरा साइकिलिंग में अरशद 11वें और ज्योति 16वें स्थान पर रही

पेरिस, 4 सितंबर। भारतीय पुरुष और महिला पैरा साइकिल चालक बुधवार को हुई स्पर्धाओं में क्रमशः 11वें और 16वें स्थान पर रहे। पैरासाइक्लिंग पुरुष सी2 व्यक्तिगत टाइम ट्रायल में अरशद शेख पोडियम फिनिश से चूक गए। टाइम ट्रायल राउंड में अरशद 25:20.11 के समय के साथ 11वें स्थान पर रहे। वहीं महिला पैरा साइकिलिंग सी1-3 व्यक्तिगत टाइम ट्रायल फाइनल में ज्योति गडेरिया ने किया निराशा। ज्योति ने 30:00.16 के समय के साथ 14.1 किलोमीटर की दूरी तय करके 16वां स्थान हासिल किया। पेरिस पैरालिंपिक 2024 में ज्योति का सफर अभी खत्म नहीं हुआ है। वह सात सितंबर को होने वाली सी1-3 रोड रेस में हिस्सा लेंगी।

जायसवाल ने कहा, रोहित से आप विकेट और स्थिति के अनुसार बल्लेबाजी में बदलाव करना सीख सकते हैं

बेंगलुरू, 4 सितम्बर। यशस्वी जायसवाल को लगता है कि टेस्ट करियर में नई ऊंचाइयों को छूने की उनकी उम्मीदें कप्तान रोहित शर्मा के साथ बल्लेबाजी पर टिकी हैं और उन्होंने इस अनुभव को बेहद शिक्षाप्रद बताया। पिछले साल वेस्टइंडीज के खिलाफ पदार्पण करने वाले जायसवाल ने रोहित के साथ नौ टेस्ट मैच खेले हैं और अपने कप्तान के साथ शीर्ष क्रम में सफल जोड़ी बना चुके हैं तथा कई शतकीय साझेदारियां कर चुके हैं। दलीप ट्रॉफी की पूर्व संध्या पर जायसवाल ने कहा, "जब भी मैं उनके साथ बल्लेबाजी करने जाता हूं तो यह अविश्वसनीय अनुभव होता है। उन्होंने अपने अनुभव मेरे साथ साझा करते हैं। मुझे लगता है कि जिस तरह से वह खेल को नियंत्रित करते हैं और विकेट को समझते हैं, वह बिलकुल सटीक होता है और उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है।"

उन्होंने कहा, "आप उनसे तेज गेंदबाजी या स्पिन के अनुकूल विकेट के हिसाब से अपनी बल्लेबाजी में बदलाव करने या एक या दो विकेट गिरने पर अपनी बल्लेबाजी बदलने जैसी चीजें सीख सकते हैं।" शीर्ष स्तर के क्रिकेट में एक साल पूरा करने वाले जायसवाल ने कहा कि पिछले 12 महीनों में वह अपने खेल के बारे में काफी जागरूक हो गए हैं। उन्होंने कहा, "अब मैं बहुत सारे परिदृश्य देख सकता हूं और टीम के लिए अपने खेल को बदल सकता हूं और परिस्थितियों को पढ़ सकता हूं। मुझे लगता है कि पिछले एक साल में ये मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है। जब मैं घरेलू क्रिकेट खेल रहा था, तो मुझे कई चीजों के बारे में पता नहीं था।"

जायसवाल ने कहा, "लेकिन जब से मैंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलना शुरू किया है, संवाद और खेल को पढ़ने की समझ में बहुत सुधार हुआ है। मैं बस सीखना जारी रखना चाहता हूं। इस 22 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा कि नए मुख्य कोच गौतम गंभीर खिलाड़ियों का पूरा समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि इससे खिलाड़ियों को अपना स्वाभाविक खेल दिखाने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा, "हां, मैंने श्रीलंका श्रृंखला के दौरान उनसे बात की थी। उन्होंने वास्तव में हमारा समर्थन करते हुए कहा कि बस मैदान में जाओ और खुलकर खेलो और खेल का आनंद लो और हम तुम्हारे साथ रहेंगे। इससे हमें बहुत आत्मविश्वास मिलता है और हमें निडर होकर खेलने में मदद मिलती है।" बाएं हाथ के बल्लेबाज ने कहा कि वह बांग्लादेश के खिलाफ आगामी दो मैचों की श्रृंखला से पहले अपने कौशल को निखारने के लिए दलीप ट्रॉफी का इस्तेमाल एक ट्रेनिंग मंच के रूप में करना चाहते हैं।

बीसीसीआई दलीप ट्रॉफी के पहले दौर के बाद टेस्ट टीम की घोषणा कर सकती है

नयी दिल्ली, 4 सितंबर। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) पांच से आठ सितंबर तक बेंगलुरु और अनंतपुर में खेली जाने वाली दलीप ट्रॉफी के पहले दौर के बाद बंगलादेश के साथ होने वाली दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए टीम की घोषणा कर सकता है। भारतीय टेस्ट टीम का अभ्यास सत्र चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में 12 सितंबर से शुरू होगा। भारत और बंगलादेश के बीच दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला की शुरुआत 19 सितंबर से होगी। बंगलादेश का अभ्यास सत्र चेपॉक पर ही 15 सितंबर से शुरू होगा।

दलीप ट्रॉफी में शुभमन गिल, केएल राहुल, ध्रुव जुरेल, कुलदीप यादव, आकाश दीप, यशस्वी जयसवाल, सरफराज खान, ऋषभ पंत, मुकेश कुमार, श्रेयस अय्यर, अर्शदीप सिंह और केएस भरत समेत अन्य खिलाड़ी खेलते नजर आएंगे। इनके अलावा कई और ऐसे खिलाड़ी हैं जो दलीप ट्रॉफी के प्रदर्शन के आधार पर भारतीय टीम में आने की अपनी दावेदारी पेश करेंगे। इनमें देवदत्त पड़िक्कल, रजत पाटीदार, यश दयाल, बी साई सुदर्शन जैसे खिलाड़ी शामिल हैं। भारत बंगलादेश के खिलाफ दो मैचों के साथ अपने लंबे टेस्ट सत्र की शुरुआत के लिए तैयार है यह विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2023-25 का हिस्सा है। चेन्नई में पहला और कानपुर में दूसरा टेस्ट खेला जाएगा। इसके बाद भारत और बंगलादेश तीन टी-20 मैचों की सीरीज खेलेंगे। इसके बाद भारतीय टीम पांच सफेद गेंद मैचों के लिए दक्षिण अफ्रीका जाने से पहले घरेलू मैदान पर न्यूजीलैंड के साथ तीन टेस्ट खेलेगी और साल के आखिर में पांच टेस्ट मैचों के लिए ऑस्ट्रेलिया जाएगी।

आईपीएल में सालों बाद राहुल द्रविड़ की वापसी, राजस्थान रॉयल्स के हेड कोच बने

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। टीम इंडिया के पूर्व हेड कोच राहुल द्रविड़ की सालों बाद आईपीएल में वापसी हो गई है। दरअसल, राहुल द्रविड़ को राजस्थान रॉयल्स के हेड कोच बने हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक द्रविड़ को आईपीएल 2025 से पहले टीम का कोच बना दिया गया है। द्रविड़न ने राजस्थान रॉयल्स के साथ एक डील साइन की है। द्रविड़ अपने आईपीएल करियर के दौरान राजस्थान टीम के कप्तान रह चुके हैं। इसके बाद वह टीम के मेंटर भी रहे।

क्रिकइंफो की एक खबर के मुताबिक राजस्थान ने द्रविड़ को हेड कोच बनाया है। उन्होंने राजस्थान के साथ एक डील साइन की है। द्रविड़ हेड कोच बनने के बाद मेगा ऑक्शन के दौरान अहम भूमिका निभाएंगे। उनका टीम के साथ काफी अच्छा रिश्ता रहा है। कप्तान संजू सैमसन भी द्रविड़ के काफी करीब रहे हैं।

बता दें कि, राहुल द्रविड़ राजस्थान रॉयल्स के मेंटर भी रहे हैं। उनका आईपीएल करियर भी शानदार रहा है। वे आईपीएल 2012 और

2013 में राजस्थान टीम के कप्तान भी रहे। इसके बाद दो साल और जुड़े रहे। इसके बाद 2016 में दिल्ली डेयरडेविल्स के साथ जुड़ गए।

मोदी ने दीप्ति, अजीत, सुंदर, शरद और मरियप्पन को पदक जीतने पर दी बधाई

नयी दिल्ली, 4 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पेरिस पैरालंपिक की विभिन्न स्पर्धाओ में पदक जीतने वाले भारतीय एथलीट दीप्ति जीवनजी, अजीत सिंह, सुंदर सिंह गुर्जर, शरद कुमार और मरियप्पन थंगावेलु को बुधवार को बधाई दी।

मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, पैरालिंपिक 2024 में महिलाओं की 400 मीटर टी20 स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने पर दीप्ति जीवनजी को बधाई। वह असंख्य लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। उनका कौशल और दृढ़ता सराहनीय है।

उन्होंने अन्य पोस्ट श्रृंखला में भाला फेंक स्पर्धा के विजेताओं को बधाई देते हुए कहा, अजीत सिंह की अभूतपूर्व उपलब्धि, उन्होंने पैरालिंपिक 2024 में पुरुषों की भाला फेंक एफ46 स्पर्धा में रजत पदक जीता। खेल के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और दृढ़ता ने भारत को गौरवान्वित किया है।

उन्होंने पोस्ट किया, सुंदर सिंह गुर्जर का शानदार प्रदर्शन, पैरालिंपिक 2024 में पुरुषों की भाला फेंक एफ46 स्पर्धा में कांस्य पदक जीतना। उनका समर्पण और जोश लाजवाब है। इस उपलब्धि के लिए बधाई।

प्रधानमंत्री ने ऊंची कूद स्पर्धा के विजेताओं बधाई देते हुए लिखा, शरद कुमार ने पैरालिंपिक 2024 में पुरुषों की ऊंची कूद टी 63 में रजत पदक जीता। निरंतरता और उत्कृष्टता के लिए वह प्रशंसा के पात्र है। उन्हें बधाई। वे पूरे देश को प्रेरित करते हैं।

उन्होंने पोस्ट किया, पुरुषों की ऊंची कूद टी63 स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने पर मरियप्पन थंगावेलु को बधाई।

शरत कमल की निकट भविष्य में संन्यास की योजना नहीं

टूर पर एक और सत्र खेलेंगे

नयी दिल्ली, 4 सितम्बर। भारत के महान टेबल टेनिस खिलाड़ी शरत कमल के पांचवें ओलंपिक में हिस्सा लेने के बाद संन्यास की योजना बनाने की उम्मीद थी लेकिन 42 साल के इस खिलाड़ी ने बुधवार को पेशेवर टूर पर एक और सत्र में खेलने की प्रतिबद्धता जाहिर की। शरत को बुधवार को एशियाई चैम्पियनशिप की पुरुष टीम का कप्तान बनाया गया जो अगले महीने अस्ताना में खेली जायेगी। पेरिस ओलंपिक में भारत के ध्वजवाहक शरत ने पीटीआई से कहा कि वह सात अक्टूबर से शुरू होने वाले एशियाई चैम्पियनशिप के लिए कजाखस्तान की यात्रा से पहले इस महीने के अंत में चाइना स्मैश में भी हिस्सा लेंगे।

भारत की सर्वश्रेष्ठ 37 रैंकिंग हासिल करने वाले शरत दोहा में 2025 विश्व चैम्पियनशिप में खेलने का लक्ष्य भी बनाये हैं। इस अनुभवी खिलाड़ी ने कहा, "अगले नौ महीने से एक साल तक मैं सक्रिय खिलाड़ी बना रहूंगा। लेकिन साथ ही मैं आईओसी और आईटीटीएफ में विकल्प की तलाश करूंगा। अपने देश में टीटीएफआई के साथ एक ढांचा बनाने में मदद करने की कोशिश करूंगा ताकि साई और टीटीएफआई के

बीच अंतर कम हो सके और खेल में ज्यादा से ज्यादा कोरपोरेट प्रायोजक आयें। "

शरत अंतरराष्ट्रीय टेबल टेनिस महासंघ (आईटीटीएफ) के एथलीट आयोग में चुने जाने वाले पहले भारतीय हैं। वह भारतीय ओलंपिक संघ में एथलीट संस्था का भी हिस्सा हैं और निकट भविष्य में वह अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के एथलीट आयोग में एक सीट हासिल करने का लक्ष्य बनाये हैं। उन्होंने 2028 ओलंपिक में हिस्सा लेने की बात खारिज की लेकिन उनके 2026 एशियाई खेलों में भाग लेने की संभावना है। उन्होंने कहा, "मैं अगले साल एशियाई खेलों पर फैसला लेना चाहूंगा। ओलंपिक के बाद मेरी फिटनेस ठीक है। मुझे थोड़ा समय भी मिला और चेन्नई में यूटीटी (अल्टीमेट टेबल टेनिस लीग) है। मैं व्यक्तिगत जिंदगी में भी संतुलन बना रहा हूं।

पाकिस्तान की हार पर छलका वसीम अकरम का दर्द

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। पाकिस्तान क्रिकेट टीम की हार से हर पाकिस्तान आहात है। बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज में पाकिस्तान की भद्द पिटी है। इस सीरीज को बांग्लादेश ने 2-0 से जीता है। जिसके बाद पाकिस्तान की हार पर पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज वसीम अकरम का दर्द छलका है। उन्होंने कहा कि उन्हें पाकिस्तान की हार हजम नहीं हो पा रही है। वसीम अकरम का मानना है कि पाकिस्तान अच्छी स्थिति में होने के बावजूद कैसे हार गई। पाकिस्तान ने पहले टेस्ट की पहली पारी में 6 विकेट सिर्फ 26 रन पर गिरा दिए थे। हालांकि, पाकिस्तान टीम फिर से मौके को भुनाने से चूक गई।

वसीमन अकरम ने एएफपी से कहा कि, ये बहुत बड़ा झटका है और हमारा क्रिकेट दोराहे पर खड़ा है। बतौर पूर्व खिलाड़ी और कप्तान और एक खेल प्रेमी के होने के नाते मैं इस बात से शर्मिंदा हूं कि वे अच्छी स्थिति में होने के बावजूद हार गए। मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूं। हम घरेलू मैदान पर लगातार हार रहे हैं और ये हमारे क्रिकेट की क्वालिटी के बारे में बहुत कुछ बताता है। बांग्लादेश ने पहली बार पाकिस्तान से टेस्ट सीरीज जीती है। अकरम का कहना है कि पाकिस्तान के घरेलू क्रिकेट में प्रतिभा की कमी है, जिसका काफी असर पड़ा है।

नितेश कुमार ने कहा- प्रमोद भगत की गैरमौजूदगी ने गोल्ड मेडल जीतने की 'अतिरिक्त जिम्मेदारी' दी

नई दिल्ली, 4 सितम्बर। भारत के बैडमिंटन पुरुष एकल स्वर्ण पदक विजेता नितेश कुमार ने बुधवार को कहा कि पेरिस पैरालंपिक में प्रमोद भगत की अनुपस्थिति ने उन्हें खिताब जीतने की 'अतिरिक्त जिम्मेदारी' दी। पुरुष एकल एसएलसी वर्ग में स्वर्ण जीतने वाले नितेश, तुलसीमति मुरुगेसन (रजत), सुहास यथिराज (रजत), मनीषा रामदास (कांस्य) और नित्या श्री सिवन (कांस्य) को बुधवार को यहां भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के मुख्यालय में युवा मामलों और खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने उनकी उपलब्धि के लिए सम्मानित किया।

नितेश ने कहा कि पैरा खेलों से पहले भगत को 18 महीने के लिए निलंबित किए जाने के बाद उनका मंत्र पैरालंपिक में एक समय में एक मैच पर ध्यान देना था। नितेश ने पीटीआई से खास बातचीत में कहा, "मैंने एक बार में एक मैच पर ध्यान देने के बारे में सोचा, दुनिया के नंबर एक, शीर्ष वरीय के रूप में वहां जाना, मेरे लिए खिताब जीतना एक जिम्मेदारी थी, विशेषकर तब जब प्रमोद पैरालंपिक में भाग लेने में असमर्थ थे।"

उन्होंने कहा, "भारत के लिए जीतना मेरे लिए एक अतिरिक्त जिम्मेदारी थी। फाइनल

में प्रवेश करते हुए मुझे पता था कि यह हम दोनों के लिए मानसिक रूप से कठिन होगा। मुझे उनसे बेहतर होने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का विश्वास था।" खेल मंत्री मांडविया ने देश के लिए अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए भारतीय दल की सराहना की और उम्मीद जताई कि खिलाड़ी बाकी बची प्रतियोगिताओं में और पदक जीतेंगे।

उन्होंने कहा, "हम भारत का उत्साह बढ़ाएंगे और आने वाले दिनों में हमारे खिलाड़ी 11 और पदकों के लिए चुनौती पेश करेंगे। मेरा मानना है कि जिस तरह से हमारे खिलाड़ी पैरालंपिक में प्रदर्शन कर रहे हैं, उससे उनका भविष्य उज्ज्वल है।" मांडविया ने कहा, "भारत के पास पैरालंपिक में अब भी 11 और पदक जीतने का मौका है।"

तोक्यो में रजत पदक जीतने के बाद पेरिस में भी उप विजेता रहे सुहास ने जल्द ही संन्यास लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, "रजत पदक जीतना अपने आप में एक चुनौती है। हर खिलाड़ी स्वर्ण पदक जीतना चाहता है और जब वे नहीं जीत पाते तो निराशा होती है।" सुहास ने अपने संन्यास के बारे में कहा, "जीवन एक यात्रा है और मैं इस पल को जीना चाहता हूं, खेल में अपने भविष्य के बारे में अभी ज्यादा नहीं सोचना चाहता।"

तुलसीमति ने कहा, "मैं रजत पदक से खुश हूं। मुझे लगता है कि मुझे अपने पदक का रंग बदलने के लिए और मेहनत करनी होगी।" मुख्य कोच गौरव खन्ना ने उम्मीद जताई कि अगले पैरालंपिक में भारत के पदकों की संख्या में सुधार होगा। उन्होंने कहा, "हमारा लक्ष्य आठ से 10 पदक जीतना था लेकिन हमें पांच से ही संतोष करना पड़ा। हमें उम्मीद है कि हम 2028 में अपने लक्ष्य को हासिल कर लेंगे।

मु.मंत्री भजनलाल शर्मा ने अधिकारियों के साथ बुधवार को परिवर्तित बजट 2024-25 की घोषणाओं के सम्बंध में समीक्षा बैठक की। बैठक में मु.मंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिया कि बजट की घोषणाओं को पूरा करने के संदर्भ में किसी भी स्तर पर कार्यवाही लंबित नहीं होनी चाहिये। उन्होंने कहा कि घोषणाओं को पूरा करने में अगर कोई बाधा आती है तो उन्हें चिन्हित कर उनका त्वरित निस्तारण किया जाये।

बजट घोषणाओं व लक्ष्यों को अधिकारी तय समय में पूरा करें- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने परिवर्तित बजट की घोषणाओं की समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिये

- **सरिस्का, रणथम्भौर व घड़ियाल अभ्यारण्य, कोटा के ईको सैंसिटिव ज़ोन का मास्टर प्लान बनेगा।**
- **कैप्टिव पावर उत्पादन की सीमा 200 प्रतिशत करने तथा खुले बोरवैल रखने वाले व्यक्तियों व संस्थाओं पर सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिये।**

जयपुर, 4 सितम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अधिकारियों को बजटीय घोषणाओं का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी समर्पण-निष्ठा के साथ राज्य सरकार की घोषणाओं एवं लक्ष्यों को तय समय में पूरा करें।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में परिवर्तित बजट वर्ष 2024-25 की घोषणाओं की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गुड गवर्नैंस का मॉडल स्थापित करके आमजन की सेवा करना राज्य सरकार का प्रमुख ध्येय है। बजटीय घोषणाओं के क्रियान्वयन में किसी भी स्तर पर कार्यवाही लंबित नहीं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने सरिस्का, रणथम्भौर एवं कोटा चंबल घड़ियाल अभ्यारण्य को इकोसैंसिटिव ज़ोन में चिन्हित कर मास्टर प्लान बनाने, मेडिकल कॉलेजों में हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने, ऊर्जा उत्पादन के लिए निजी क्षेत्र को अधिक प्रोत्साहन देते हुए कैप्टिव पावर उत्पादन की सीमा को 200 प्रतिशत करने, स्टेट कैरिज वाहनों के लिए उप नगरीय श्रेणी के 40 नए मार्ग बनाने, जैसी कई बजट घोषणाओं की समीक्षा कर उचित दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने नगरीय विकास विभाग को जयपुर मैट्रो के विस्तार के लिए जॉइन्ट वेंचर कंपनी पर शीघ्र कार्य करने के निर्देश दिए। शर्मा ने वित्त विभाग को स्मार्ट सिस्टम के अंतर्गत ऑटोमेटेड सर्विस डिलिवरी सुविधा शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस सिस्टम के माध्यम से आमजन को 25 सेवाएं 24 घण्टों की सीमा में उपलब्ध करवायी जाएंगी। उन्होंने सफाई कर्मचारियों के लिए आर.जी.एच.एस. के अंतर्गत लंग्स, किडनी एवं स्किन आदि से संबंधित बीमारियों से संबंधित नि:शुल्क विशेष पैकेज शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए।

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में औद्योगिक निवेश का अनुकूल माहौल बनाने के लिए कार्य कर रही है। ऊर्जा भण्डारण नीति-2024 एवं नई पर्यटन नीति के साथ-साथ बजट में भी अन्य कई महत्वपूर्ण नीतियों की घोषणा की गई है। जयपुर में 9 से 11 दिसम्बर तक आयोजित होने जा रहे "राइजिंग राजस्थान" समिट के परिप्रेक्ष्य में इन नीतियों को शीघ्र ही अंतिम रूप प्रदान किया जाए।

मुख्यमंत्री ने जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग को प्रदेश में खुले बोरवेल रखने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं के विरूद्ध सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खुले बोरवेल से जनहानि का खतरा रहता है। ऐसी कई घटनाएं प्रदेश के कई अंचलों में हो चुकी हैं। उन्होंने कहा कि इन घटनाओं की प्रभावी रोकथाम के लिए विभागीय दल नियमित निरीक्षण करें और खुले बोरवेल रखने वालों पर सख्त कार्रवाई करें। विभागीय शासन सचिव श्री समित शर्मा ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि खुले बोरवेल पर निगरानी एवं कार्रवाई करने के लिए ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया जा रहा है। बैठक में मुख्य सचिव सुधांश पंत, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल एवं प्रमुख शासन सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव एवं वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

नकली नोट छापने की मशीन और 24 लाख रू. के नकली नोटों की खेप पकड़ी

सूरतगढ़ के फ्लैट में छापे जा रहे थे नकली नोट, लैपटॉप, प्रिंटर सहित अन्य सामान भी जब्त

- **चंडीगढ़ पुलिस के पांच अधिकारियों ने सूरतगढ़ के फ्लैट में रेड की।**
- **आरोपियों ने हवाला कारोबार के जरिए ही हरियाणा-पंजाब और राजस्थान के बड़े शहरों में नकली नोट चलाना कबूल किया।**

श्रीगंगानगर, 4 सितम्बर निसं)। श्रीगंगानगर में नकली नोट छापने की मशीन के साथ 24 लाख रुपए के नकली नोटों की खेप पकड़ी गई है। चंडीगढ़ पुलिस की स्पैशल टीम ने ये कार्रवाई बुधवार सुबह सूरतगढ़ की ग्रीन वैली कॉलोनी के एक फ्लैट में छापा मारकर की। चंडीगढ़ पुलिस के पांच अधिकारियों ने इस रेड में 24 लाख रुपए के नकली नोटों की खेप पकड़ी है। वहीं नकली नोट बनाने में इस्तेमाल लैपटॉप, प्रिंटर सहित अन्य सामान भी जब्त किया है।

पंचकूला सैक्टर-20 थाने सब इंस्पैक्टर अनिल कुमार ने बताया कि आरोपी यहां से बड़ी संख्या में नकली नोट छापकर कई बड़े शहरों में नोटों की सप्लाई करते थे। वहीं आरोपियों के हवाला कारोबार से भी जुड़े होने की आशंका जताई जा रही है। शुरुआती पूछताछ के दौरान आरोपियों ने हवाला कारोबार के जरिए ही हरियाणा-पंजाब और राजस्थान के बड़े शहर चंडीगढ़, पटियाला, पंचकूला और श्रीगंगानगर में ये नकली नोटों को चलाना कबूल किया है। 1 सितंबर को चंडीगढ़ पुलिस की टीम ने सूरतगढ़ कस्बे के राजियासर थाना इलाके के गांव बीरमाना के रहने वाले रामचंद्र और सुजानगढ़ के रहने वाले जितेन्द्र सिंह को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया था। दोनों ने पूछताछ के दौरान नोट छापने के इस अड्डे का खुलासा किया था।

पंचकूला (चंडीगढ़) में 3 अगस्त को रोहित भूटानी (45) नाम के एक शख्स ने पुलिस को शिकायत दी थी। रोहित ने पुलिस को बताया कि था कि वो रेडीमेड कपड़ों का कारोबार करता है। 14 जून को जितेन्द्र उर्फ जीतू नाम के एक आदमी ने 2.50 लाख रुपए कपड़ा खरीदा। इसके लिए उसने कैश पेमेंट की थी। रोहित ने बताया कि जब इससे मैंने किसी और को पेमेंट किया तो पता चला कि जितेंद्र से प्राप्त हुई सारी करंसी नकली है। इसके बाद, जब उन्होंने जितेन्द्र से संपर्क करने की कोशिश की तो पाया कि दोनों मोबाइल नंबर बंद थे। इस पर रोहित भूटानी ने पंचकूला थाने में मामला दर्ज करवाया था। इस मामले की जांच के सिलसिले में बुधवार को चंडीगढ़ पुलिस सूरतगढ़ पहुंची थी।

'होम लोन के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने इंदिरा गांधी नगर में वर्ष 2010 में आवास खरीदा था। एस.बी.बी.जे. बैंक की ओर से उसे 10.69 लाख रुपए का लोन स्वीकृत किया गया। साथ ही, होम लोन के बीमा कवर के रूप में 1.34 लाख रुपए की कटौती की गई। इस दौरान परिवादी को आश्वस्त किया गया कि यदि वह बीमा नहीं चाहेगा तो यह राशि उसे लौटा दी जाएगी। परिवाद में कहा गया कि परिवादी ने जनवरी, 2011 में लोन की पहली किस्त का भुगतान कर दिया। जब परिवादी ने बीमा कवर के रूप में काटी राशि लौटाने को कहा तो उसे बीमा पॉलिसी बॉन्ड की कॉपी भेज दी गई। परिवादी ने बीमा पॉलिसी के संबंध में असहमति जता दी। परिवाद में कहा गया कि बाद में, बीमा कवर के रूप में काटे गए उसके 1.34 लाख रुपए के बजाए 92,941 रुपए ही तीस मई, 2011 को लौटाए गए। इस प्रकार परिवादी से 41,059 रुपए की अवैध रूप से कटौती की गई है।

मामले पर सुनवाई करते हुए आयोग ने काटी गई राशि ब्याज सहित लौटाने के आदेश देते हुए बीमा कंपनी पर हर्जाना लगाया है।

राजस्थान पुलिस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाने से रह गए थे। उन्होंने बताया कि उत्कृष्ट खिलाड़ियों संबंधी स्पष्टीकरण को इन सेवा नियमों में शामिल करने के लिए नियमों में संशोधन के प्रारूप का आज मंत्रिमंडल की बैठक में अनुमोदन किया गया।

जैसलमेर : दलित युवती से पांच युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया

- **गैंगरेप के चार आरोपी युवकों को पकड़ा, एक युवक की तलाश जारी।**
- **युवती बाहरी जिले की है और जैसलमेर में किराये के कमरे में पढ़ाई कर रही है।**

जैसलमेर, 4 सितम्बर (निसं)। जैसलमेर के महिला थाना क्षेत्र में एक युवती ने बुधवार को गैंगरेप का मामला दर्ज करवाया है। युवती ने 28 अगस्त की रात पांच युवकों द्वारा उसे जैसलमेर लाकर किसी जगह पर नशा करवाकर उसके साथ रेप करने का आरोप लगाया है। महिला थाने ने दलित युवती के साथ गैंगरेप का मामला दर्ज कर चार आरोपी युवकों को पकड़ लिया गया है, वहीं एक युवक की तलाश जारी है।

महिला अपराध प्रकोष्ठ की ए.एस.पी. प्रियंका कुमावत ने बताया कि युवती बाहरी जिले की है और जैसलमेर में पढ़ाई कर रही है। युवती ने पांच युवकों पर जैसलमेर के किसी गांव से उसे जैसलमेर शहर लाकर नशा करवाकर उसके साथ गैंगरेप करने का आरोप लगाया है। प्रियंका कुमावत ने बताया कि हमने मामला दर्ज कर लिया है और चार युवकों को पकड़ लिया है। एक युवक की तलाश जारी है। ए.एस.पी. राजेश शर्मा इस मामले की जांच कर रहे हैं। प्रियंका कुमावत ने बताया कि युवती जैसलमेर के सदर थाना क्षेत्र के एक गांव में पढ़ाई कर रही है और गांव में ही कमरा किराये पर लेकर अकेली रहती है।

दो सितंबर को युवती नशे की हालत में ग्रामीणों को गांव में मिली थी। उसे सदर थाना पुलिस द्वारा हॉस्पिटल लाकर इलाज करवाया गया। उसे इलाज के बाद सखी केन्द्र में रखा गया। युवती के परिजनों के आने के बाद युवती ने गांव के ही पांच युवकों पर 28 अगस्त को उसके साथ गैंगरेप करने की शिकायत की। परिजनों द्वारा पुलिस को इसकी जानकारी दिये जाने के बाद बुधवार को महिला थाना पुलिस में युवती से गैंगरेप का मामला दर्ज करवाया गया है।

जनता नाखुश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बंगाल की जनता बहुत ज्यादा आक्रोशित एवं आवेशित थी तथा इस निर्णय पर बहुत निराश एवं हताश थी।

सर्वोच्च न्यायालय ने रेप और हत्या के इस केस को कलकत्ता उच्च न्यायालय से स्वप्रेरणा से ही अपने हाथों में लिया था।

चूँकि सर्वोच्च न्यायालय ने इस केस को अपने हाथ में ले लिया था, इसलिए कलकत्ता उच्च न्यायालय में चल रही सुनवाई रोक दी गई। इन परिस्थितिथियों में, केस को आगे के लिए टाल देने का निर्णय बहुत बड़ी एवं गहरी चिन्ता का विषय बन गया है। जिस तरह से इस केस को दबाया या टाला जा रहा है, उसे लेकर लोग गहरी निराशा व्यक्त कर रहे हैं।

जो भी हो, रवीन्द्र नाथ टैगोर लोगों के मुख्य हथियार बने हुए हैं तथा कवीन्द्र रवीन्द्र के बहुत से गीत विरोध-प्रदर्शन के विभिन्न स्थलों पर गूँज रहे हैं। बहुत-से बुद्धिजीवी, अग्रणी अभिनेता तथा अभिनेत्रियाँ अब इन विरोध-प्रदर्शनों का हिस्सा बन गए हैं।

जनसामान्य के झुंड के झुंड डॉक्टरों तथा नर्सों से लेकर पैरा-मेडिकल स्टाफ व अन्य प्रोफेशनल्स के विरोध-प्रदर्शनों से जुड़ते जा रहे हैं।

पेरिस पैरालिंपिक की तीरंदाजी स्पर्धा में हरविंदर सिंह ने गोल्ड मैडल जीत लिया है। पैरालिंपिक के इतिहास में भारत ने पहली बार तीरंदाजी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है। बुधवार को मेन्स इंडिविजुअल रिकर्व ओपन के फाइनल मे 33 वर्षीय हरविंदर ने पोलैण्ड के लुकाज सिजेक को 6-0 से हराया। मौजूदा पैरालिंपिक गेम्स में भारत का ये चौथा गोल्ड मैडल है। हरविंदर के गोल्ड मैडल के साथ ही भारत के पदकों की संख्या अब 22 हो गई है। भारत अब तक 4 गोल्ड, 7 सिल्वर और 11 ब्रॉन्ज़ मैडल जीत चुका है।

दो राज्य, एक संकट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने इन दोनों से निवेदन किया कि बाढ़ से हुई तबाही को प्राकृतिक आपदा के रूप में लिया जाये। केन्द्र ने तुरन्त सक्रिय होते हुये, लोगों को बचाने हेतु 10 एन.डी.आर.एफ. टीमें, 40 पॉवर वोट तथा 6 हेलिकॉप्टर उपलब्ध करा दिये। और अब पड़ोसी राज्य तेलंगाना की स्थिति कभी नायडू के शिष्य एवं सहकर्मी रहे, कांग्रेस नेता तथा राज्य के मुख्यमंत्री रैवन्त रेड्डी ने नायडू से मदद का अनुरोध करते हुये कहा कि उन स्थानों पर राहत-सामग्री भेजें, जहाँ तेलंगाना प्रशासन नहीं पहुँच सकता तथा मुख्यमंत्री स्वयं राज्य में बचाव कार्य तथा राहत की कार्यवाही के निरीक्षण के लिये निकल पड़े।

वारंगल के लिये रवाना हुये मुख्यमंत्री रेड्डी ने केन्द्र सरकार से इस भंयकर बाढ़ को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने का अनुरोध किया। तेलंगाना में बाढ़ के कारण, अभी तक 16 लोग मर चुके हैं तथा सैंकड़ों लोग बेघर हो गये हैं। 2 सितम्बर को सुबह-सुबह ही सड़क मार्ग से बाढ़ प्रभावित वारंगल के लिये रवाना होने से पहले, रैवन्त रेड्डी ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि पुलिस बटालियनों को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण उपलब्ध करायें तथा कुछ प्रशिक्षण डी.डी.आर.एफ. को भी उपलब्ध करायें।

राजस्थान में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अनिल सरसावन और उदयपुर के पर्यावरण वैज्ञानिक एवं सेवानिवृत्त सहायक वन संरक्षक डॉ. सतीश शर्मा ने यहां एक अनोखी फंगस की खोज की है। इस फंगस का वैज्ञानिक नाम स्पिरोबोलस जयसुखियेंसिस है, लेकिन स्थानीय लोगों के बीच इसे "गोले दागने वाली फंगस" के नाम से जाना जाता है। डॉ. शर्मा ने बताया कि जब इस फंगस को छुआ जाता है, तो यह छोटे-छोटे काले रंग के गोले यानी बीजाणुओं की तेजी से बरसात करती है, मानो कोई तोप गोले दाग रही हो। यही कारण है कि इसे अंग्रेजी में 'आर्टिलरी फंगस' कहा जाता है। अगर आप सफेद कपड़े पहने हुए इस फंगस को छू लें तो ये गोले आपके कपड़ों पर चिपक जाएंगे और दूर से ही दिखाई देंगे। डॉ. सरसावन और डॉ शर्मा के मुताबिक राजस्थान में इसकी उपस्थिति पहली बार और भारत में दूसरी बार दर्ज की गई है। इससे पहले भारत में इस फंगस की उपस्थिति गुजरात में 2020 में दर्ज की गई थी। मांडलगढ़ के राजपुरा गांव में तालाब के किनारे जमा कचरे में यह फंगस पाई गई। इस शोध को तमिलनाडु से प्रकाशित स्पीशीज जर्नल के 25वें अंक में प्रकाशित किया गया है। डॉ. सरसावन और डॉ. शर्मा के अनुसार इस शोध से यह साफ हो गया है कि जैव विविधता सिर्फ संरक्षित क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि हमारे गांवों के खेतों, तालाबों और चरागाहों में भी भरपूर पाई जाती है। हमें इन शामलात संसाधनों के महत्व को समझना होगा और इन पर लगातार शोध करते रहना होगा ताकि कई अज्ञात प्रजातियों को सामने लाया जा सके व संरक्षण किया जा सके।

पायलट ने शहीद हवलदार अनय सिंह की मूर्ति का अनावरण किया

- **पायलट ने नाहिड़ा में श्री बाबू महाराज जी के वार्षिक मेले पर आयोजित विशाल किसान सम्मेलन में भी भाग लिया।**

महुवा, दौसा, 4 सितम्बर (निस)। कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने गांव सिकंदरपुर (महुवा, दौसा) में शहीद हवलदार अनय सिंह की मूर्ति का अनावरण किया। यहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों ने सचिन पायलट का भव्य स्वागत - सत्कार किया।

यहाँ पर पायलट ने जब लग्ज़री गाड़ी छोड़ ट्रैक्टर की स्टियरिंग थामी तो कार्यकर्ताओं ने सचिन पायलट के समर्थन में नारे लगाए।

ट्रैक्टर के आगे सचिन पायलट का कटआउट भी लगा हुआ था। काफी संख्या में लोग उनके साथ सैल्फी लेने का प्रयास कर रहे थे। इस अवसर पर पायलट ने कहा, "पेपर लीक की जांच आखिरी तह तक पहुंचनी चाहिए। मैने शुरु में ही कहा था कि आर.पी.एस.सी. को पुनर्जीवित करना पड़ेगा। इस मामले का पूरी तरह खुलासा होना चाहिए। चाहे बड़ा से बड़ा कोई भी व्यक्ति हो, उसका नाम सामने आना चाहिए और उसे सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।" इसके अलावा पायलट ने नाहिडा, सिकंदरपुर में आयोजित विशाल किसान सम्मेलन व श्री बाबू महाराज जी के वार्षिक मेले में शिरकत की।

इस अवसर पर सांसद मुरारी लाल मीणा, सांसद भजन लाल जाटव, सांसद संजना जाटव, विधायक मांगी लाल मीणा, विधायक अनिता जाटव, पूर्व विधायक गजराज खटाना, पूर्व विधायक ओमप्रकाश हुडला, पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर, पूर्व जिला प्रमुख अजीत सिंह महुवा एवं बड़ी संख्या में बाबू महाराज के भक्तगण मौजूद थे।

भाजपा मीडिया ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

केन्द्र शासित प्रदेश में अगली सरकार भाजपा के नेतृत्व में गठित होगी। माधव ने कहा, "यह एक ऐतिहासिक चुनाव होगा।"

वायनाड पीड़ितों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वायनाड से सांसद भी रह चुके हैं। वायनाड की त्रासदी के लिए अपनी तनख्वाह दान करने को लेकर राहुल गांधी ने अपने पोस्ट में लिखा, "वायनाड में हमारे भाई-बहनों ने एक बहुत बड़ी त्रासदी का सामना किया है और उन्हें हमारे समर्थन की जरूरत है ताकि वे अपने नुकसान से उबर सकें। मैंने अपने एक महीने की तनख्वाह बाढ़ पीड़ितों के राहत और पुनर्वास के लिए दान कर दी है। मैं सभी भारतीयों से गुजारिश करता हूं कि जितना हो सके मदद करें क्यों हर छोटी मदद मायने रखती है।" आपको बता दें कि गत वायनाड में हुये भूस्खलन और बाढ़ की चपेट में आने से करीब 240 लोगों की मौत हो गई थी। उन्होंने वायनाड के पुनर्निर्माण के लिए लोगों से कांग्रेस केरल के फंड में योगदान देने की अपील भी की। राहुल गांधी ने कहा, "वायनाड हमारे देश का एक खूबसूरत हिस्सा है, और हम सब मिलकर यहां के लोगों की जिंदगी को फिर से पटरी पर ला सकते हैं।"

नायडू आंध्र में भारी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इससे राजनैतिक हलकों में अटकलों का बाज़ार गर्म हो गया है।

तेंलगाना के राजनैतिक विश्लेषकों ने कहा कि चन्द्रबाबू भले ही अपने कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए यह कह रहे हो पर तेलगांना में नए सिरे से पार्टी को खड़ा करना भारी चुनौती साबित होगी।

भाजपा व बी.आर.एस. के बीच सांठगांठ की चर्चा इतनी ज्यादा है कि बी.आर.एस. का इससे निकल पाना कठिन हो रहा है। इसके अलावा राज्य में कांग्रेस के पुनर्जीवित होने के बाद तेलंगाना की राजनीति में फिलहाल ना तो भाजपा की जगह है ना ही तेलुगूदेशम की जब से आंध्र का विभाजन हुआ है तब से तेलंगाना में पैर जमाने की तेलुगूदेशम पार्टी की हर कोशिश बुरी तरह फेल हो गई है।

तेलंगाना में 2018 से पूर्व टी.डी.पी. से नेताओं के बाहर जाने का सिलसिला शुरु हुआ था। सबसे पहले तेलंगाना में तेलुगूदेशम के अध्यक्ष एल.रामन्ना ने पार्टी छोड़ी थी और वे बी.आर.एस. में चले गए थे उसके बाद तो कई नेताओं ने तेलुगूदेशम छोड़ दी थी तब के.सी.आर. कहते थे कि वे तेलुगूदेशम को खाली कर देंगे और वास्तव में वही हुआ।

लेकिन आज नायडू फिर से ताकतवर हैं और हैदराबाद नगर निगम चुनाव में वे अपनी ताकत आजमा रहे हैं। यही वजह है कि वे तेलंगाना में अपनी पार्टी को पुन: खड़ा करने की बात कर रहे हैं।

'आर्थिक स्थिति ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तरीके से रह रहा था, लेकिन वह उसे उसकी जानकारी के बिना ही गलत तरीके से भारत में ले आई। बच्चे के प्रति उसका व्यवहार भी सही नहीं है। इसलिए उसे उसके बच्चे की कस्टडी दिलवाई जाए। इसके विरोध में पत्नी की ओर से कहा गया कि बच्चे की उम्र 7 साल है और वह उसकी अच्छी तरह से देखभाल कर रही है और सबसे करीबी भी है। याचिकाकर्ता का यह आरोप भी गलत है कि उसका बच्चे से अच्छा बर्ताव नहीं है, बच्चा अपनी मां के साथ अच्छी तरह से रह रहा है। इसलिए ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि बच्चे की कस्टडी मां से लेकर दुबई में रह रहे पिता को सौंप दी जाए।

खंडपीठ ने मां के पक्ष में फैसला देते हुए बच्चे को मां के साथ ही रहने और पिता को मिलने-जुलने की छूट देते हुए याचिका को निस्तारित कर दिया है।

राहुल ने कश्मीर में प्रचार की शुरुआत मोदी के खिलाफ बड़े ही आक्रामक अंदाज़ में की

राहुल गांधी ने कहा हमने प्रधानमंत्री मोदी को मानसिक रूप से परेशान कर दिया है, उनका आत्मविश्वास ही गायब हो गया है, अब वे सीना तानकर नहीं चलते

- **राहुल गांधी ने कहा भाजपा वालों ने पहले कहा कि जाति जनगणना नहीं होगी। अब आर.एस.एस. के लोग कह रहे हैं कि जाति जनगणना सही बात है। पहले उन्होंने कहा कि लेटरल एंट्री से बाहर के लोगों को सरकार में लाएंगे। थोड़ा सा दबाव डाला तो भाजपा बोली ऐसा नहीं होगा। इससे आप यह समझ लीजिए कि नरेंद्र मोदी अब देश की जनता से डरते हैं।**

श्रीनगर, 4 सितम्बर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आज से जम्मू-कश्मीर में चुनाव प्रचार की शुरुआत की। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर एक बार फिर तीखा हमला बोला। कांग्रेस लीडर ने कहा कि हमने नरेंद्र मोदी को मानसिक रूप से परेशान कर दिया है। उनका आत्मविश्वास ही गायब हो गया। उन्होंने पहले कहा कि जाति जनगणना नहीं होगी। अब आर.एस.एस. के लोग कह रहे हैं कि यह सही बात है। पहले उन्होंने कहा कि लैटरल एंट्री से बाहर के लोगों को सरकार में लाएंगे। थोड़ा सा दबाव डाला तो भाजपा बोली ऐसा नहीं होगा। आप यह समझ लीजिए कि नरेंद्र मोदी अब देश की जनता से डरते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि थोड़ा ही समय बचा है और हम नरेंद्र मोदी एवं भाजपा को सत्ता से हटा देंगे।

उन्होंने कहा कि पहले नरेंद्र मोदी जी सीना फैला कर आते थे, अब ऐसा नहीं है। पहले बड़े-बड़े भाषण देते थे। अब संसद में जाने से पहले संविधान को सिर पर रखा और फिर अंदर गए। इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि एक राज्य से उसका दर्जा छीन लिया गया और यूटी बना दिया। हमने तय किया है कि सबसे पहले जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देना है। आपका धन छीना जा रहा है। आपकी जमीन छीनी जा रही है। आपका पैसा बाहर के लोगों को दिया जा रहा है। सारे ठेके बाहर के लोगों को मिल रहे हैं। हमारा पहला कदम जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा वापस देने का होगा। हम चाहते हैं कि पहले आपको राज्य का दर्जा मिले और फिर चुनाव हो।

भाजपा ऐसा नहीं चाहती और उनका कहना है कि पहले चुनाव हो फिर राज्य के दर्जे पर बात होगी। हम कहते हैं कि भाजपा चाहे या न चाहे, लेकिन इंडिया अलायंस इतना दबाव डालेगा कि जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देना ही होगा। राहुल ने कहा,हम सभी जानते हैं कि यहां बिजली परियोजनाएं बनाई जा रही हैं। कहा गया कि आपको फ्री में बिजली मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। चुनाव में हम जीतेंगे तो यह काम कर के देंगे। आप देश के लोगों को बिजली दे रहे हो, लेकिन आपकी जेब से ही पैसा भी लिया जा रहा है। पूरे देश में नरेंद्र मोदी ने बेरोजगारी फैलाई है।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908